बिचाळै

(राजस्थानी कहाणी सगै)—

डॉ पुरुषोत्तम छगाणी

पुस्तक मंदिर, बीकानेर

राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी बीकानेर
रै आर्थिक सैयोग सूं प्रकासित

- प्रकाशक
  पुस्तक मंदिर
  4 मूली क्वार्टर्स
  नगर परिषद के पास
  बीकानेर 334001

- पैलो छापो 2002

- मोल 125/

- लेजर टाइपसैटिंग
  एपेक्स कम्प्यूटिंग सेंटर
  11 यूनिवर्सिटी रोड उदयपुर
  फोन 0294 411330

- आवरण रमेश

- मुद्रक
  कल्याणी प्रिन्टर्स
  [illegible]
  बीकानेर 334001
  फोन [illegible]

BICHALAI (Rajasthani Stories) by Dr Purushottam Chhangani
Edition 2002 Price Rs 125/

मातुश्री आशा देवी

रै

चरणा मे

म्हारा बोल

म्है कद पूरो जाण सक्यो सारथक लेखण रो मायलो मरम। फेर ई लिखू। कद समूची ओळख वण्यो है सरोकारी सबदा रो अचपळो तेवर। फेर ई सबद वापरू। म्है जाणू हूँ कै घणो औंजो व्है है अतस भावा रो गणित। फेर ई भावा री जोड-बाकी करू। लिखू, रमकडा घडू, पात्र घडू। लिखू, बस लिखू। लिखू तो कदे कीक हळकास मैसूस करू। लिखू तो स्यात मायली छटपटाट सारू कोई ठावकी औखद हाथ लाग जावै। लिखू, स्यात पतवायरै जुग रै कुसस्कारी आगणै मिनखपणै री थापणा सारू जतना नै कींक बळ मिळ सके। लिखू, ओ जाणतो थको ई कै म्हारी हूस रो सकळप घणो डीघो है अर म्हारी खिमता म्हारी सामरथ रो डील उणरै आगै बोत ई खाटरो है। लिखू, कदास ।

लिखू, सिरजण अभिव्यक्ति रै आग्रह रै उणमान। कदै कविता तो क्यारै कहाणी पण न्यारै-न्यारै मुहावरै रै सागै। कविता हुवै भला कहाणी म्है म्हारी हरेक रचना मे मोकै-बेमोकैरळियोडो लाध ई जावू। जीवण रै सोनलिया सुपना री बुणगट सू मिनख री आसबिहूणी आख्या रै अेडै-गैडै छायोडी अल्पजीवी चमक रा वारणा लेतो अर क्यारै आपरै परिवेस री दुनिया मे हर स्तर माथै जारी तानासाई रै हाथा आपरो वजूद आपरा जमीर खोसाय ढोर ज्यू ढोळै बैठयोडे मिनख नै पगा ऊभो करवा खातिर उणरी पूछ उचायतो। इणरो ओ मतलब कोनी कै म्हे म्हारै पात्रा री आगळी झाल क्रिया-वौपार कराऊ। पात्रा सू अळघाई के नेडाई मरयादा में हुवण सू ई जथारथ रै साच ताई पूगणो सभव हुय सकै। इण कारण म्हारा पात्र खुद रे बळवृते ई आप री जिनगाणी नै खड-खड जोवै है रिस्ता-सम्बन्धा रै बदळतै अरथा री अबखी मार ठेठ अतस माय मैसूसै है अर पग-पग मोहभग री अळखावणी पीड मे कुरळावै है। म्हारी पक्की धारणा है कै निस्चै ई लेखक वो कोनी हुवै जिको उवैरा पात्र हुया करै।

म्हनै पारम्परिक नैतिक मूल्य सास्थानिक सबध-वौपार अर जूना मानवी-सस्कार अधका व्हाला लागै। म्है इणरी भूडी गत सारू कोरी वेदना ई

96110102

कोनी पाळू, इणरै विगसाव रा विसवासजोगा जतन पिण करू। म्हारी कहाणिया रो हेक साच अै पिण है-विसवासपणो। ओ सही है कै वस्तु-साच नै औळख समझणो अर उणनै सातरै सदर्भ मे प्रस्तुत करणै मे मोकळी दोराई है पण कहाणी री कळा मे साच री पिछाण रा सस्कार हालताई जीवता है। म्हारो साच ई सगळा रो साच है म्हारो इस्यो कतई दुराग्रह कोनी।

म्हारी दुनिया है म्हारी मरुधरा। वा ई है म्हारै जीवण-अनुभवा रो नाखूट स्त्रोत म्हारै सिरजण री सबखी ऊर्जा। उणरै प्रति हेक लूण्ठै अपणायत भाव सू मुग्ध हू, प्रतिबद्ध पिण हू। म्हारी धरती माथै चूफेर घेर-घुमेर उग्योडी करूपता अर कोझाण माय रळयोडै पुठरापै रै साच नै सोध र जिनगाणिया रै हरखाऊ सिणगार मे रचू-पचू। म्हारै सबदा मे म्हारी माटी री महक तो आवै ई। धोरावाळी धरती सारू म्है इतरो ई कैय सकू कै बगैर असाधारण हुया ई पिण बसता महताऊ हुय सकै।

मिनख जुडे अर मिनख ई भिडै। रिस्ता सधीजै अर रिस्ता ई तूटीजै। प्रीत पागरै अर प्रीत इ कमळीज। मायत पुचकारै अर टाबर दुत्कारै। बौवार हीलै अर बौवार ई पीलै। क्यू? कुण है इणरै बिचाळै नाजोगी रम्मत माडण वाळो? कुण है बिचाळो लोगा री मत रो उणियारो ई बदळण वाळो? कुचमाद करै बिचाळो अर भूड रो ठीकरो लोग हेक-बीजै माथै रीस मे पटीडै। म्हारी कहाणिया बिचाळै री पिछाण करावण जथासगति सगवड करै। इण वास्तै म्हारी कहाणिया अभिव्यक्तिरै धरातळ माथै मन माय कठै कीक ऊडो कुरेदै है।

म्हारी धरती री लोक सस्कृति रा भात-भात रा मनमोवणा ठावका रग। म्हारै चितेरै उण सोवणा रगा सू जथारथ रा केई विसवसनीय चितराम माडया है। म्है तो ओ ई मानू के सगळा नै दाय आसी। विया दाय आवणो पिण आदमी दीठ हुया करै। म्है स्वीकार करू कै म्हारे चितेरै रो ठोठपणो के निबळाई केई ठौर बगोवणजोगी अवस ई हुय सकै पण उणरी साची हूस अर उण वास्तै ईमानदार जुगत हेज रा हेक-बे बोल पावण री हकदार तो बणै ई। लेखक अर पाठका रै बिचाळै जे कोई कुचमादी नी हुवै तो कीक साची देणगी मिळै ई।

पशु चिकित्सालय परिसर
चेटक सर्कल उदयपुर (राज)
दूरभाष (0294) 525115

(डॉ पुरुषोत्तम छगाणी)

टीप

तलास

हेकली गगा ई नी गाव रा सगळा वासिन्दा जाणै है कै देहात वाळी बसा रै आवा-जावा रो कोई पक्को टैम कोनी हुया करै। बसा रो टैम-टेबल काई हुवै बस वाळा ई नी जाणै तो बापडा गावरू काई जाणै? लोगा नै तो बस इतरी ठा है कै रामगढ सू सैर जावण वाळी बस सूरज रै ठेठ माथै आया पछी कदै ई आ सकै। सूरज घडी रो सूइयो लख लोग-बाग गाव सू बारै खेजडी हेठै भेळा हुवणा सरू कर देवै।

खेजडी ई गाव रो बस स्टैंड है। गगा आपरै बेटै किसन रै सागै सै सू पैला ई उठै पूगगी ही। समान रै नाव माथै उवै खनै बस हक थेलो हो माटो सीक। थैलै मे ठूस-ठूस भरयोडा हा मा-बेटै रा कीक गाभा दो-चार बासण अर काम री दूजी छोटी-मोटी बसता। सै सू ऊपर देखीजती ही हेक चीकटवाळी गोथली। बाजरै री रोटया अर गुळ री डल्या री अणूती ठसाण सू केई जागा सू चिरक्योडी काळी-कोझी गोथली।

धीरै-धीरै बस स्टैंड माथै दस-पनरा लोगा रो भीड्गरो हुयग्यो। बस हाल ताई आई कोनी। पण धूडाळी आधी साकळै सू ई गाव मे भूडी रम्मत माडण आयगी ही। ज्यू-ज्यू तावडो तपतो त्यू-त्यू आधी रो तेवर पण बधतो। फेर गाव रै बारै तो आधी नै कुण बरजै? कुण रोकै कुण टोकै? आधी री थाप सू रूखाळ सारू लोग अठै-बठै झाडखा री ओट सोधण लागा। ओट मिळी तो दुबकग्या। पण गगा खुलै मे खेजडी हेठै ऊभी ही। किसन मा रै आचळ सू मूडो ढाप चिपक्योडो हो।

आधी गैली ज्यू फेरा देवण लागी। मा-बेटै माथै धोबा भर-भर धूड नाखवा लागी। इस्यो लागतो जाणै गगा रो यू ऊभणो आधी आपरी ठठक रो

अनादर समझियो हो। रै-रै धूडाळै वायरै रा चावका मारण ढूकी वा। पण गगा माथे उणरो कोई असर कोनी। किणी बसत रो असर जद ई पडया करै जद कोई उणसू तन-मन सू जुडाव करै। सोचाण मे गळगळी नै किया वा पडै-आधी री आधी री मार री। हेक-बे जणा ओट री बात करी पण उवै अणसुणी करी। सोचण लागी कै ओट कठै-कठै लेवा। आध्या तो चूफेर है घरै भी अर बारै भी। घराळी आधी रै सामै इण खखाळी आधी री काई विसात। उवैनै तो आधी सू बाथेडा घालणा हा ओट कोनी।

किसन थोडीक हरकत करी। गगा ओढणी सावळ कर ओढाई अर फेर उणनै हाथा मे भीच लीधो। चूफेर नजर बगाई। बस अजू ताई आई कोनी। बाट जोवा री घडिया घणी साळै। जी हळको-सो दोरो तो व्हीयो पण उवैरो उछाव पैला ई जिस्यो साजो-सूरो।

आधी रो तेवर तर-तर बधवा लागो हो। थपेडा मे कोई कमी कोनी ही। गगा सोचण लागी कै उवैरै मन जिकी आध्या री थापा झेली है उणसू तो आ आधी बापडी घणी हळकी है। ठेठ माय ताई घाव करणिया झापटा ई जद ओट री आस कोनी जगाई तो आ आधी लायण काई तुकाई करसी। गगा तण्योडी ऊभीज रैयी ठीक उणीज भात जद सुबै मगत अर माजी रै ता-मन सू निसरती आधी रै डोटा सामी माथो ऊचो कर ऊभी ही।

जाणै कई सोच गगा बैठगी। स्यात किसन रै खातिर ओट री दरकार समझ। किसन रै जीवण नै आट देवा सारू ई तो घर सू निकळी ही। किसन नै खोळै मे बैठायो। थैलो सरकाय उवैरै ऑटया ओट करी। खुद नै ओट बणा र तो राखी ई ही। गगा अखत्यार लीधो हो कै घर री समाज री मौसम री सगळी आध्या सू किसन नै रूखाळणो जरूरी है।

गगा आपरै लाडलै किसन नै भणावणो चावती। वा जाणती ही कै भणाई सू ई कोइ साचो मिनख बण सकै। बिन भणिया तो साफ ढाढा ई तो हुवै। उवैनै उण टैम कबीर बस्ती रै स्वामी जी री याद आयगी। उणसू ई तो वा केई अरथाऊ बाता सीखी ही।

स्वामी जी रो बस्ती मे हेक आश्रम हो। गगा रो बापू उठै सेवा-चाकरी करतो। आश्रम री पोसाळ मे उवै तीन बरसा ताई भणाई करी ही। गगा नाव

पण उवारो ई तो दियोडो है। मायता तो उणरो नाव राख्यो हो- गूगाडी। स्वामी जी री याद आता ई उणरी आख्या गीली हुयगी।

गगा नै अच्छी तरा याद है कै स्वामी जी सतसग मे कैया करता कै नाव रो आदमियत माथै घणो मैताऊ असर पडै। ओछो नाव हीणपणै रो प्रतीक हुवै। हीणाई सू ई दीनता निपजै अर दीनता जिनगाणी नै धूडधाणी कर नाखै। आईज कारण हो कै गगा आपरै बेटै रो नाव किसन सू किसनूडो कोनी हुवण दियो। उणनै हरमेस इण बात रो दुख रैयो कै उणरै समाज मे नाव बिगाडवा री खोटी परम्परा क्यू है। स्वामी जी कैया करता कै इणमे ऊचै वरगा रै लोगा री चाल तो है ई पण उवैरै समाज रो दोस पण कमती कोनी।

स्वामी जी रै असरियै सू गगा सोच्या करती कै उणरै समाज रो रामूडो रामकुमार क्यू नीं? गमतूडी नै गोमती क्यू नी कैयो जावै? कुण बिगाडै नाव? सरुआत तो घर सू ई हुवै। लोग हीणा बण दीनपणै मे क्यू रैवणो चावै? विरोध री हुकार क्यू नी सरसै? किसन नै जद कोई किसनूडो कैवतो तो वा लड पडती। अेकर तो वा सरपच जी सू ई उळझगी ही। गगा री आ पक्की मानता ही कै ओछो नाव अवनति रो सूचक हुवै। पिछडणै रो कारण हुया करै।

सूरज घडी रो सूइयो घणो ई आगै बधग्यो हो पण बस रा बावड कठै? लोगा री अमूजारी छेह देवण लागी। गगा जोयो थाक भरी बाट री पीड पिड माथे लपटाय पटवारी जी अर लाला जी पाछा गाव री तरफ कूच करग्या। दूजा मे पण खुसर-पुसर सरू हुयगी ही। पण गगा तो नैचो कर बैठी ही। अणमणी ज्यू, अठै-बठै यू ई निजरा घुमावती। उणनै तो जावणो ई हो बस भला जद ई आवै।

इतरै मे वा काई देखै कै सडक रै पार बोरटी रै हेठै तीन छोरा आय बैठै। उवा आप-आपरी पोटल्या खोली अर कादै सू सोगरो खावणो सरू कर्‌यो। गगा उणनै ओळखती ही। उवैरै समाज रा ई तो लाडेसर हा। भणवा री उमर चराई खातै मे। गगा सोचण लागी कै जिण हाथा मे पाटी-बरतणा हुवणा चइजै उणमे लाठी अर पोटली क्यू थमाइजी है? अै अधनगिया पगा-उबरना छोरा दिन भर रण-रोई भटका खावता जद रात पडया घरा आवता तो उणरो ताम्बाई मूडो जो र गगा नै घणो ई दुख होया करतो। छोरा री मावा सू बात करी पण उवा कद मानी। उल्टो उणरो ई हासो कर्‌यो।

गगा तो कद रो ई सकळप धार लीधो हो कै किसन रै बाळपणै री गत दूजा ज्यू कोनी बिगाड़ै। पण किसन रो बापू मगत तो जूनी परम्परावा सू बीवणियो सीगै रै चीला रो हिमायती। उणमें गगा जिती उगत कठै। वो पण समाज रै दूजा लोगा री गैळ ओ ई चावतो कै किसन ढोर-डागर चरावै अर हर महनै पाच पसेरी नाज कमावै। गगा अगेजती ही कै ढोर-डागरा रै सागै रैवण सू किसन पण ढोर बण जासी। इण कारण उवै मगत रै इण भूडै विचार रो खासो विरोध कर्‌यो हो। फेर होळै-होळै मगत नै जिया-तिया समझाय किसन नै स्कूल मे भरती करायो हो।

बोरटी रै हेठैवाळा छोरा खा-पी चईर हुयग्या हाथा में खुद सू मोटी गेडी लिया। काई आ गेडी उवानै आच्छो भविस दे सकैला? गगा नै दुख हो कै मगत पण आज किसन रै हाथा सू बस्तो खोस र गेडी रो भविस सूपणो चायो हो। दूजा नै कई दोस। मगत खुद नै बेटै रै भविस री कठै फिकर है। आक रो कीडो आक मे ई जीवणो चावै। मगत जिसा मिनख फूला री हूस ई कद राखै। गगा रै मन मे घणो आक्रोस हो कै लोग-बाग भूडा सीगा मेट क्यू नीं नाखै। बदळाव क्यू नी लावै। हेकै चीलै चालण सू दीनपणो कोनी मिट सकै। गगा नै याद आई स्वामी जी री उक्ति- चीलै बेवै कपूत। मगत चीलै बेवणियो कपूत।

मगत री याद आता ई गगा रो मन खाटो पडग्यो। उवै खखारो कर जोर सू थूक्यो। आधी थोडीक धीमी पडगी ही। किसन री आख्या झपकती देख उणनै गोदी मे सावळ सुवा दियो। सडक माथै निजरा फगाय फुस्फुसाई - आज कई हुयग्यो है बस रै।

किसन रै माथै हेत रो हाथ फेरती गगा फेर सोच मे अळूजगी। बस री बाट वा घणी ताळ जोय सकै पण मगत अर माजी रै विचारा मे बदळाव री बाट जोवण री सबर उणमे अबै बाकी कोनी रैयी। उणनै बी हो कै इण बाट मे कठै किसन रो समै हाथ सू नीं निकळ जावै।

स्वामी जी रो कैणो हो के समै री तासीर नै ओळखो। उणरो हैलो साभळो। समै री ताकीद नै समझो। उणरै मिजाज री टच लेवो। उणरी हाकळ नै कनगिसरको मत देवो। समै धतरजी री पण बाट कोनी जोवै। समै गयो पछी कोरो पछतावो ई पछतावो।

गगा पछतावो कोनी चावती। उवैरी हूस ही कै किसन रो जमारो उवैरो भविस सुधरै। इण वास्तै वा मोटी सू मोटी कुरबाणी देवा नै तइयार ही। मरुधरा री लुगाई रो यू धणी रो घर छोड जावणो कोई कम जीवट रो काम हो? गगा नै घर छोडया तीन कलाक हुयग्या हा पण उवैनै रती भर ई अपराध बोध रो अैसास कोनी हुयो।

गगा अेकर फेर सडक खानी जोयो। बस रा अेनाण ई नी दीस्या। पाछी खेजडी रै ओठो लगा'र निढाळ हुयगी अर आख्या मींच लीधी।

वानै उण दिना री हर आवण लागी जद मगत सागीडो बीमार पडयो हो। घणा दिना सू खाट पकड राखी ही। काम-धाम सै बन्द। घर मे टोटा रो असरियो साव दीखण लागो हो। माजी री कूडी झिक-झिक अर मगत रो चिडचिडावणो तर-तर बधतोग्यो। बात-बेबात माथै हाका-हू। गाळया रो बफारो। कदै-कदै तो हाथ पण हला देतो। गगा तो घणसई ही पण किसन री मार उणनै बाळ नाखती।

किसन री भणाई किण नै ई फाटी आख ई कोनी सुहावती। बीमारी री टैम तो उणसू कीक कमाई री आस राखीजी। मा-बेटै दोनू रो ओई कैवणो हो कै भणाई सू किसन बिगड जासी अर काम-धधै रै लायक कतई कोनी रैवै। उवांरै मूडै हेक ई बात ही- कदै घमार रो छोरो भण सकै है? पण गगा उवानै किया समझावती। किसन नै चराई वास्तै नी भेजण सारू गगा खुद देणगी माथै जावणो सरू कर्‌यो हो। उवै हाडतोड पोरियो-मजूरी करी पण माजी री कच-कच अर मगत री रट बन्द कोनी हुई।

चिडी किसन रै गाल माथै बीठ कर दी ही। ऊगिजियोडै किसन मे हळकीसीक हरकत हुई। गगा री आख्या खुलगी। अठै-बठै जोयो तो बीठ माथै निजर पडी। आगळी सू उणनै अळगी फेकी अर ओढणी सू गाल नै पूछियो।

मन माय सुबै री धुकधुकी हालताई चालू ही। किसन नै थापती वा सोधण लागी कै आज सुबै तो हद ई हुयगी ही। सुबै री घटणा नै याद कर उवैरै मूडै माथै रीस रा गैरा माडणा मडग्या। सासा कींक तेज हुयगी अर उणरै होठा सू हेक होळैसीक अळखावणी फुफकार हाफेई निसरी- थू राखस है। ओ ई फुफकार सुबै घणी जोर सू निसरी ही।

मगत सुवै घणै लाड सू किसन नै टेलो पाडयो हो। किसन हरपतो खनै गयो तो उवै बस्तो लावण रो कैयो हो। किसन राजी-राजी आपरो बस्तो लायो अर खाट माथै बैठग्यो। किसन घणा दिना सू अैहडै हेत-लाड री उडीक में हो। वो तो जाणै निहाळ ई हुयग्यो। गगा जद ओ दरसाव देख्यो हो तो उणरै मूडै पिण सोवणी चमक आयगी ही। उणनै लागो हो कै मगत रै विचारा मे बखताऊ बदळाव आग्यो है। असिक्षा अर रगहीणी परम्परावा री भूडी आध्या अबै नवै विसवास सू भचीडा खाय पाछी मुड जासी। वो ओरडी रै बारणै री ओट मे ऊभगी ही बाप-बेटै रै लूण्ठै मिलण रै ठावकै दरसाव नै जोवा खातिर।

बेटा किसन थारी पोथ्या तो बता। म्हनै पिण ठा तो पडै कै म्हारो लाल कई कई भणै है। -मादै मगत उठ र सावळ बैठतै थकै कैयो।

अबार काढू, बापू। - किसन हुळसतो बस्तै सू पोथ्या काढण लागो।

तो थू आ भणै? सगळा पइसा इणमे बरबाद करै है थारी मा। मगत रीस मे गेलो हुयोडो किसन री पोथ्या फाडनी सरू कर दीधी। गगा हक्की-बक्की हुयगी। मूडै री चमक माथै जाणै काळख पुतगी। किसन पिण बगनो ज्यू बापू सामे जोवण लाग्यो हो।

लै भण लै लिख। अै लै बण जा बेटा मोटो अफीसर। ओ हुयग्यो डागदर। मगत इण बोला रै सागै पोथ्या रा लीरा करतो जावतो अर किसन रै मूडै माथै मारतो जावतो। फेर रोज वाळी गाळ्या री बिरखा। किसन लाइ ओ नी समझ सक्यो कै उणसू काई कसूर हुयग्यो। बापू बेराजी क्यू हुयग्या? वो डसर-डसर रोवणो सरू कर दीधो हो। बारै ऊभी गगा रै सरीर मे जाणै लाय लागगी ही। या रीस मे बडबडावता ओरडी मे बडी ही अर मगत रै हाथा सू पोथ्या झपट नाखी ही।

थू राखस है। थू कस है। गगा सिंघणी ज्यू दहाडी ही। मगत किसन नै मारण लागो हो तो उवै मगत नै धक्को मार आडो नाख दीधो अर किसन नै उठा र छाती सू भीच लीधो हो। बोली ही- म्हारो किसन मारण सारू कोनी। जे थारा हाथ मारू-मारू करै तो खुद रै कुलखणा नै मार।

खाट माथै पड्यो मगत चीख्यो हो- हरामखोर म्हारै माथै हाथ हलावै। चोटलो कपड घर सू बारै काढ नाखीस। कमीणी । मगत खासी मे अळूजग्यो हो। गगा पण सुणावण मे कोई कमी कोनी राखी ही।

हाको सुण माजी ओरडी मे आया हा। वा पिण तो ओ ई चावता कै किसन री पोथ्या री इसीज गत हुवै। मगचीती हुयोडी देख ठठकै सू बोल्या हा- मगत ठीक ई तो कैवै। किसनूड़े री भणाई बन्द। इयैरा साइणा-साथी कित्तो कमावै है। अर हेक औ है बैठो-ठालो चरै अर कीमती बखत बिगाडै। फेर खूणै मे पड़ी थकी गेडी हाथ मे ले र बोल्या- आज सू किसनूडै रै हाथ मे पाटी-पोथी री जागा आ गेडी हुवणी चइजै।

किसन री भणाई तो हरगिज बद कोनी करा। गगा उण गैडी नै गोडै सू भाग नाखै।

'जै म्हारै घर मे रैवणो हुवै तो सुण किसनूडो कालै चराई माथै जासी समझी। लै, औ गेडी झालले। मगत उठ'र हेक बीजी गेडी आगै करतो बोल्यो।

आ गेडी तो थारै जिसा रै हाथा मे ई ओपसी। म्हारो किसन भणैला डकै री चोट भणैला। भलाई म्हनै औ घर छोडणो ई पडै। गगा री आवाज मे बळ हो हेक विसवास हो।

निकळ जा हराम खोर! । मगत खासी मे अळूजग्यो। माजी उणरी पुठी माथै हाथ फेरवा लागा।

गगा तण्योडी किसन नै ले र बारै निकळगी ही अर फेर मगत नै सुणावती थकी जोर सू बोली ही- म्हा चुवा जास्या। अठै नरग मे घणा रोमा भुगत लीधा। भूडी आध्या रा मारवा थापका झेलता रैया। म्हा जास्या हेक नवी आधी री तलास मे जिको भूडी आध्या रो समूळ नास कर देसी। आधी ई आधी नै मार सकसी। माजी अर मगत बडवडावता रैया पण उवै कोई गैनार कोनी कर्‍यो। गगा उणीज टैम निरणै ले लीधो हो कै वा किसन रै भविस खातिर गाव छोड सैर जासी। उणरी दीठ मे बदळाव सारू जतन क्राति री आधी ई तो हुवै।

खेजडी सू कोई बीसेक पोडा आगळ भूतौळियै री सरसराट सू गगा रै विचारा रा घोडा थोडाक बिदक्या। वा भूतौळियो जोवा लागी। सुबै उणरै घट माय पिण केई डरपावणा भूतौळिया चालण ढूका हा। अेकर तो वा घाबरीजगी ही। पण अचाणचक स्वामी जी रै सुमरण सू उणरै मन मे भू-भू करता भूतौळिया सात हुयग्या हा। स्वामी जी अजकाळा सैर मे रैवै। ओ सोच र उणमे

हिम्मत रो सचार हुवण लागो हो। गगा पक्की धार ली ही कै वा उणरै आश्रम मे काम करसी अर किसन रो भविस सधारण रै जतन मे खप जांसी।

बस रै पूपाडै री पू-पू आधी सूं आवण लागी। लोग समझग्या कै थोड़ीक ताळ मे बस आ जासी। आडा-अवळा पड्या लोगा में हरकत सरु व्ही। सगळा भेळा हुवण लागा। गगा उठणै सू पैला किसन नै झकझोर उठायो। हेक हाथ मे थैलो अर दूजै हाथ सू किसन री कळाई झाली अर भीड री तरफ चाल पडी। बस उठै ई रुक्या करै जठै भीड जमा हुवै।

बस पूपाडो बजाती आ र रुकी। हेक-हेक कर सगळा जात्री माय बडग्या। छेवट गगा पिण किसन रै सागै बस मे घुसगी। थोडीक ताळ मे बस बईर हुयगी। गगा नफरत री हेक निजर गाव दिस्या नाखी अर फेर मूडो फोर लीधो। इण टैम उवैरो वजूद पण कैवण दूको- आज काळी आध्या रो लारो छूटो। उणरै मूडै माथै गैरै सतोख री सोवणी चमक पुतगी। हिंवडो पण लारै क्यू रैवै बोल्यो- रग है रे गगा थारै फैसलै नै।

आधी रो जोर काफी कम हुयग्यो हो। गगा सोचण लागी कै गाव वाळा धूडाळी आधी नै घणी बगोवै है पण वै घर अर समाज मे नित दाळद घालती आध्या सू किता बेखबर है। आ आध्या तो मिनखाजूण ई बिगाड नाखै।

इण सत्यानासी आध्या सू चिर मुगति री तलास सारू ई तो वा सैर जावै है। हेक ऐहडी नवी आधी री तलास मे जिको जूनी आध्या रो समूळ नास करै अर समाज व गाव री काया ई पळट नाखै। गगा नै पूरो विसवास है कै नवी आधी लोगा रै जीवण माथै जम्योडी दीनता-हीणता री खख साफ कर देसी। नवी आधी जूना नै उखाड नव-निरमाण रा सख बजासी अर उवैरी आवाज रै सागै सोरप रो बायरो पसर जासी। गाव-गाव नै ऐहडी आधी री उडीक हुवणी चइजै तलास हुवणी चइजै। गगा नै पूरो पतियारो है कै नवी आधी री नवी क्राति री तलास जरूर पूरी होसी।

□□□

बिचाळै

सुबै स्नाण कर बाथरूम सू बारै आता ई रघु रो माथो ठणकै। मन माय डबको पडै। अचूभै मे डरपतो अठै-बठै निजरा घुमावै। मूडै री चमक माथै हेकाहेक मादगी बिछ जावै। हिंवडै मे अमूज री हूक ज्यू उठै कै आज घर माय इत्ती गजब री सायति क्यू है? अच्चू री खटपट नै कई हुयग्यो है? रोज तो वा खुद सू ई बाता करती दिखती। कदै उण माथै खीजती लाधती। कदै काम री झूझळ मे बडबडावती रा दरसण हुवता। पण आज फगत सून्वाड री सू-सू ई सुणीजै। ड्रेसिग रूम रै बारणै सू झाकै। अच्चू नै डाइनिंग टेबल री कुर्सी माथै बैठयोडी देख रघु री घबराट कमती हुवै अर वो तइयार हुवण मे लाग जावै।

आजै तो म्है टैमसर हू। - कळाई मे घडी बाधतो रघु डाइनिग टेबल खनै आवै। कुर्सी माथै बैठतो आदत मुजब मस्ती रै रग मे मुळकतो बोलै- सर जी अबै तो कोई सिकायत कोनी। अच्चू इणरो कोई जवाब कोनी देवै तो रघु फेर थोडो डबकीजै। लागै रघु री मस्ती अच्चू री चुपी री गरमाट सू बाफ बण उड जावै।

रघु अमूजारी मे समझ कोनी सकै कै अच्चू रै आज काई हुयग्यो है। नाड नीची किया मून क्यू झाल राखी है। रघु सोचै कै स्यात वा नाराज होसी। इण कारण खुसामद रै लहजे मे होळै-होळै रणकै- अच्चू राणी गुलाम सू जे कोई गुस्ताखी हुयगी हुवै तो मैरबाणी कर माफी बख्सो जी। फेर ई वा चुप। दूजो कोई दिन हुवतो तो वा अवस कैती कै जाओ माफ कर्‌यो।

रघु गभीर हुय र घबराट सू अच्चू रो मूडो ऊचो उठावै। जोवै ओ कई अच्चू री आख्या सू तो आसुवा री बूदा ढळकै। रघु कईक पूछै उण सू पैला

ई अच्चू हेक पानो उवैरी तरफ सरकावै। अै तार है। रघु उणनै हाथ मे लेर बाचण लागै।

अच्चू डुसका भरती बोलै- रघु म्हारी लाडेसर भाभीसा घणी बीमार है। म्हारी भाभीसा रघु। म्हे काई करू रे। डुसका मे गूथिजियोडी अच्चू रघु रै काधे माथै मत्थो टेक देवै।

रघु उणरै केसा मे आगळया फिरावतो धीजै रै सुर मे बोलै- अच्चू, भाभीसा बीमार है तो बेगी ई वा साजी पिण हुय जासी। धीजो राख रोवण सू काई होसी। थोडी-बोत तो बीमारी-सीमारी चालती ई रैवै। प्रभु सै ठीक कर देसी। धीजो राख यू गैलाया ना कर।

ना रे रघु। अबकै भाभीसा अवस ई घणी बीमार है। हरिकात भइया रो अै तार ई बोलै है। हळकी-पतली बात माथै वै तार तो काई चिठी पिण कोनी लिखै। अच्चू कीक सावळ हुवती कैवै।

रघु अबोलो रैवै। काई बोलै? वो जाणै कै अच्चू जाबक ई साची कैवै। हरिकात भइया चिठी-पत्री देवण मे घणा काठा। वो इणनै घणा मैताऊ गिणै। इणनै सोच समझ र वापरणै री सलाह दिया करै। हरिकात रै तार नै रघु हळको कोनी मानै। उवा बाबूजी री बीमारी रो तार उण बखत भेज्यो हो जद वै फगत हेक-बे दिना रा ई मिजमान हा। रघु नै पिण तार देख्या पूरो विसवास हुय जावै कै भाभीसा अवस ई खासी बीमार हुवणी चइजै।

अच्चू अवै टेबल माथै हाथा रै आसरै मत्थो टेक देवै। ज्यू-ज्यू अणहोणी बावत सोचै उवैरै डुसका रो सुर ऊचो हुवै। रोवती बुदबुदावै- रघु भाभीसा हमै कोनी बचै। उवै घणसई घणा धमीडा खाधा पण मूडै सू अलफ रो बे तक कोनी काढयो।

साची कैवै। भाभीसा तो भाभीसा ई है। प्रेम अर त्याग री साक्षात मूरत। कैवतो रघु थोडोक थमै अर फेर बोलै- पण भाभीसा अर रजनीकात भइया रै बिचाळै अैहडो काई गूढाळो माजरो है कै उणरै रिस्तै रो विसवास पग माडता ई पोगळो हुयग्यो। दोनू री प्रीत परवाण क्यू नी चड सकी।

अच्चू कई नीं बोलै। रघु आपरी रौ मे बोलतो ई जावै- पण किणनै दोस देवा। म्हनै तो यू लागै कै दोनू ई आप-आप री जागा खरा भी है अर खोटा भी। दोनू ई माय रा माय तडफै। आपस मे मिळणो पिण चावै पण जद मिळै

तो ठा नीं क्यू लड पडै। समझ मे कोनी आवै कै दोनू ओ क्यू नीं गोखै कै उणरै बिचाळै काई है क्यू है।

'हा रघु म्है ई मानू कै गलती दोनू री है। हेक हाथ सू ताळी कोनी वाज्या करै। भइयै दुख जरूर पायो है पण उणसू अधको खामियाजो भाभीसा नै ई भुगतणो पडयो है। अबळा नारी ई भूड ठीकरो ढोवै। लायण भाभीसा! अच्चू सीधी वैठ र मायली बफार निकाळै।

रघु गोख लेवै कै बात रो मोड चोखो कोनी। बात पळटतो बोलै- भाभीसा सू मिळवा अपा आजे ई चालस्या तीन बजी री गाडी सू। म्है आफिस जा'र बेगोई आजास्यू। जावण री पूरी तइयारी कर लीजो।

रघु री बात सू अच्चू रो भारी जीव काफी हळको हुय जावै। अमूज मादी पडवा लागै। रघु गयो पछै अच्चू थोडी ताळ तो उठै वैठी रैवै। फेर पलग माथै आ र सीधी पड जावै। मन अजा ताई भाभी सू ई सब्योडो हो। उणरै मन मे ओ विसवास तर-तर गैरो हुवण लागै कै भाभी अबै बचै कोनी।

भइया लिख्यो है कै भाभी बीमार है। पण वा साजी कद ही? अच्चू तो उणनै माय री माय सुळगती ई जोई है। सोरप री मुळकण कद बिखरी ही उणरै तन-मन माथै। अच्चू सोचै कै भाभीसा री जिनगाणी हेक झीणै पण मोटै वेजवाळी गोथली है जिणसू जीणै री ईच्छा अर हूस री ऊर्जा लगोतार ढुळती ई जावै है। बेज कीक तो भइयै चवडो कर्‌यो है अर कींक भाभी खुद आगळया घाल-घाल कर्‌यो है। भइयो ठा नी क्यू, बेज नै चवडावतो जावै अर हर टेम पछतातो पिण जावै। क्यू पडी है भाभीसा खुद रै जीव रै लारै!

अच्चू ऊधी पड तकिये मे मूडो लुका देवै। बद आख्या रै आगै भाभी रो गऊ जिसो भोळो मूडो चितराई जावै। काई कमी है म्हारी भाभी मे। बोत कम हुवै है भाभी जिसी गुणवतिया। सासरै मे यू हिली-मिळी घुळगी ही जाणै दूध मे खाड। पण हरिकात भइया री निजरा मे भाभी निपट गवार डोफी अर मनहूस ई रैयी। इण कारण सू ई तो भाभी नै भइया रो मनचीतो प्यार-सम्मान कोनी मिळयो काई? भइया अर भाभी रै बिचाळै सम्बन्धा री जिकी तसवीर बणी है उणमे ओ भी स्यात हेक रग अवस हुवणो चइजै भाभी री जिनगाणी रो टच लेती अच्चू यू गोखै। पण दूजै रगा रो मरम? तसवीर रै सगळै रगा नै वा ना तो पूरी तरा समझ सकी अर ना ई कदै भाभी अरथ बतायो।

अच्यू नै घोपी तरा याद है कै अेकर वा दीदी रै सागै बालकणी में बैठी ही। उण वखत भइया रै कमरै सू धीसां-टाका री आवाज आवण लागी ही। हाका रै सागै चीज-वसता री फैंका-फेकी री खड़-खड़ पिण सुणीजी ही। यूं लखायो हो कै भाभी दब्योड़ी आवाज सूं भइया नै समझावण री कोसिस कर रैयी ही। फेर बात बणती नीं देख रोवती जुबान सू, पण तीखै सुर में प्रतिकार करवा लागी ही।

बालकणी मे साफ-साफ सुणीज्यो हो भाभी जिको छेयट में भइया नै कैयो हो - म्है हारी आप जीत्या। म्हनै यू तमासो मत ना बणाओ। परवार वाळा सगळा रा कान अठै ई लाग्योड़ा है। सुणो थारै जीवण मे म्हारै वास्तै जागा नीं है तो म्हनै म्हारै हाल माथै छोड देवो। भाभी सुभिमान में निरविकार भाव सू पल्लो समाळती कमरै सू बारै निकळ काम में जुटगी ही। उण बखत भाभी माथै कियोडी दीदी री दुणकारी हाळताई अच्यू नै साळै है। वा भाभी री पीड खुद मैसूसती रैयी है।

भाभी अच्यू सू ई थोडी-घणी खुल्योडी ही। पण उण दिन रै पाछै भाभी जाणै बुझ ई गी। उणरी सख्सियत माथै जाणै मोटो सारो काळो क्रास मडग्यो व्है। वा काई पूछती तो भाभी कम सू कम ई बतावती। कई बोलै अर कई बतावै? खुद नै ई जद खुद री आख्या सू गिरयोडी समझै। पण इतरो जरूर कैयती- अच्यू बाईसा थारा खेलण-खावण रा दिन है। इती बेगी जिनगाणी री सचाइया सू ओळख नीं करणी। घणो दरद हुवै है तेड खायोडा रिस्ता नै निभावण मे। जोगमाया करै इण दरद सू थारो वास्तो ई नीं पडै। अच्यू सोचै भाभीसा री जोगमाया सू कियोडी अरदास रो ई फळ है कै उवैरी जिनगाणी थुथकी नाखै जिसी ओपती है।

हरिकात भइया महीनै मे पनरा-बीस दिन दूर माथै रैयता। इण दिना भाभी चाद ज्यू कीक चमकती पण भइया रै आवतै ई ठा नीं कई हुय जातो कै जाणै भाभी रै चाद नै ग्रहण लाग्यो हुवै। भइया री डाट-फटकार ताड़ना-प्रताडना अपमान सै रा धमीडा ठेठ अतस माय झेलती रैयी पण माठी अेक ई बफार कोनी काढी। अच्यू जद घणो पूछती तो बस अेक ई बात कैती- 'बाईसा म्है घणी पढयोडी कोनी गवार हू। सलीकै बायरी हू। आप खूब भणजो- खूब पढजा। भइया री सोच अे हडी क्यू बणी कै दोस लगाणा है तो

बस लगाणा ई है भला साचा हुवै के कूडा। नित नवा दोस लगावण री वजै स्यात भइया पिण कोनी जाणता व्हैला।

भाभी री मैणत सैयोग अर प्रेरणा सू ई अच्चू इत्ती ऊची भणाई कर सकी है आ बात घर मे कुण जाणै? अच्चू री पढाई सारू भाभी कित्ती राता काळी करी है अच्चू रै सिवा दूजा नै कठै खबर है?

अच्चू घर-गिरस्थी रै बौवार री घाता रा फळ जाणै। घर मे जिण नारी नै प्रीतम रो प्यार नीं मिळै उणनै प्यार कुण देवै? वा सोचै कै भाभी रै सागै पण ओ ईज हुयो। भइया आख्या फोरी तो दीदी अर मा नणद अर सास रो जूनो भूडो रूप दिखावण लागी ही। वारै व्यग-बाणा सू आहत अर अपमानित भाभी नै कदै-कदै तिबारी मे आसूडा ढळकाती वा देखी ही। हेकली चुपचाप। कोई नी पूछतो कोई नी पूछतो।

अेकर अच्चू ई पूछ्यो हो तो फीकी हसी मे कैयो हो- आख मे रावळियो रळकै है। पण अच्चू नै पाछै आ ठा पडगी ही कै मा अणची मासी रै आगै भाभी रै बारै मे आवळ-कावळ कैवती कैयो हो- सीधी अरै राम भजो। जे सीधी हुवती तो काई हरि री आ दसा हुवती? बिच्छणी है पूरी बिच्छणी। टैम-बेटैम डक मारती रैवै।

अच्चू रो मन इणरी याद रै सागै मा रै बाबत खाटो हुय जावै। भाभी री सुणवाई वगैर मा रो निरणय ओ कठै रो न्याव। वा पासो फोरै। देखै हेक चिडी खिडकी सू घर माय आवै आगण मे थोडी अठै-बठै फुदकै अर पछै उड र तोड माथै बैठ जावै। अच्चू चिडी नै देख भाव विभोर हुवती बोल पडै- मा म्हारी भाभी बिच्छणी कोनी। वा तो लायण पखकटी चिडकली है मा। फगत लप भर्‍या दाणा चुगै पण रात-दिन ची-चीं करती फुदकती रैवै। हरिकात भइया उणनै गेडी सू उडावता खिरै तो चिडकली बापडी रो काई दोस।

अच्चू नै चिडी मे भाभीसा रो उणियारो दीखण लागै। भावनावा अैहडा जादू किया ई करै। वा चिडी नै पकडनी चावै पण ओ उड र बालकणी मे जावै परी। वा पिण बालकणी मे जावै। चिडी स्यात अच्चू री मन्सा गोख लेवै अर फुरर फुरर उड जावै। अच्चू उणरो उडणो देखती बोलणो चावै- भाभीसा थू मत उड जाजै।

अच्यू यालकणी मे तणी सू यिरयोडी साडी भेळी कर पाछी माय आवै। अजू घणी टैम है अै सोच र पलग माथे तकियै रै सायरै पसर जावै। बेवजै इया-उया निजरा घुमावै तो सोफै माथै धरयोडी साड़ी मन माय हळचळ पैदा करै। उणनै भाभीसा री जरी पल्लू वाळी साडी याद आवै।

उण दिन उभ छठ रो तिंवार हो। भाभीसा रा काकाजी आयोडा हा। वै उणरै सागै साडी मोलावण बजार गिया हा। भाभीसा अच्यू नै बतायो हो कै दस दुकाना फिरी जद उवैरै भइया री पसद री फिरोजी रग अर जरी बूटया व पल्लू वाळी साडी हाथ लागी ही। नवी साडी मे सज-धज भाभीसा अच्यू खन्नै आई ही अर ऐक कम उमर वाळी भोळी छोरी री तरै हरखावती बोली ही 'बाईसा इण साडी मे म्हू मोथी के गावरू तो कोनी लागू।

ना रे ना। अवै तो म्हारो वीरो निरखतो ई नीं धापैला। - अच्यू हुळसती कैयो हो।

भाभीसा उणीज हरख मे उवैरै कान मे धीरैसीक कैयो हो- 'बाईसा थारै वीरै नै तो अठै लावो। भाभीसा सरम मे मूडो ढाप लीधो हो।

अच्यू उण छिणा नै कीकर भूल सकै जद भइया नवी साडी मे लाली लाडी नै दूर सू देख ई चहकतै कैयो हो- वाह रै अच्यू। आज तो थारी भाभीसा परी ज्यू फूठरी अर चाद ज्यू ओपती लाग रैयी है। वाह खूब। सही टैम देख अच्यू झट सू कैयो हो- भइया अठै तारीफा रा पुळ बाधण सू काई। भाभीसा खन्नै जावो वा उडीक रैयी है।

अच्यू नै याद है कै भइया राजी-राजी उवैरै सागै भाभीसा री ओरडी मे आया हा। भाभीसा नवी बीनणी ज्यू नाड नीची किया ऊभा हा। छाती रा धडका साफ दीखता हा। इतरै मे भइया रै जाणै काई हुयग्यो हो कै वो सरावण रै बोला री जागा दुत्कारण रा आखर माडण लागा। स्यात भाभीसा मिलन री पहल नी करी उण सू भइसा रो पारो चडग्यो व्हैला। पण भइया भी तो प्यार रो इजहार कर सकता हा।

अच्यू हेबतीजगी अर भाभीसा डबकीज र बुत ज्यू हुयग्या। भइया माजणो पाडता बोल्या हा- धत्! रेसमी आथर पैरावण सू कोई गधेडी लाल लगाम वाळी घोडी कोनी बण जावै। ओढण-पैरण रो सऊर-सलीको थू गवार काई जाणै। टाबरा ज्यू रम्मत करता सरम कोनी आवै।

भाभी कई नीं बोली पण उवारी आख्या मे राता खीरा जरूर चमकण लागा हा। मूडै माथै पिण तण-तणी आयगी ही। उवारो ओ रूप अर चुपी स्यात भइया रै पौरस नै चुनौती देवण लागी हो। उवा झटाक सू भाभीसा री साडी रो पल्लू हाथ मे लियो अर रीस मे उणनै चीर नाख्यो। उवारी गाळया-दुत्कारा सू सागीडी आहत हुयोडी भाभीसा हेक करी ना बे पैरयोडी साडी खीच-खीच उतार नाखी अर फेर थानै चीरा-लीरा ई चोखा लागै तो लो घडी-घडा यू बोलती भाभीसा साडी नै फाड चीथडा रो ढेर लगा दीधो। अच्चू काई करो काई करो! कैवती रैयी पण भाभीसा तो उण टैम आपरी ई ठठक मे ही कठै सुणै।

हरिकात भइया ओरडी सू बारै जावण लागा तो साडी रा लीरा हवा मे उछाळता भाभीसा कूक्या हा- खाली हाथ क्यू जावो। अै चींथडा लेजावो नी। लेजा र छाती माथै चेपो सुख-सायति मिळैला। भाभीसा पलग माथै पडग्या हा। अच्चू रै मन नै उण बखत भी समझ कोनी पडी अर आज भी समझ नीं पडै। भइया रै सुभाव मे बदळाव क्यू हुवै? मन कैवै कै दोनू रै बिचाळै अैहडो कोई अवस है जिको इसी अणहोण्या आये दिन सिरजतो रैवै।

अच्चू जूनी बाता याद करै। उवैनै दुख हो कै भाभी नै घर मे कोई पिण समझ कोनी सक्यो। उणरी हर इच्छा हर बात रो ऊधो ई अरथ लगायो जातो। भाभी कदैई आपरी सफाई मे मूडो कोनी खोलियो। सगळा आपरै हिसाब सू उवानै नै वापरी अर पळोटी। भाभी धीरै-धीरै सवेदना बिहूणी हुयगी मसीन ज्यू।

अेकर तो अच्चू आ बात भइया नै परोस दी ही भइया उण टैम बोल्या तो कोनी पण उदास जरूर हुयग्या हा। गैरो निसासो नाख बेमतलब छत नै जोवण लगा हा। उणरै मन माय धधकती लाय री तपास अच्चू बरोबर मैसूस करी ही। मायली बारै क्यू नी निकाळै हरिकात भइया। अच्चू नै पूरो पतियारो हुयग्यो हो कै भइया पिण भाभीसा नै जरूर प्यार करै है। थोडो नी बेहद करै है। भाभीसा नै पिण इणरो अैसास कोनी काई। फेर छतीस रो आक क्यू? दोनू री दुनिया न्यारी-न्यारी क्यू?

अच्चू सोचण लागै कै जरूर दोनू रै बिचाळै कोई अदरस जबरी भीत है जिको दोनू नै हेक कोनी हुवण देवै। स्यात भाई-भाभी दोनू ई उण भींत रो

अस्तित्व नीं जाणता हुवै। जे जाणै भी है तो स्यात वै इण जाळ-जजाळ में उळझ्योडा हुय सकै कै कुण तोडै कींकर तोड़ै। अच्यू मन ई मन अरदास करै - भाभी थू मरजै मती। इत्ता दिन जीवी तो थोडी तो औरू जी लै। म्हनै विसवास है कै हरिकात भइया अबै जिध छोड देसी। बिचाळी भींत तोडण रा पहल करसी। अेकर भइया म्हनै कैयो भी हो- दोनू मे सू कोई हेक तो झुकै। इतरा दिन नी वै झुक्या अर नीं आप। अबै स्यात भइया झुकैला भामी। बिचाळो देखतो ई रैवैला।

अच्यू रै मन मे भाभी सू बात चालू है। वा कैवे है- भाभी थू मरजै मती। वै थारी सिकायत दूर करैला। भाभी सुण अबै भइया थारी चोटी सारू वेणी लावैला। थारै हाथा री मैदी निरखैला। भाभी वेगी साजी हुयजा। मन मे कोई अटको-कटको मत राखजै। म्है आऊ हू, भाभीसा। भइया अर आपनै खत्रै ऊभा र लूण-लोटी करूला। भाभी भइया नै हेलो तो पाड देख। मिनख पहाड सू खिरै तो स्यात उठ भी जावै पण खुद री निजरा सू जे खिरै तो उठणो घणो-घणो मुस्कळ हुवै। इण हालत मे आप ई सायरो देय उवानै उठा सको भाभी।

अच्यू उठ र घडी सामी देखै सवा बारै बजी है। सोचै कै गाडी तो तीन बजी री है। निरी तइयारिया करणी है। रघु आवतो ई हुवैला।

रघु टैमसर आवै। सामान लेय सफर सारू बईर हुय जावै। रात मे आठ बजी घरै पूग जावै।

आयगी अच्यू वैन। हरिकात भइया घर माय घुसता ई मिळग्या। अच्यू भइया कै र वा सू लिपट जावै। हरिकात उणरै माथै दुलार रो हाथ फेरता रैवै।

म्हारी हेताळू भाभीसा कठै है भइया।

वा सामलै कमरै मे है। किणसू ई नी बोलै बस थन्नै ई घडी घडी याद करै है। इण कारण ई तार दियो हो। यू डाक्टर कोई खास बीमारी कोनी बताई।

वो तो ठीक पण आप बारै क्यू ऊभा हो। माय चालो नी।

नई रे अच्चू। थारी भाभी म्हनै देख मूडो फोर लेवै। रोवण दूकै। म्है कई कैवणो चावू, पण बोल होठा रै लारै छापळोडा रैय जावै। बारै ऊभो हू कदास वा ई हेलो पाड दै।

'राम जाणै थारै बिचाळै काई है।

अच्चू आपरै साथै भइया नै पिण खींचती कमरै मे ले जावै। रघु उवारो लारो करै। अच्चू छेकी-छेकी भाभीसा रै पलग खनै जावै। भाभीसा स्यात इजेक्सण री गैळ मे सूता हा। अच्चू पलग रै पागती स्टूल माथै बैठ जावै अर होळै-होळै बोलै- भाभीसा, म्है थारी अच्चू बाईसा। भाभीसा जोवो म्है आई हू, अच्चू। 'हरिकात अर रघु हेक कानी ऊभ जावै। चुपचाप। भाभीसा माथै हेलै रो असर नीं पडतो देख अच्चू, उणरो हाथ आपरै हाथ मे लेय गाल माथै फिरावती बोलै- भाभीसा अर रोवण लागै। भाभीसा धीरै-धीरै आख्या खोलै। फुस्कै- 'कुण है।

म्है हू, भाभीसा' थारी अच्चू।

अच्चू बाईसा' चोखो कर्‌यो आप आयग्या। हेक थारी ई तो उडीक ही। भाभी रै मूडै माथै सतोख री हळकी-सी रेख खिच जावै। वा अच्चू नै खराय-खराय जोवण लागै अर फेर उणरा हाथ आपरै दोनू हाथा सू झाल होठा माथै फिरावण लाग जावै। आख्या मींच बोलै- अबै चैन सू मर सकूला।

'नई भाभीसा। आपनै अजू घणो जीवणो है। थारै-म्हारै खातिर तो आप घणा ई जी लीधा। अबै तो भइया री खातिर जीवणो है।

ना रै बाईसा। म्हारा इसा भाग कठै ! उवारै वास्तै तो म्है कद री ई मर्‌योडी हू?

आपरै वास्तै पिण वै कद रा ई मर्‌योडा हा। आप छत माथै के तिबारी मे रोवता बारै थोडा अर माय घणा। भइया पिण कमरै मे विलखता बारै नीं फगत माय ई माय। अच्चू भइया री तरफ जोवै। वै नाड नीची कर लेवै। साख भरण रो औ भी तो तरीको हुया करै।

कई कैवो बाईसा। थारै भाईसा भलाई म्हनै दुत्कारी पण म्है उणरै वास्तै तो सदीव व्रत किया करू। करवट बदळती भाभीसा विसवास मे बोलै।

दोनू तरफ लाय लाग्योडी ही पण हेक दूजै नै कैवण री अगवाई कुण करै ? दोनू ई तण्योडा रैया अर चुपचाप बळता ई रैया। था दोनू में कठै फरक है? हेक बोल र अन्याव करतो रैयो अर दूजी नीं बोल र अन्याव करती रैयी। अबै तो अळगाव री लाय प्रीत-हेत रै पाणी सू बुझाय नाखो। -अच्चू बोलती रोवणखारी हुय जावै।

तो पछै म्हारै बिचाळै कुण ।" भाभीसा री आ बात पूरी हुवण सू पैलाई रघु पलग खनै आ र बोलै- भाभीसा सगळी बाता रो टच म्हारी समझ मे आयग्यो है। था दोनू रै बिचाळै भीत बण ऊभा हा था दोनू रा अहम। जठै अहम आमै-सामै हुवै उठै जुडाव रा नीं अळगाव रा गीत ई गाइजै। गोधा री लडाई मे बूठा रो ज्यू नास हुवै त्या ई अहमा री लडाई मे जिनगाणिया रो नास हुवै है।

अहम ई जबरी बाधा हो। हरिकात रै हाथ भी स्यात टच आ जावै।

म्हारो अहम। दुस्ट कामणगारो। भाभीसा पछतावै रा निसासा नाखै। उथारै अतस मे नवी हळचळ सरू हुवती लखावै। इण हळचळ री रामबाण औखद सू जूना घावा माथै खरट उग आवै। पीड री तासीर घटती निजर आवै। भाभीसा हेक आस भरी द्रिस्टी सू हरिकात नै जोवण लागै। जोवै काई अणबोल्यो नूतो देवै।

हरिकात प्रीत रो हेलो सामळ पलग खनै आवै। अच्चू उठ पलग माथै बैठ जावै अर वै स्टूल माथै। भाभीसा अबै भइया नै देख मूडो कोनी फोरै। या तो उणरा बोल भी सुणणा चावै। भइया जद भाभीसा रा हाथ झाल आप रै माथै सू लगावै तो दोनू री आख्या सू आसुवा रा रेला सरू हुय जावै। अच्चू-रघु नै लागै कै आसुवा रै सागै मायलो सगळो कचरो मायली सगळी मैल बारै आय जासी। अहम रा प्राण निकळ जासी।

भइया भाभीसा री आगळया म आपरी आगळया घाल सबखी भींचै अर बोलै- लाली म्है केई बार हेत रो तेडो लेय थारी ओरडी री तरफ चाल्यो हो पण ओरडी रै माय बडण सू पैला ई कोई अणजाण सगति म्हनै पाछो खींच लेती। म्है बेबस पाछो वळ जातो।

'म्हारै सागै पिण इस्योज हुवतो। - भाभीसा बिचाळै बोलै। भीच्योडी आगळया मीठो दरद करै। दोनू रै हाथा मे थोडी हरकत हुवै पण आगळया छोडै कोई नीं।

हरिकात नै मायली बफार निकाळण री उतावळ ही। भाभीसा रै गीलै गाला माथै हाथ फिरावता बोलै- 'लाली साची कैवू। जद म्है म्हारै आपै मे नीं हुवतो तद ई म्हैं थारै वास्तै कोझा बोल काढतो थनै दुत्कारतो अर थारी इज्जत रा काकरा किया करतो। पण बाद मे जद म्है हेक अणजाण जजाळ सू मुगति पावतो तो म्हनै घणो दुख घणो पछतावो हुवतो। कदै-कदै तो म्है रोवणो सरू कर देतो।

रघु बिचाळै बोलै- हरिकात भइया ओ सगळो खेलो अडियल व कुचमादी अहम रो ई हो।

हरिकात कनखिया सू रघु नै देखै जाणै कैवै कै अबार वो किणी री भी सुणै कोनी। आपरी कथणी जारी राखता बोलै- 'लाली म्हनै समझ आयगी है कै लुगाई बिना मडद अधूरो है। जीवण गाड़ी हेकै पहियै सू कोनी चाल्या करै।

हरिकात बोलणो बन्द कर खीसै सू रूमाल काढै अर मूडो पूछण लागै। भाभीसा भइया रै हाथ सू रूमाल खोस र उणरो मूडो पूछता बोलै- म्है पिण जाणगी हू, मडद बिना लुगाई पिण अधूरी हुया करै। भाभीसा रै मूडै माथै मुळकण रा तम्बू तणवा लागै।

घणी ताळ चुप बैठी अच्चू हरख सू बोली- अबै हेक दूजै नै माफी बख्सो अर आगै री सुध लेवो। नूत्योडी बीमारिया सू पिंड छुडावो। हिळमिळ जीवण रा गीत गावो।

भाभीसा खिसक'र बैठण री कोसिस करै। हरिकात उठ र तकियै रो सायरो देवै। पाछा स्टूल माथै नीं बैठ र पलग माथै भाभीसा रै खनै बैठ जावै।

अच्चू चालो अबै अपा रो कई काम। अच्चू अर रघु कमरै सू बुवा जावै। कमरै मे रैय जावै हरिकात भइया अर लाली भाभीसा। उणारै बिचाळै कोई भींत कोनी ही अबै। जे कोई बिचाळै है तो वो है प्रीत री सारा-धडकणा। बिचाळै है विसवासा री मनमोहक सौरम।

❑❑❑

बदळाव

दीपू नै आजै ई पैली मर्तबा प्रतख अैसास हुवै कै अंध-विसवासा री जड़ा जन-मानस रै अतस मे कित्ती ऊंडी जम्योडी है। सरग-नरग अर भाग-विधाता रै काल्पनिक सरुप रो जगताळी हळचळा सू केहडो अतूट मेळ है मिनखा रै रोजाना री चळगत माथै उणरी किती प्रबळ हटक है इण सगळी बाता नै उवै अबार ई गोखी।

आज उणरो विसवास पक्को हुयग्यो कै अध्यात्म रै अधकचरै ग्यान अर सीगाळी थोथी आस्थावा समाज नै पतन रै ऊंडै खाडै मे नाख्यो है। विचार भला केहडा पिण ई क्यू नी हुवै मिनख जद उणनै मूरत रूप मे सापरतै जोय लेवै तो वो निस्चै ई सागीडो झकझोरीज जावै। दीपू री भी आईज हालत हुयरी है। दकियानूसी विचार जाणै साख्यात ऊभा उवैरी सोच नै ललकारै। उणरी समझ मे कोनी आवतो कै लोग कुरीता अर ततबायरी प्रथावा रै झाडखा नै आपरै लोही सू सीच र हरियल क्यू राखणा चावै?

दीपू मैसूस करै कै धरम-करम रै नाव घालतै गोरखधधै मे गजब री लोकसगति हुया करै। इणसू टकराव मे बस तूटण ई मिळै। इणरै विरोध रै कारण दीपू तो बेरगो ई हुयग्यो है। वो गोखै कै आख्या रै सामी सिद्धान्ता रो तूटणो कितो भूडो देखाव हुया करै।

दीपू साकळै सू ई पार्क मे आ र बैठो है। पार्क रै आथूणै खूणै बावळ रै हेठै उणरी ठावी बैठक हुया करै। आ अेकात जागा दीपू नै इण कारण सू भी पसद है कै बावळ मे उणनै मिनख जमारै रो सागी अुणियारो निजर आवै तीखै काटा री सौगात लिया। चोमा री तासीर लिया। मिनखाजूण बावळिया काटा री जीती-जागती मूरत ई तो है। वो आज मैसूस करै है कै केई काटा चुभग्या

है उणरै बारै भी अर माय भी। उणरै सोच री रग-रग जाणै बीधीजगी है। जद चोभा रा तीर छूटण लागै तो समझ रा लस्करिया थम ई जाया करै। विचारा री उथळ-पुथळ मे दीपू बगनो हुयोडो आडो पड जावै है।

दीपू री दीठ सू मा री सगळी बाता तत बायरी ही। साव फीकी फस्स। तरक री ताकडी माथै घणी हळकी। धरम रै नाव माथै दकियानूसी ढोवण री उफाण भरी जिध। आस्था-सिरधा रै अणचायै व अळखावणै रूप री मूरत नै आतमा रै आगणै थरप र पूजा-अरचणा रो तीखो आग्रह।

दीपू री तडफ तर-तर पोगरती जावै सोचै- किणी दूजै रै मूडै सू जे इसी अरथ हीणी कथणी झरती तो पकायत वो आपै सू बार हुय जातो। आक्रोस मे जाणै काई-काई उबाकतो- कचरो फूस बकवास । पण वो काई मा री बाता रो विरोध कर सक्यो? वो आपरी आदत मुजब शट अप कैय सक्यो? कोनी। पण क्यू? वो खुद नै ई कोसै कै उणरै लोही मे उबाळ क्यू नीं आयो? उणरी आख्या रै सामी ई उणरै विसवासा री उणरै सिद्धाता री हत्या करीजी अर वो बेबस हुयोडो मजमो देखतो ई रैयो। रिस्ता सू जुडी भावनावा घणी जबर हुवै गजब री लौठी हुया करै। फेर मा री अध-सिरधा अर आस्था मे रच्योडी-पच्योडी भावनावा सू बाथेडा लेवणा कोई आसान काम कोनी। मा रा हथियार घणा सैठा है।

दीपू सुबै सू ई इणी गतातूळ मे छटपटीजै। उवै मा रै सामै नामी-गिरामी ग्यानी सता री सीखा रा हवाला दीधा धरम रो साचो मरम बखाण्यो पण कोई काम नी आयो। भाट ज्यू पाखडा री काळी बही बाची। कुप्रथावा सू तन-मन माथै घाव लियोडा री मिसाला पिण दी। पण भा कठै मानी? मा रै तो जाणै चौपडै घडै छाटा क्यू? दीपू अचरज मे गूथीजतो जावै कै हेक अणपढ रै विसवास री दीवारा पिण इती मजबूत हुया करै कै ग्यान री तोफा पिण मार करती थाक जावै। अर उणरो कई नी बिगडै।

बाता ई बाता मे मा उणनै नास्तिक कैयो हो भलाई वा नास्तिक री परिभासा ई नी जाणती हुवै। दीपू रो मन तो घणो हुयो कै वो कैय दै कै नास्तिक कुण है। पण ठा नी क्यू वो इसो बोल नी सक्यो। स्यात रिस्तै री मरजादा रै कारण। मा रो हठ हमीर-हठ नै पाछी राखै जिसो। उवै तो आपरै निरणै रो अैलाण कर दियो हो। मा माथै कोई असर नी हुवतो देख वो हेक

हारोडै जुआरी ज्यू माचै सू उठग्यो हो। अर हेक सजायाफ्ता गुनैगार री गैळ मा रा उछालियोडा सबदा नै अतस माथै लपेट घर सू बारै निकळग्यो हो।

दीपू दूब माथै अळेट जावै। उवैरो मन ठाइयेसर कोनी, हिंवडै माय विचारा रो भूतोळियो भमै। इण भूतोळियै री मार सू माथो घूणतो वो आख्या मीच लेवै। बन्द आख्या रै आगे सुबै री घटणा फिलम ज्यू सरकण लागै। अे हडी हालत मे हिंवडो फिलमा ई देख्या करै स्यात्त टच काढण सारू।

सुबै मा ई चाय ले र दीपू रै कमरै मे आई ही। बिया जिम्मो उणरै छोटै भाइ सनू रो है। पण आजै मा रै हाथ मे चाय रो प्यालो देख दीपू अदाज लगा लियो हो कै अवस कोई खास बात है। मा कीक कैवती उणसू पैला ई दीपू पूछ लीधो हो- क्यू मा आज थू, म्हनै हेलो कर देती। सनू कठै?

सनू नै रासण री दुकाण भेज्यो है। अबार सू लैण मे खडो होसी जद जा र दस बज्या ताई स्यात बारी आ जावै। करमा रा दोस है भाग रो लेखो है। अैहडा सडियो-गळियो नाज पिण सोरो कोनी मिळै। मा आपरी रौ मे बैवती थकी पडूतर रै सागै मायली बफार पिण काढी।

मा अै नी तो करमा रो दोस है अर नी भाग रो। अै तो अपारो इ दोस है अपारै राज रो ई है। लोगा री निजरा माथै स्वारथ रो पडदो पडयो थको है। जमीर बिहूणा लोग हा जिसा ई ठीक हा' रै हालात सू उभरणो ई कोनी चावै। भाग माथै अणूतो विसवास ई तो सगळी बुराइया री जड है। करमा अर भाग री बात कै र मा जाणै दीपू रै विचारा मे लाय लगा दी ही। वो घणो ई बोल्यो हो इण बात री परवाह किया बिना कै उणरी बाता मा री समझ मे आवै है के ना। वो आक्रोस मे बोलतोई जावतो जे मा चाय ठडी हुवण री घोसणा नी करती। पछै उवै अणबोलै ई चाय पी लीधी ही। उणनै कीक सावळ देख र मा बोली ही- बेटा। थू काई जाणै। भाग रा खेल घणा निराळा हुया करै।

भाग भाग भाग। -वो तकरीबण चीख पडयो हो।

दीपू रै मुख सू अबार पिण चीख निकळ जावै अर वा चालती फिलम बद। दीपू हेक झटकै सू उठ जावै। तन-मन मे काटा री कुळती घुभण मैसूस करै। ऊमण-दूमण हुयोडो चूफेर निजरा दौडावै यू ई। सडक रै पार डूगर ज्यू डीघी इमारता उणरो हासो करती लागै। दिस्टी घुमावै तो पार्क मे

कागद-कचरो बीणती निनकी छोर्‌या दीखै। ठैलै वाळा दीखै। प्रतिक्रिया मे दीपू रै माथै केई चितराम मडै अर केई मिटै।

दीपू रै दिल-दिमाग मे विचारा री खखाळी लूवा वावळी ज्यू भमरीजण लागै। ठेलै वाळै सू कोई पूछै कै वो ठेलो ई क्यू चलावै तो झट सू कैवैला कै भाग री बात है। जे पूछो कै वो सेठ कार मे क्यू घूमै तो पिण झट सू कैवैळा कै भाग री बात है। गरीब गरीब क्यू है- भाग सू। अमीर अमीर क्यू है- भाग सू। जिठै देखो लोग-बाग बस भाग री ई दुहाई दिया करै। दीपू नै दुख है कै लोग अमीरी-गरीबी री जडा री तपास क्यू नीं करै? सोसण अर भेद री छतर-छाया मे जथास्थिति नै क्यू पोखै?

दीपू री समझ मुजब अै हेक चोखी तरा थापित छळ है सपन्न लोगा रो। विपन्न तो बस आपरै खोटै भाग नै ई कोसता रैवै। वै अै नीं गोखै कै भागवादिता री काल्पनिक सत्ता कुण सिरजी? सत्ता अे हडी कै सगळा मन सू मानै। लोग आपरी सुविधा मुजब इयै सबद नै क्यू वापरै? अमीर आपरै कुत्ता नै दूध पावै अर गरीब रा टाबर दाणै-दाणै नै तरसता रैवै ओ खेल भाग रो कदै ई नीं हुय सकै। दीपू हाका कर-कर ओ कैवणो चावै पण सुणै कुण? उवैरी मा ई उणरी बात कद सुणी ही। कद मानी ही भाग रै खडण री अरथाऊ बाता।

अळेटयोडै दीपू माथै कोई उडती चिडी बीठ कर देवै। वो चमक'र उठै। हाथ माथै बीठ देख साफ करे अर पाछो आडो पड जावै। वो बारै सू बेखबर हुय माय सू जुडै तो उण घटणा वाळी फिलम फेरू चाल पडै। सुवै चाय पीवण रै उपरात मा याद दिलायो हो कै परसू बापू री बरसी है अर उण वास्तै जरूरी तइयारिया करणी है।

11832
26/10/2002

कई तइयारिया। दीपू पूछ्यो हो।

परसू बिरादरी खातिर जीमण री सगवड करणी है। साथै ई पचीस पडिता नै पिण नूत र पूजा-पाठ रो विधान कराणो है। - मा समझावती कैयो हो। उवै आपरी बात रो थोडो खुलासो पिण कर्‌यो।

इत्तो सारो क्यू? जीमण पाप-पुन्न अर दान-दिखणा आदि सगळा अध-विसवास है पाखड है अर पइसा री फिजूलखर्ची है।

कई कैयो? थन्नै अै अध-विसवास अर पाखड लागै? थू किसो बेटो है जिणनै बाप रै परलोक-सुख री कोई परवा ई कोनी। बेसरम थू काई बाप री आतमा री साति ई कोनी चावै? -मा रै तेवर मे बदळाव हो।

केहडी साति अर केहडो परलोक-सुख? आ सगळी बाता लोगा रै विसवास रै सागै खिलवाड री है पाखडिया रै गोरखधधै री है। बापू री आत्मा नै साति काई पाखडिया रो ओझरो भरण सू मिळैला। बिरादरी रै भरियोडै पेट मे लाडू-पूडी दूसण सू काई बापू रो परलोक सुधर जावैला? दीपू कै'र माथै सू उठग्यो हो।

मा क्रोध सू तमतमावण लागी ही। दीपू मा रो इसो रूप कदै ई कोनी देख्यो। मा रै मुख सू खीरा बरसण लागा हा- नासपीटा काई बक-बक करै? धरम-पुन्न माथै थारो कतई विसवास कोनी? काई बाप रै कारज में थारी थोडी ई आस्था कोनी? सिरधा राख नाजोगा। बाप रो कर्जो तो दीन-हीण पिण आपरै माथे कोनी राखै। मा री आवाज री तीखास तर-तर बधवा लागी ही।

है आस्था भी अर सिरधा भी। विसवास पिण पूरो राखू, पण साचै धरम मे। म्है सिराध जिसै पाखडी रिवाज रो तिरस्कार करू।

अरे कुळकलकी नास्तिक। थारो दोस कोनी म्हारा ई भाग फूटया है। मा माथो कूटण लागी ही।

मा SSSS। दीपू री चीख रै सागै मा रो रोवणो चालू हुयग्यो हो। नीलू अर पप्पी आ र मा सू चिपटग्या हा। मा नै रोवती देख र वै पण डुसका भरवा लागग्या हा। माहोल गमगीणो हुयग्यो हो। दीपू री समझ मे कोनी आ रैयो हो कै मा कुरीतिया सू क्यू चिपटी रैवणी चावै है। इसी काई बात है जिको वो मा नै नूवै विचारा रो पतियारो कोनी करा सक्यो। सामाजिक क्रान्ति रा अकुर यू बकरिया चर जासी उणनै बेरो कोनी हो।

ठीक है। थू थारी मनजाणी कर। म्हा म्हारी ओढस्या अर ताणस्या। बरसी रो सिराध तो होसी पकायत होसी। - मा आखरी फैसलो सुणायो हो अर फेर नीलू-पप्पी नै चिपकाय कडवा बोल उछाळती कमरै सू टुरगी। मा रै रोवणै रा सुर माय तक सुणीज रैया हा। वै जाणै उणरै तन-मन माथै चेटग्या हा। हेक सजायाफ्ता गुनैगार ज्यू वो घर सू बारै निकळग्यो हो।

सुवै रै गोधम रासै रो सुमरण कर दीपू रो मन खट्टो हुय जावै। कठै जावै काई करै इण गतातूळ मे वो नळ खनै जावै। नळ खोल मूडै माथै पाणी रा जोर सू छाटा मारण लागै। मारतो ई जावै। पाणी पीवा आयो हेक फेरीवाळो नी टोकतो तो बैरो नी कद ताई इया करतो ई रैतो। रूमाल सू मूडो पूछतो-पूछतो दीपू पार्क सू बारै निकळ जावै।

दीपू सुबै सू कई नी खायो हो। वो भूख मैसूस करै। मन दोरो हुवै के सोरो भूख तो टैमसर लाग्या ई करै। कुदरत रा काम तो नित नेम सू चालता रैवै। खोमचेवाळै सू दईबडा ले र खावै। दोनो नाळी मे फेक देवै। उणरो फैंकणो हुवै कै दो अधनगिया सूगला छोरा उण माथै झपट पडै। दीपू जोवै कै दोनू छोरा उण दोनै रा टुकडा कर घणै चाव सू चाटण लागा हा। दीपू उबकाई ज्यू मैसूसै। दीपू सोचै कै जे उण छोरा री गत री बात किणी सू ई करी जावै तो बोइज परम्परा सू चालतो जवाब मिळैला- छोरा रै भाग मे ओ ई लिख्योडो है। इण सोच रै सागै दीपू रा होठ हाफेई चीखै-

भाग! इण भाग सू कद पिंड छूटैला। दीपू नै दुख हुवै कै लोग ओ क्यू नीं गोखै कै गरीबी भाग री नी मिनख री देन है।

चालतै-चालतै दीपू नै मा-माया री याद आवै। वो जाणै कै इण तरा पलायण सू समस्यावा हल कोनी हुया करै। सामनो तो करणो ई पडै। लोक मानतावा रो पिण मोल हुवै समाज मे वै पिण चालै। कोरा सिद्धात ई कोनी चालै। कठै-कठै तो प्रेक्टिकल भी हुवणो चइजै। घणी ऊडी सोच रै उपरात दीपू नै लागै के जूना अर नवा रै बीच समझौते सू ई दुनियादारी चोखी तरा चाल सकै।

उणरा पग घर री तरफ चाल पडै। वो नी तो मा रो काळजो दुखाणो चावै अर नी आपरी आतमा रो गळो ई दाबणो चावै। दीपू सोचै कै अेहडी हालत मे बीच वाळै मारग री ई दरकार हुवै है।

थोडोक आगै बधै तो वो लाल कोठी मे देखै कै बरामदे मे बैठी थकी सेठाणी विलायती कुत्तै नै बिस्कुट खुवावै है। कुत्तो कीक खावै घणा बिगाडै। दीपू नै लागै के सेठाणी मासूम टाबरा रै मूडै रो ग्रास खोस र कुत्तै रै मूडै मे नाखै है। जे यानै बिस्कुट ई खुवावणा है तो किणी गरीब टाबर नै गोद मे ले र

खुवा सकै। वो सोचै कै अमीर लोग इया क्यू नीं अगेजै। दीपू व्यग में बोलै- ओ सेठाणी जी कुत्तै रो भाग जूठण चाटणियै छोरै नै सूप देवो।

दीपू भारी मन सू आगै बधतो रैवै। कद आजाद मैदान आ जावै ठा ई नी पडै। मैदान मे अजकाळै अकाळ री मार सू भूडा भागीजोडा गावरू लोगा रो डेरो। छोटा-मोटा सगळा जाणै हाडका रा पजर। भूख री जानलेवा घूमर। दाणै-दाणै नै मोहताज। दीपू सोचै - अकाळ लाइलाज क्यू है? जे इण लोगा नै पूछयो जावै तो सगळा अैई केवैला - किण नै दोस देवा म्हा लोगा रो भाग ई इस्योज है। दूजा री पिण टीप हुवेला - भूख-तिस इण लोगा रै भाग में मडिजियोडी है। आक्रोस मे दीपू रै होठा सू हाफेई बोल फूट पडै- भाग। भाग। भाग।

दीपू री मानता है कै दुरभिख मिनखा रो ई सिरजण है ओ नियति रो प्रकोप कतई कोनी। महात्मा गाधी पिण आइज कैयो हो। साधन-सगवडा रो सतुलित वितरण नी हुवण सू ई अैहडा हालात पैदा हुया करै।

दीपू रो मन नफरत सू भर जावै जद वो अै सोचै कै मोटी-मोटी हवेल्या रै ताळा जडया थका है अर अै लोग बळती लूवा मे आसरो सोधता तडफे है। धन्ना सेठा री तिजोरिया रो मूडो फिलमी अपसरावा रै कार्यक्रमा सारु खुल सकै पण भूखै पेटा नै भाडौ देवण नै नी। कुण जाणै है इण भूखा-तिरसा री जिनगाणी कठै सू सरू हुवै अर कठै जा र खलास हुय जावै। दीपू नै अैहडे ओछै समाज माथै घणी रीस आवै पण वो काई कर सकै। समाज मे बदळाव लाणो घणो दोरो काम। भाग री सत्ता भागणी ओजो काम।

दीपू मैदान री पगडडी माथै उतर आवै। पगडडी रै पागती गदो नाळो। नाळै रै आगै कच्ची बस्ती। साझ रो धुधळको घिरण लागै। अठै-बठै भूडो सिणगार कर्योडी दो-चार छोरया घूमती देखीजै- कमर मटकावती फीटी सान्या करती।

बाबू जी धणो फूठरो माल है। हेकदम फस्कलास। दीपू रै दोळै हो र हेक सूक्योडो आदमी होळैसीक फुस्फुसावै। वो आदमी जाणै कै साझ पडया पछी अठै आवणिया काई चावै है।

'केहडो माल? - दीपू कीक अचरज सू अर कीक रौब सू पूछै। आदमी सकपकीज जावै। पण उवैरो हेक साथी सीटी वजातो सो बोलै- साब रेट फगत पाच रिपिया है। इयैरी घरआळी फूठरी परी है साब।

'सरम कोनी आवै कमीणा। घर री लुगाई सू रडीपो करावै? पाप री कमाई माथे जीवणो चावै? काई आ ई थारी मरदानगी है? दीपू डाटतो कैवै। डाट आपरो असर करै।

'काई करू साब? घणी भागा-दौडी करी पण काम-धधै री कोई जुगाड कोनी व्ही। पछै काई करा। पुख्ता मायता रो छोटा भाई-बैना रो जीव तो पाळणो ई पडै। कैवत है-मरतो काई नीं करै। -आदमी गळगळी आख्या नै पूछण लागै।

दीपू कई कैवै उणसू पैलै ई वो मुड'र वईर हुय जावै स्यात दूजै गाहक री तलास में। दीपू थोडी ताळ वगनै ज्यू उवैरो जावणो देखतो रैवै फेर जोर सू उणनै हेलो पाडै। यो आदमी अपराधी ज्यू नाड नीची किया सामै आय ऊभ जावै चुपचाप। दीपू पाच रो हेक नोट उणरै हाथ मे थमावै अर लाम्या डग भरतो उठै सू बूवो जावै। वो खुसी रो अैसास करै कै आज कम सू कम हेक नारी आप रै सत्त रो भूडो सौदो करया सू तो बची। पण दूजै ई छिण दुखी हुवै कै इण सू काई हुवैला? मैअे तो ऊठ रे मूडै मे जीरो पिण कोनी।

दीपू सोचतो जावै कै भूख काई नी करावै? इण मिनखा मे निस्चै ई केई अैहडा होसी जिको भूख रै हाथा बिकग्या होसी। अैहडी कई लुगाया होसी जिणरो सत्त भूख री होळी मे स्वाहा हुयग्यो होसी। भूख ई सगळी बुराइया री जड है। भूख रो गोभड भागण सू ई समाज मे सोरप रो विगसाव होसी। इयै रै वास्तै भाग री जागा करम माथे विसवास करणो पडसी। भाग री धारणा मिटसी तो ई करम री हुळस आपरो रग दिखासी।

सायरन री आवाज सू दीपू चौकै। दीपू जाणे कै सायरन रात री आठ बज्या बाजै है। वो आपरी चाल तेज करै। चालतै-चालतै अचाणचक उणरै दिमाग मे हेक विचार चोच मारै। क्यू नी सिराध रै कारज मे बिरामणा अर बिरादरी नै जीमावण रै बजाय इण गरीब अर मजबूर लोगा नै जीमाया जावै। कम सू कम हेक दिन तो अै लोग बुराइया सू बच सकैला। भूखा री भूख मिटावण सू बधीक पुन्न काई हुय सकै।

दीपू नै पूरो पतियारो हुवण लागै कै मा पिण इण बात नै अवस मान जासी। वा तो बापू रो बरसी सिराध ई तो करणो चावै। सिराध होसी पण उणरो रूप दूजो होसी। मा री आस्था-सिरधा कायम रैसी पण उणानै चौळो बदळणो पडसी। परम्परावा मे नूवा रग भरणा ई आज रै समै री दरकार है। वो सोचै कै बदळाव तो धीमै-धीमै आवतो आसी। रितु आया ई फळ उगै।

दीपू प्रेक्टीकल हुवण लागै। वो गोख लेवै कै लोगा री अणमेळू पारपरिक आस्थावा अर विसवासा माथै ओ काओ क चोट करण सू कोई फायदो कोनी हुवै पण सबधा मे तेड आवण रो पूरो खतरो हुय सकै। दीपू नै अैसास हुवै कै समाज मे नूवा मान नूवा मूल्य घणी समझदारी सू थापित करणा पडसी। मा जिसा लोगा मे रातू रात बदळाव कोनी आ सकै। समझोता रो मारग झाल'र लक्ष्य ताई पुगणो पडसी। दीपू मा रै वास्तै कैवै - दो पाडा थू भर दो पाडा म्है भरू।

दीपू नै जाणै नूवो मारग लाधै। वो खुद नै घणो हळको मैसूस करवा लागै। सोचै कै अबार तो आस्था-सिरधा रा रग बदळणा है। आगलो कदम होसी आस्थावा मे आमूल बदळाव रो। वो खाथो-खाथो चालतो घरा पूगै। मा चौकै मे ही। छुटका जीम रैया हा।

मा बापू रो सिराध परसू होसी। जरूर होसी। नीलू रै खन्नै बैठ'र दीपू कैवै।

काई कैयो सिराध होसी। वाह बेटा म्हारो जीव सोरो हुयो। मा रै उदास मूडै माथै चमक आय जावै।

पण मा म्हारी हेक सर्त है।

केहडी सर्त? -मा थाळी परोसती रुक जावै।

म्है जिणरै वास्तै कैवूला उणनै ई नूतो देवणो पडसी।

मा री सास मे सास आवै। हाथ पाछा हरकत मे आवै। बोलै- म्हारो तो सिराध रै कारज सू ई मतलब है। कुण जीमै अर कुण नई म्हनै काई। लै बता कुण नै नूतणा है?

भूखा गरीबा नै। जीमण सारू आसन माथै बैठतो दीपू कैवै।

भूखा गरीबा नै। - मा अचूभो करै।

'हाँ माँ भूखा अर लाचार गरीबा नै जीमावण मे ई साचो पुन्न है। उणांरै अतस सू निकळयोडी आसीसा बापू री आतमा ने चिर साति देसी। मा रा हाथ पकड'र वो आगै कैवै- मा म्हारी बात मान लै। दीपू मा रै हाथा माथै मत्थो टेक देवै।

दीपू नै छाती सू चिपका र मा बोलै- जरूर जरूर बेटा थू आज घणी मैताऊ बात करी है। लाचार भूखा नै ई जीमावण मे साचो पुन्न है। दीपू पाछो आसण माथै बैठै तो वा बोलै- जीम बेटा जीम जी सोरो कर जीम। म्है आज धरम रो साचो मरम समझगी रे।

दीपू आज घणो राजी है। उवैनै साव लखावै है कै मा रै माय बदळाव सारू जमीन तइयार हुयगी है। आस्था-सिरधा रै नवै रग-रूप रा बीज अवस जडा पकडसी।

अबै तो दीपू रा बोल मा पिण बोलै है - आस्था हुवै भला सिरधा जुग रै उन्माण ई उणरो रग-रूप हुवणो चइजै।

□□□

हार-जीत

आखा सात दिन हुयग्या है। ताव बनवारी बाबू रो पिंड ई कोनी छोड्यो। अधखड बूढो सरीर अर पछै पेट सारू काम री मार। आराम करवा री उमर मे रात-दिन पूदणो पण भूख रा गोडा नीं भगै। पत्रकार री आमद ई किती। फेर ईमानदार पत्रकार रै खातै कोरा रोमा ई मडीजै। सच्चाई री उकरास घी री गळगळी बाटी कोनी खुवाडै। आ तो बस मादगी रा ई माळी पाना चैपै। अभाया री पीड नै नूतै।

भूख सगळा सू मोटो रोग। ताव जुखाम जिस्या छोटा-निनका रोगडा तो उणरै असवाडै-पसवाडै घूमर ई घालता फिरै। खैराती अस्पताल री धोळी मिट्टी री सुवाद वाळी चीकणी गोळया लायण ताव सू किताक बाथेडा लेय सकै। फेर इणरी कई गारटी कै आ गोळया असली ई हुया करै। पण लोठो ताव जरूर असली है। बनवारी बाबू नै हेक हफतै मे ई माचो झलाय दीधो। उठण सू काबू जाणै हाथ-पग जूडीजग्या व्है। पासो फोरै कै करवट बदळै पीड सू जाणै प्राण ई निसरै।

मालती ओ मालती। -बनवारी बाबू पासो फोरता पैला दात भींच टसक्या अर फेर होळैसीक रडक्या। मालती उणरी घरआळी सुण्यो कोनी। बापडी सुणती भी किया। वा तो डागळै बैठी गोबर री थेपडिया थेपती ही। औ रोज रो काम हो उणरो। रोज रात री वा हाथ मे तगारी लिया गळी-गळी भटका खाती अर गोबर भेळौ किया करती। थेपडिया थापती अर बेचती। थोडी-घणी आमद कर गिरस्थी नै सायरो देती। पेट नै पूरो भाडो मिळ जावै इण जोगा बनवारी बाबू यानी जोगीसा अबै कठै रैया। लावण रै दिना मे भी

इतरोज लावता जिणसू जीव चाल सकै। अबै थाक्योडी लेखणी कितोक पूर सकै।

बनवारी बाबू वर्तमान नै पण भलीतरा नी जोयो वो भविस री किसतर सोच सकता। उया आ बात कोनी अंगेजी कै भविस पण कदै वर्तमान बण साम्है आ'र उभ जासी अर कैसी कै ना थू म्हनै सवार्‌यो अर ना म्हू थानै सवारूं। जोगीसा कद सोच्यो हो कै उणरी टेताळू नै यू थेपडिया थापणी पडसी।

बनवारी बाबू मालती नै दो-चार हेला फेर दिया पण वो ठिकाणैसर पूग्या कोनी। उथलै री उडीक मे उवा अठै-वठै निजरा घुमाई। मालती नीं दीखी तो समझग्या कै वा डागळै माथै थेपडिया मे अळूजियोडी होसी। पण अबै तो आवणो चईजै। तकियै नै थोडो ऊचो कर बैठण री कोसिस करता बनवारी बाबू पूरी ताकत रै सागै दडूक्या- मालती ओ मालती। आगै कीं बोलै उणसू पैला ई खासी मे गूथीजण लाग्या। मालती रै काना मे हेलै री तो कोनी पण खासी री खोखाट अवस पडगी। वा जाणती ही कै रोगी इण सकेत सू पिण बुलाया करै। वा उठी गोबर रा हाथ धोया अर साडी सू पूछती-पूछती नीचै उतरी। जोगीसा हालताई खासी रै सागै गुथमगुथी मे लाग्योडा हा।

'लो पाणी पी लो। खासी थम जासी। उठो अै लो पाणी। -हेक हाथ मे पाणी भरी गिलास लियोडी मालती दूजै हाथ सू जोगीसा नै उठावती कैयो। जोगीसा टसकता उठया पण खासी री खोखाट अजू चालू ही। उणरो मूडो ताबावरणो हुयग्यो हो। आख्या सू पाणी री बूदा पिण टपकण लागी ही। मालती आपरी साडी रै पल्लै सू उणरी आख्या पूछी। सायरो दे र टेकै सू बैठाया। खुद पाणी पायो। पाणी रा दो चार गुटका लिया पछै खासी रो दौर कींक हळको पड्‌यो।

जोगीसा री आ हालत देख र मालती नै लखायो कै सारी उमर सुभिमान अर धाकडपणै री जूण जिवणियो आज आपरी लारली उमर मे कितो दीन-हीण सो लागै है। अभावा री भूडी मार सू बधीक लोगा रै बौवार री मार सू सरीर रो नक्सो ई बदळग्यो है। आख्या जाणै ऊडी खाई। हाडका गिणल्यो बिना हाथ लगाया ई। मालती सोचण लागी कै जद ताई आदमी मे जूझण री सगति हुवै क्राति पैदा करण री ऊर्जा हुवै तो लोग-बाग उवैनै सिर माथै उचाय लेवै पण जद वो रीतो हुय जावै तो लोग-बाग उवैनै जोगीसा जिसी हालत मे क्यू नाख

देवै। जठै कोरी भूख हुवै रोग-पीडा हुवै चुभन हुवै अर हुवै अभावा रो हेकछतर राज।

आदमी सगळा दुख झेल सकै सगळी पीड भोग सकै पण अपणायत रो अभाव विसवास री सूनवाड अर उपेक्षा रो वोवार कोनी सह सकै। अै सगळा मिळ मिनख नै भाग नाखै। किरचा-किरचा कर तोड नाखै उणरी सखसियत नै। मालती जोगीसा री तरफ जोयो। वा नै अैसास हुवण लागो कै जोगीसा री आख्या मे पस्चाताप रा रग घुसपैठ करवा सारू उतारू हुय रैया है। उवानै पछतावो हो भविस नै हळको समझण रो। मालती नै अभावा री भठी मे झोखण रो। दुख हो दुनियादारी नी सीखण रो।

मालती री आख्या री कोर सू ठा नीं कद पाणी री दो-चार छाटा टपकगी। जोगीसा यानी बनवारी बाबू बगना ज्यू हुयोडा उण टपकण नै देखता रैया। हेक लाम्बो निसासो नाख र आख्या मीच लीधी। फेर रुक-रुक'र बोल्या- मालती म्है थनै काई सुख दियो। उमर सारी थै रोमा ई रोमा देख्या। नी मनचायो खावण नै अर नी ढग रो पैरण नै। दुखा रै मेळै मे थारै हूस री थारै अरमाना री गाठडी ई लुटगी रे। म्है कसूरवार हू थारो इसो कसूरवार जिको माफी जोगो पिण कोनी। मालती म्हनै माफ करजै माफ करजै। यू कैता-कैता बनवारी बाबू डुसकै भरीजग्या।

साडी रै पल्लै सू उणरा आसू पूछती मालती धीजै रै सुर मे कह्यो- 'ना रे ना जोगीसा म्है घणी सुखी हू। म्हारै जिसो सुख किताक पावै। हेक नामी-गिरामी पत्रकार री लुगाई हुवण रो सुख सरगा नै सरमावै है। आप जी छोटो ना करो जोगीसा। म्हू घणी सुखी हूँ। सुख कोई सगवडा रो मोहताज हुवै? सुख प्रतख कोनी दिखै फगत मैसूस करीजै। म्है आपरै साथै सू निहाळ हुयगी हूँ। दुख तो करिया ही हुवै। म्हारै किस्यो दुख। म्हारो सुख म्हारी सोरप तो बस आप ई हो।

मालती जोगीसा रै सीनै सू चिपकगी। जोगीसा पछै की नीं बोल्या। उणनै पतियारो हो कै मालती हियै सू बोलै फगत मन राखण नै अैहडी बाता नीं किया करै। जोगीसा रा पछतावो कीक हळको पडै।

वो मालती री पूठ माथै दुलार रो हाथ फेरवा लागा। मालती पण चुपचाप चिपकी रैयी। बनवारी बाबू उर्फ जोगीसा सोचण लागा कै मालती रै त्याग रै

आगै उणरो त्याग उणरो वर्चस्व उणरो जीवण पिण कित्तो छोटो कित्तो बावनियो सो दीखै। वो आपरै सिद्धाता री खातिर लगी-लगाई आराम री नौकरी नै लात मार दीधी। गिरस्थी अर टाबरा री परवा किया बिना घरै आ र बैठग्या हा पण मालती अलफ रो बे तक कोनी कैयो। उल्टो हौसलो ई वधायो हो। सुतन्त्र लेखन रै मारग घाल्यो हो।

मालती उठणो चायो पण बनवारी बाबू हेत रै उफाण मे वानै पाछी भीच लीधी। अचाणचक उवारी निजर मालती रै केशा मे चिपक्योडै भुरट माथै पडी। भुरट काढयो अर उणनै कुचरता फेर विचारा मे गुमग्या। समाज मे भुरटा री किती भरमार है। चिपकै अर चोभा मारै।

अेकर अखबार रो मालिक वारै आदर्सा रो सौदो करवा घरा आयो हो। फूला मे भुरट ई तो लायो हो। उवै केई प्रलोभन दिया ऊच-नीच बताई अर छेवट गरीबी अर अभावा रा भूण्डा चितराम खींच'र मौज री जिनगाणी रा हरिया बाग दिखाया हा। बनवारी बाबू रै मूडै रो सुवाद अै सोच र खाटो हुयग्यो कै वो तो स्यात गिरस्थी री नाजोगी हालत देख मारग सू डिग जाता अर भुरटा सू बींधीज जाता। पण रग है मालती नै जिको प्रताप रै वास्तै प्रिथीराज राठौड री तरै बचावण नै आयगी। अेकर पातल अर पीथळ री प्राण फूकणी गाथा बनवारी बाबू री आख्या रै आगै साकार हुयगी।

थू नीं हुवती तो म्हारो ईमान ई खडित हुय जातो। म्है बिक जातो मालती। म्हारो वजूद म्हारी पिछाण अर म्हारी चोखी कमाई सै लुट जाती। बनवारी बाबू रै होठा सू हाफेई सबद फूटया।

'रोज-रोज रो गागरो फेर चालू, क्यू कैवो लागै थारो जीव आज सोरो कोनी दीसै। चाय बणा र लाऊ। मालती झटाक सू उठगी। बनवारी बाबू रोक नीं सक्या। वै मालती नै जावती देखता रैया। मालती चाय बणावन सारू रसोई में बडगी।

बनवारी बाबू सोचण लागा कै सेठजी मालती नै ओळखण मे भारी भूल करी ही। सेठजी चावता कै जोगीसा आपरी कलम सू उणरा कळक मेटै। कूड लिख-लिख सेठजी नै अवतार बणावै। इण सारू धन रो लोभ लाया हा। आम आदमी ज्यू सेठजी पिण ओ ई समझता रैया होसी कै लुगाया रो अडिगपणो पाणी रै बुलबुलै जिसो। पण मालती तो हिमाळै नै लारै नाखै जिसी। बनवारी

बाबू तो सेठजी री सगळी बाता साभळ र कैय दीधो हो कै सोचाला। पण मालती तो अेक ई छिन मे निरणै ले र उकेळ दीधो हो-

सोचाला ! काई सोचाला किणरो सोचाला। सेठजी म्हा सोच लीधो है। थै अठै सू जावो परा नींतर थानै बारणो बतावणो पडसी। थारै चादी रै टुकडा सू, थारी आ कागजा री गड्डी सू म्हा लोगा री तपस्या म्हा लोगा रो ईमान घणो-घणो भारी है। थै तोल कोनी सको। जोगीसा री लेखनी सदीव साच री साख भरती रेवैला। इयै सोच सू ई बनवारी बाबू रै बीमार मूडै माथै लूणठी चमक आयगी। आभार सू हीवडो भरीजग्यो।

बनवारी बाबू हरमेस दुविधा मे रैता। घर मे नित-नित वधतो दोरप उणरै हिय मे टीस जगावतो। बेली- सगी व्यग सू वीधता- घर मे भूख मुआजी घूमर घालै बनवारी बाबू कोरी अकडाई म चालै। इण अकडाई री ऊर्जा ही मालती। उणरी सारथक भोमका देख ई बनवारी बाबू मोकै-बेमोकै कैया करता- नारी बिना पुरुस अधूरो हुवै। नारी साथ दै तो जीवण सुधरै नारी मुख मोडै तो जीवण बिगडै। बनवारी बाबू सोच री अळूज मे ई माथो धूणता ठेठ ऊडास सू बोल्या- निस्चै ई नारी थू महान है।

मालती चाय ले र आई। बनवारी बाबू उठ र चाय पीवण लागा। मालती खनै बैठगी। चाय री चुसक्या रै सागै वै फेर विचारा मे कळीजण लागा। मालती री बाता सू कित्तो आणद मिल्यो हो। वाह! उणरा बोल अजा ताई ज्यू रा त्यू याद है। वा बोली ही- सेठजी आप अै कीकर मान बैठ्या कै जोगीसा रै ईमान हेक साचै पत्रकार री निस्ठा री भीता इतरी कमजोर होसी कै वो लालच रा हाथ लगाया ई दुड जासी। सेठजी इण बात री गाठ बाध लो चादी री पळपळाट करती चकाचौध मे म्हा लोग मारग भूलणिया कोनी। ओ कैता कैता मालती टेबल माथै धरयोडी सेठजी री नोटा री गड्डी बारणै खानी फगाय दी ही।

मालती थनै रग है। घणो रग। - बनवारी बाबू रै होठा सू आभार रो सुर होळेसीक फूट्यो। उवा चाय रो छेलो घूट लीधो मूडो पूछियो अर कप टेबल माथै राख्यो।

रोज-रोज इसी बाता क्यू करो। आच्छी कोनी लागै। म्हारी तो बस हेक ई हूस रैयी है- थारी जीत मे ई म्हारी जीत। मालती गळगळी हुय र बोली।

बनवारी बाबू थोड़ी हरकत करी टसक्या अर आख्या मीच लीधी। ओ देख मालती चिंता मे फुस्की- थारो जी तो सोरो है नीं? दवाई लाऊ काई? बनवारी बाबू मनाही मे माथो लोडता बोल्या- 'ना म्है सावळ हूं।

बनवारी बाबू बेचैनी मे मूडो मचकोळता माथै मे हाथ फिरावण लागा। जीत सबद उणरै मन माय तीखी हळचळ सिरजी। उण तीख री पीड मे सोचण लागै कै जीवण मे उणरी जीत हुई भी है? अथवा हार ई पानै पडी है।

मायली हळघळ अबै सबदा मे ढळवा लागी। मालती रै मूडै नै हाथा मे थाम अरदास रै भाव मे बोल्या - मालती ! म्है हार्‌यो के जीत्यो ओ फैसलो थारै ई हाथ है। लोगा रै फैसले सू म्हारो काई गिनो। भलाई सै म्हनै कई भी समझै। जे म्है जीत्यो हू तो थारै प्रताप सू अर जे हार्‌यो हू तो म्हारी करणी सू।

मालती 'काई करो कैती आपरै मूडै नै जोगीसा रै हाथा सू मुगत करायो। जोगीसा थोडा रुक्या अर फेर बोल्या- थारी होड कोनी मालती। मालती कई नीं बोली। बनवारी बाबू री छाती माथै मूडो टेक दीधो। बनवारी बाबू री बाथ रो कसाव तर-तर बधवा लागो। मालती विरोध कोनी कर्‌यो। उणनै भी तो यू आच्छो लाग रैयो हो। बाथ रै कसाव री हर सगळी नारिया नै हुया करै।

थोडी ताळ सरनाटो रैयो। दोनू ई चुप। चुपी नै तोडता बनवारी बाबू बोल्या- मालती म्है जीवण मे जीत्यो हू के हार्‌यो। साची बताजै। म्हनै कई ठा नीं पडै। उणरै मन माय वाइज धुकधुकी चालती ही।

मालती बोली- था कद हार्‌या हो। थारी हरमेस जीत हुई है। जीत आदमी दीठ हुआ करै सापेक्ष हुया करै। मालती जाणती कै जोगीसा औ ई सुणना चावै अर फेर उवै कोई गलत भी तो कोनी कैयो।

बनवारी बाबू नै पैला पूरो पतियारो कोनी हुवतो। वो हालताई ओ कोनी समझ सकिया कै जीवण जग मे उणारी जीत हुई के हार। कदै वानै लखावतो कै वो जीवन री जग जीत्या है अर कदै उणारो मन कैया करतो कै जीवण मे चूफेर हार ई हार मिळी है। पण अबै उवानै लाग्यो हो कै उवा जीवण री जग निस्चै ई जीती है। जीत उणरै सागै है। बनवारी बाबू ने इण बात रो सतोख

हुवण लागो कै उणरी जीत मे समाज रै गरीबा री जीत है। मालती हरखी कै जोगीसा सका-आसकावा रै भूडै जजाळ सू सुखाळी मुगति पाय लीधी है।

बनवारी बाबू जीत रै जोस री कणकणाट मे बोल्या- मालती जा चाय बणाय ला। फेर छिणिक रुक र बोल्या- 'दूध नीं हुवै तो चाय रो उकाळो ई बणाय ला। बनवारी बाबू क्यू नी उछळता? हार-जीत रै फैसलै मे उणनै जीत रो मनहरखाऊ तोहफे जो हासळ वियो हो।

ooo

पूरब-पच्छम

अकाळ! साचाणी काळ भयकर जानलेवो लगोतार चार बरसा सू। लोगा री बेचारगी छटपटाट अर टीसा-चीसा रा अलेखू बोलता चितराम माडतो अकाळ दुरभिख। अभावा सू तेड खायोडै अतस-पटल माथै भूख-तिरस रै घटक रगा सू ककाळा री जीवत प्रस्तुति। दुरभिख चितेरै री अद्‌भुत कला अनूठी सैली। चितेरै रो हर आगलो चितराम उणरी कला रा विगसाऊ रूप। चौथै साल री चौथी रचना तो बस सिरमौर कला री ऊचाइया नै परस करती। ठठ अतस री ऊडास मे हळचळ करती।

कलाकार कला री मजळ सोधै। पण मजळ कठै? कलाकार आपरो पूरो जीवण खपा देवै मगर मजळ री तलास पूरी कोनी हुवै। नी लाधै मजळ री ठौर। पण इण कला रै पारखुवा रा कैणो है कै दुरभिख आपरी पाचवी कृति तक आतो-आतो अवस ई मजळ माथै विराजमान होसी।

आ पाचवीं कृति चौथी सू बिल्कुल ई न्यारी होसी हेक नवलै रूप मे। पारखुवा रै कथणै मुजब इयै चितेरै री तूली तद आडी-अवळी चालती रैसी घालती रैसी। कोई रग बाकी नी रैवैला। फलक माथै होसी फगत रगा रो भूडो-कोझो कीच। अठै बठै सै जागा अळखावणी कीचड। कठै-कठै कोई फीका राता धब्बा जीव रै अेनाण मे। अैहडै चितराम रो काई नाव? स्यात अचितराम।

हेकलो हरखू ई क्यू, गाव रा सगळा मिनख लुगाया इण अचितराम री समावना सू बेवाकिफ कोनी। सगळा इयै ई आसका मे हेबतीजियोडा है कै रगा री कीच सै गटक जासी। सगळा कळीज जासी मूरत भी अमूरत पिण। गाववाळा चितेरै रो कई कर सकै? गडाळ मे भेळा हो र हरजस के प्रभु-भजन

स्यात चितेरै रो मन बटै अर तूली माथै उणरी पकड ढीली पड जावै। पण वो तो पसरतो जावै। उणरा हाथ लाम्बा हुवता जावै। तूली री जागा 'तूलो' बणतो दीखै। घणो कुचमादी घणो हुस्यार औ चितेरो। गजाळ मे अजकाळै घणी चरच है कै इयै चितेरै अबै दूजो फलक पण सोध लीधो है अळघै दाखणै छेत्र में। उठै पैलो चितराम मडीजणो सरू हुयग्यो है। पुख्तै चितरै रो ओ चितराम भी कित्तो जी याळणियो है।

मास्टरजी तो दूजे रूप मे समझायो हो कै उठै री हरियल पण अै सूखी-फाटी धरती माथै पैली दाण भूख-तिरस रो डराऊ ताडव मच्यो है। लोग बाग भी डायाचूक हुयोडा चीसा री ताळ माथै सागै ई नाचै कूदै अर प्राणा री भेट चडावै। हरखू चितेरै रै इयै चित्तर रो आपरै चितर सू मिलान करै। वो पैलो चितराम है रगा री वा चमक कठै जिको अठै है। अठै तो हाडका री खडबडाट है खलास हुवती सासा रो मजमो है। चितर मे बाधेयो लेती रगा री कीच है। कीक राता धब्बा हे तर-तर हळका पडता। हरखू पिण ओहडो हेक धब्बो ई तो है।

मास्टरजी बाच सुणावै दुरभिख री कला री उपलब्धिया अखबारा मे छप्योडी मोटै-मोटै हरफा मे हेक अजीब डराऊ अदाज मे। हरखू रग बिरगा चितराम जोवै है पत्र-पत्रिकावा रै आवरण माथै। ग्रामसेवक बतायो हो कै कलेक्टर साब री मैडम अैहडो ई हेक चितराम सोनलियै फ्रेम मे मडाय आपरै ड्राइगरूम मे सजाय राख्यो है। हरखू दुरभिख रा घणा ई चितराम घूर घूर जोवै पण उणमे उवैरो चितर कठै? हरखू सोचै खूद सू सुवाल करै कै मरुधरा रै फलक माथै चितेरै री चौथी कृति रो फोटू क्यू नी छपै? म्हारै चितराम रै ओंटया उपेक्षा क्यू? लोग क्यू नी जोवणो चावै इणनै?

गाधीजी कैया करता कै असली भारत तो गावा मे बसै। हरखू कैया करै अकाळ री सर्वोत्तम कला तो बालू प्रदेस मे बसै। कुदरत रै करडे सराप सू आ धरती चितेरै री फलक बणी है। ओहडै सोच नै कुण भागै? इण अबखाई सू मुगती किया। अकाळ चितर री ऊचाइया अणजोई क्यू? स्वारथ री द्रिस्टी अठै पिण अणदेखी री भींत ऊभी करै। गाववाळा काई करै? भगवान नै रीझावण सारू तप-धप करै। काई भगवान भी जाणै है कै सोरप री सगळी नवी जूनी

सगवडा सू विहूणी इण अकाळी दुनिया मे जिनगाणी कठै सू सरु हुवै है अर कठै जाय खतम हुवै है?

बठै अकाळ री मार है। लोग बिरछा रा पानडा तक पेट मे नाखै है। अखबारा-पत्रिकावा मे उणरा फोटू छपै है। उणनै देख स्वयभू अवतारी भगवाना अर युगला भगता री आख्या धारोला बरसावै है। मदिरा मे हरजस-अरदास तो मसीता मे दुआवा रो आलम। दुखी हरखू भी है। पण सोचै है कै बठै रा लोग किता भागवाळा है पेट नै भाडो देवा नै पानडा रो तो जुगाड है। मरुधरा मे धूड फाकण रै सिवा काई है? गडाळ मे रोज सुणीजै कै देस रै खूणै-खूणै सू हेक भाई दूजै भाई रै वास्तै धान मेलै। दवा-दारू अर कपडा आदि री जुगत करीजै। विलायत वाळा री दीठ मे फगत वो ई चितराम आयो है। उण धरती सू चितेरै नै निरवासित करवा री पूरी खेचळ पूरा जतन करीजै। चितेरो अठै आपरी मनजाणी करै पण कुण टोकै कुण रोकै।

कींक समझणिया पूछ लेवै कै थळी वाळा रै ओटया लोगा रै मन मे दरद क्यू नीं है। चितेरै रो ठावो क्यू नीं तूटै? अकाळ क्यू आडी लकीरा खीचै? उवारी जिनगाणिया रो कई कोई मोल कोनी? इणरो पडूतर कुण दै। जे कोई देवणो चावै तो काई देवै। जद किणी बात रो कोई पडूतर नीं लाधै तो वो करमा रो फळ कैवाइजै। हरखू अर उणरै हमसफरा नै इण बात सू थोडो धीजो मिळै कै हेक दिन री बात हुवै तो कोई सुणै भी रोज रो रोवणो कुण सुणै?

अठै भाग घणो मैताऊ गणीजै। भागवादिता रो इतो अैसाण तो अठै वियो है कै इयै लोगा नै जिनगाणी रो बोझो धीजै सू ढोवण रो होसलो दीधो है। जद कदै दूध मे उफाण आवै त्यारै भाग री बाता सीतळ पाणी री गरज साजै। पण लोगा कठै अगेज्यो कै अबै कींक मिनख भाग रै नाव सू अन्याव रच्या करै।

हरखू रै मन मे दूजा री गैळ 'उवा सू कोई ईरस्या कोनी पण ग्लानि जरूर है समाज रै पैमानै माथै। अफसोस है उण लोगा री सकडाई बाबत जिणनै अठै रा बोलता जीव मरिया थका लागै। जिणरा कान थळी री चीत्कारा री हाकळ नीं सुणै। सुणै भी किया चीत्कारा री तीखास तर-तर धीमी जो हुय रैयी है। हरखू गरब करै कै म्हा लोग जिनावरा तक सू अपणायत रा खा पण वै मिनखा सू दुराव राखै।

हर कोई जाणै कै अठै मिनखा-जिनावरा मे घणा रागीला सम्बन्ध हुवै है। आपसी हेत आपसी सायरो। जद ताई पसु जीवे मिनख नीं मरै। मिनख भी जद ताई बण सकै पसु नै नी मरण देवै। दुरभिख रै चितराम मे चारो कठै? पछै हालता-चालता जिनावरा री मौजूदगी कीकर हुवै?

चारो नी दनादन जिनावर मरै। रोटी-पाणी नी मिनख झटाझट मरै। जिनावर मरै तो हाडका बिकै। पूरब रो ठेकेदार गाडया भर लेजावै। वो हर साल आवै जाणै कै अठै हाडका रो कारखानो ई लाग्योडो हुवै। हरखू सोचै कै जिनावर मरै तो हाडका बिकै। मिनख मरै तो हाडका । वो खुद इ झुझळीजै आपरै अेहडै वेतुकै सुवाल माथै। जिनावरा रै हाडका सू बौपारी लाभ उठावै तो मिनखा रै हाडका सू लाभ कमावणिया सामै क्यू नीं आवै। अठै मिनखा रै हाडका रो पिण कारखानो चालू है।

चूलै नै जद अगनि रो परस कोनी तो बापडा हाडका अगनि री हर क्यूकर करे। अेकर पूरब रै ठेकेदार सू हरखू पूछ ई लेवै ओ बेतुको सुवाल अर लगै हाथ नूतो पण दे देवै मिनख-हाडका लेजावण रो। ठेकेदार हसै। उवै रा साथी भी हसै। हसताई जावै। हरखू बगनो ज्यू उवानै हेक टक जोवतो रैवै। सोचै कै अे लोग हसै क्यू? उवै कोई ठठो-मसखरी करी है के कोई नवरी बात कैय दी है? अनाज अर पाणी रै भयकर अभावा मे लोग-बाग आपरै प्राणा नै किताक बाध र राख सकैला। तर-तर झीणी हुवती चामडै री गोथली फाटै ई हाडका पिण बिखरै ई।

वीस कोस री मे हेक ई साठीको तळो है- राणी तळो। पाणी घट घट'र फगत तीन चार आगुळ। बाकी रा कुआ-वावडी कद रा बूरीजग्या। घर दीठ हेक घडो पाणी मिळ जावै तो समझो न्याळ। हेक घडो तीन चार दिना ताई परवार री जिनगाणी सभाळै। पूरब (थळी रै पूरब मे आयोडो इलाको) रा लोग घी नै भी यू कोनी वापरता व्हैला ज्यू अठै पाणी बापरीजै।

हरखू केई वार बतावै कै अेकर पूरबियै ठेकेदार रै न्हावण सारू पाणी री हेक बाल्टी रो जुगाड सगळी बस्ती मे घूम्या पछी चदै सू वियो हो। चदै में पाणी री बात जद नायब साब सू करीजी ही तो वो हस्या जरूर हा पण वो मरम रै पचडै मे क्यू खपै? नीं न्हावणिया गावरुवा री अळखावणी देहगध सू आफतिजियोडो ठेकेदार कदै उण सू न्हावण री बात करै तो खनै ऊभो हर

कोई आइज कैवै कै जद जलमिया तद न्हाया हा अर जद मरस्या तद न्हावाला के ना इणरी कोई ठा कोनी। ठेकेदार उण टैम पिण हस्यो हो अर हसतोई गयो हो। हरखू री समझ मे हालताई नी आयो उवै हासै रो अरथ उवै खीखाट रो मरम। पाणी रो मोल थळी रै पार रैवणिया काई जाणै।

हरखू नै चोखी तरा याद है वो आख्या देख्यो हादसो। मगू रो गीगो भूख-तिरस री जबरी मार सू छटपटातो-कुरळातो निढाळ हुयग्यो हो। निधणिकी धापू पाणी-पाणी री रट मे बावळी हुयगी। बिरादरी सारी बेबस। दूजा पिण मदद नै कोनी आया। काळ री अबखाई मे पिण ऊच-नीच रो गरब। तळै मे रैजो नीं आयो तो नीं ई आयो पण जमदूत तो आयग्या। गीगै री मा बापडी आपरै लाल नै आसुवा सू ई स्नाण कोनी करा सकी। नैणा रो पाणी भी तो कितोक बेवै आखिर तो सूखै इज।

हरखू नै गडाळ रै बारै धूड मे रळीजतो अखबार रो हेक टुकडो दीखै। मास्टरजी कैवै कै ग्रामसेवक जी जद सैर सू आवै तो वै अखबार रै कागद मे जरूरत री बसता लपेट लाया करै। हरखू यूज टुकडो उठा लेवै। टुकडै माथै रोटी जीम र फूठरै डायनिंग रूम रै नळ हेठै हाथ धोवतै किणी रईस रो फोटू छप्योडो हो। फोटू देखताई हरखू रा होठ हाफेई फडफडावै- 'कठै पाणी ई पाणी अणूतो ढुळै अर कठै दरसण ई दुरलभ। भगवान वो दिन कद आसी जद म्हा लोग पेट भर पाणी पी सकाला। म्हारो दरद लोग क्यू नी पिछाणै?

पिछाणै किया? - अै बोल मास्टरजी रा। हरखू रो बडबडावणो सुण मारग चालता गडाळ खानी आ जावै। हरखू रै हाथ सू अखबार रो वो टुकडो ले र देखता कैवै- हरखू जठै टूटी धुमाई अर पाणी री धारा छूटै वै लोग काई जाणै पाणी री बूद री कीमत। जठै होठ हिलै अर पकवाना रा थाळ हाजर हुवै वै लोग काई जाणै रोटी रै हेक सूखै टुकडै री कीमत। हरखू, पाणी री हेक-हेक बूद था लोगा रै वास्ते मसीहा हुय सकै पण उवारै वास्तै तो फगत दास ज्यू नाचीज है। हरखू भी मास्टरजी री बात नै आगळ बधातो कैवै कै उठै तो मौत सब सू मूगी है पण अठै तो मौत घणी सस्ती। अर फेर निसासो नाख रणकै- बिन पाणी सब सून।

हरखू जोया करै अेकाध परवार रोजाना पच्छम दिस काकण रै पार कूच करै। जावणियाँ मे असवाडै-पसवाडै री ढाणिया रा लोग पिण सामळ हुवै।

उणमे सू किणी नै भी पाछो आवतो कोनी देख्यो हरखू। लोग कैवै पच्छम में लुक र जावणो पडै। वो अपारो देस कोनी। पकडीज्या पछी जेल री काळ-कोटडी री हवा खावणी पडै है। हरखू नै पैला घणो अचूमो वियो हो। टावरपणै मामै रे सागै किती वार उठीनै गयो हो। कदै गाडरा री खातर तो कदै ऊंठा री वार। उण टैम कोई नीं रोकतो। अबै क्यू?

हरखू नै पैलीपोत वर्दीधारी इणरो अैसास करायो हो कै पच्छम बद है अर पूरब खुलो। सगळा जाणग्या हा पण हरखू रोजीना देखै- पच्छम बद है लोग बराबर जावै है। पूरब खुलो है पण कोई नीं जावै। मास्टरजी कैवै कै आ गैलापणो है। भारी गुनैगारी है। पूरब अपारो देस है। लोग सुणावै- पच्छम में रोटी है पाणी है सोवणा सुपना है। हरखू पूछै- पूरब खुलो है काई उठै रोटी-पाणी कोनी? पूरब क्यू नी तेडै म्हा लोगा नै। मास्टरजी मून धार लेवै।

हरखू याद करै दुखन री वैवा बाता जिकी वो पच्छम री जातरा कर पाछो आयो जद सुणाई ही। वो बतावतो कै अठै तो घास-फूस नसीब कोनी पण उठै तो धाप र गेहू रा थेपला खावो। घी-दूध रा तो जाणै नाळा ई बेवै। हरखू उणरी बाता रो प्रमाण भी देख लेवै। दुखन मे कितो फरक लखावै। गयो जद केहडो मचहीणो खूसट लागतो पण तीन मइना मे ई जबर जवान सो फूठरो लागण लाग्यो। गाववाळा रै वास्तै दुखन देवदूत बण जावै। लोगा मे पच्छम जावण री हूस तर-तर बधती जावै। प्रतख प्रमाण आगळ मास्टरजी री बोलती जाणै नगाडा मे तूती री आवाज बणै।

पच्छम रै मारग माथै पगरज रा बादळिया रोज-रोज गैरा हुवै। हरखू रै मानस पटल माथै क्यारै पच्छम रो नक्सो बणै पण मास्टरजी री अरथाऊ बाता उण पर गीलो पोचो फेर देवै। मास्टरजी सगळा नै अखराय कैवै कै पच्छम वाळा लालच देय कोझो खेल रमणो चावै। उठै तो घर रा टाबर भूखा मरै पण दूजा नै सीरो जीमावै। मास्टरजी री थोडा सुणै घणा अणसुणी करै। हरखू रै हियै मास्टरजी री बाता घणी ऊडी उतरती जावै।

हेक दिन हरखू पूरब रै मारग माथै धूडाळी खे वाळा बादळिया नै घूमरा लेता जोवै दूजा ई जोवै। सगळा अचूभो करै। अैहडो दरसाव तो कदै-कदै जोवा मिळै लोग आगळया माथे गिणा सकै। हाडका रो ठेकेदार इतो बेगो

पाछो नीं आ सकै। नायब साब रै दौरै रो कोई सनेसो आयो कोनी। तो पछै कुण आवै। सगळा अटकळिया टोरा ठोकै।

लोगा री जिज्ञासा बधती देख मास्टर जी इसारो करै। हरखू गडाळ रै डागळै चड जीप री सूचना देवै। थोडीक ताळ मे लोगा रै घेरै मे जीप आय रुकै। खादी रा धोती-कुरता पैर्‌या दो जणा उणसू उतरै। माथै पै गाधी टोपी अर बगल मे लटकतो थैलो। मूडै लूठी चमक सफर री थाक सू पण मादी नी पडवा वाळी। मास्टरजी लोगा नै गडाळ मे बैठावै। उणसू बात कर आगमन रो मकसद समझै। फेर आयोडा रै बारै मे कीक बतावै उवारी ओळख देवै। बतावै कै अचारज जी सैर रा मोटा नेता है।

अचारज जी प्रवचन करै। घणी बाता करै। घणी मिसाला देवै। जोसीलै सुर मे कैवै कै पच्छम अपारो दुस्मी है वो अपारी आजादी नै नस्ट करणी चावै। अपारी धरती दाबणी चावै। अपारै एकै मे फूट घालण री भूडी मन्सा राखै है वो। आ धरती अपा सारा री जलमभोम है। जलमभोम री रिच्छा करणी सगळा रो पैलो फरज हुवणो चइजै। लोभ-लालच सू दुस्मी बरगळावण री पूरी कोसिस करैला पण अपानै कस्टा मे अवखाया व अभावा मे जी र तिरगै रो मान राखणो है।

हरखू रै सागै दूजा केई जणा रै पल्लै थोडो-घणो जरूर पडै। वै इतरो तो समझ लेवै कै पच्छम उण लोगा नै क्यू नूतै। क्यू घी-खाड रा जीमण जिमावै। हरखू हेक भावी आसका सू बेखाखो हुय जावै। लोगा नै बतायेडा सब्ज-बागा मे जलम लेता जैरीला फूल निस्चै ई जानलेवा बण जावैला। हणा घणकरै लोगा मे अेक लोठो होसलो तो है लडण रो बाथेडा लेवण रो। अजू अधारै मे दीयो जगावण री हूस बाकी है। पच्छम अै होसलो अर आ हूस रैवण देसी? हरखू नै लागै कै दुखन देवदूत नीं काळदूत है।

हरखू पच्छम नीं जावण री पक्की धार लेवै। लाडेसर मोती दूध रै अभाव मे दम तोड दियो तो दुखन कैयो पच्छम बूवो जा। पण उणरो उथलो हो दूध सू देस बडो हुया करै। काळजियै री कोर पेमली ताव री ज्वाला मे स्वाहा हुयगी तो दुखन कूक्यो पच्छम बूवो जा। पण वो हुका र भरी दवा सू देस बडो हुया करै। लाडण बैण रोटी-पाणी रै टोटै मे मादी पडगी तो दुखन चीख्यो पच्छम बूवो जा। पण वो सागीडी दहाड मारी ही कै पाणी सू देस बडो हुया करै।

हरखू मास्टरजी री कैयोडी बार-बार कैवै कै पच्छम री पगडडिया मेट नाखो। ओ जैरीली नागणिया डस लेसी सगळा नै। पूरबी इलाको अपारो है। पूरब मे भाग री लकीरा खींचो। पूरब अपारो है। पूरब मे ई आपरी भावी रा दरसण करो। पूरब री सूखी रोटी पण पच्छम रै हलुवै सू घणी सुवाद होसी।

हरखू री बात नै घणी वजनदार बणावता नाथूबा पण कैवै कै अचारज जी पच्छम री नीयत रो खुलासो करता हेक अरथाऊ कैवत बताई ही मतळब री मनवार रोज जीमावै चूरमो। हरखू रै साथै लोगा नै पिण विसवास हुवै है कै पच्छम चूरमो जीमा र निस्चै ई जावणिया नै आतक री भठी मे झोंक देसी। मास्टरजी पिण कैया करै कै सीमा पार मिनखपणो हाहाकार करै है। प्रेम दया री जागा हिंसा री पाटी पढाइजै। पूरब रो लोकतत्र तो आपसी भाइचारै री सौरम ई बिखेरै है। मास्टरजी घर-घर जा र विणती करै कै आपरी जमीन नै छोड मत जाओ अर जे जावणो जरूरी ई समझो तो पूरब री दिस पकडो।

फेर ई हरखू देखै- लोग पच्छम दिस ई लुक-छिप पलाण कसै। मास्टरजी कैवै वो पिण कैवै कीक दूजा भी कैवै- पूरब सू पाणी आसी। रोटी आसी। जावणिया कैवै- आ सगळी परिया री बाता है। हरखू री आख्या पूरब सामी आस री निजरा घुमाया करै। बिलखता भूखा टाबरा नै आसूडी लोरी रो धीजो देवै- पूरब सू सूरज आवैला रोटी-पाणी लावैला।

दिन बीतै बीतता रैवै। पण रोटी-पाणी कठै आवै। उडीक री लाबी घडिया मे भी हरखू री आस मादी कोनी पडै। फगत हरखू ई नीं घणकरा दूजा पिण अबै जाणै कै जनता रै राज मे जनता भूखा कोनी मर सकै। अणिया-गणिया रो पच्छम जावणो जारी रैवै। हरखू जिसा रो जीव घणो ई तडफै।

अधार घुप्प काळी रात अर आथूणी खखाळी हवा रा कुचमादी सूसाडा चालू है पण हरखू जिसा लोग छोटा-छोटा दीया सजोग र अधारै सू लडवा खातिर कमर कसै है। एकै री जबरी ओट बणा र कैवै है कै आथूणी हवा काई बिगाड देसी। फेर पूरब री सायता री उडीक भी तो है। कदै तो सोरप रो सूरज उगैला। कदै तो धोरा धरती हरियल चीर ओढैला। कदै तो पेट भर पाणी पीवाला। आस रो विसवास तर-तर बधै ई है।

□□□

म्है आऊ हूँ ।

पदमा जद सू घरै आई है उणरो जी सोरो कोनी दीखै। ऊमण-दूमण हुयोडी अठै-बठै फिरगट फेरा करै। नी बोलै अर नी बतळावै। बस चुपचाप फूकाराज करै। पलग माथै बैठै पण बेखाखी हुयोडी। यू लागतो जाणै उणरै मन मे कोई धुखणी सी चालै। नौकराणी ककू पिण समझ जावै कै डाक्टरनी बाई रै हियै मे आजै तर-तर बुझता खीरा माथै जरूर कोई उपला रो चूरो बुरक्यो है।

धुखणी रो दमघोटू धूवो आपरी सासा-उसासा माथै थेथडती अधगेली हुयोडी पदमा फटाक सू उठै अर फदाका मारती नीचै उतर आवै। लॉन मे जा'र हेक अजीब तरीकै सू चमेली रा फूल चूटण लागै। फूला सू दोनू मुठिया अणूती भरै। पाछी फटाफट कमरै मे आवै अर पलग माथै ऊँधी पड जावै। अळेटा लेती मुहडै माथै फूला नै फिरावै। फूल बिखरै तो हेक मुठी मे भेळा करै। मुठी मे दब्योडै फूला नै जोवती रोवण ढूकै। रोवै काई कोरी आख्या झरै। रोवण री हाक तो माय है। फूला नै होठा सू चिपाय र बोलै - था हुवो अर म्है बचू। फूला नै तकियै नीचै नाख मूडो पूछै अर आख्या मीच लेवै। सोच मे गतोळा लगावै। मन मे किता घडै किता भागै।

पदमा आपरै मन सू रमण री याद नै हमेसा-हमेसा रै वास्तै धोवणी चायती। काई वा ऐहडो कर सकी? ना वा जाणगी कै जवानपणै री प्रीत भुलावणी घणी दोरी। टैम-टैम माथै उणरै धोयोडै मन-आगणै उण छिणा रा पगलिया मड जाया करता जिको उवै रमण रै साथै बिताया हा। पण आज तो जाणै पदमा रै मन-आगणै यादा रो चीखळ ई चीखळ पसरग्यो। रमण नै जिण रूप मे आजै अस्पताल मे देख्यो हो उणरो जीव ई कापग्यो हो। अेकर तो वा थोडी सुध-बुध ई भूलगी ही पण झट ई आपै मे आयगी ही। ओ जूनी बाता री ओखद रो कमाल हो। रमण अबै उणरी जिनगाणी मे कठै?

पदमा रै अतस मे अस्पताल रो सीन पाछो उतर आवै। आउटडोर री डयूटी करण रै बाद जद पदमा वार्ड रै राउण्ड में ही तद नर्स बतायो हो कै इमरजेंसी मे हेक सीरियस केस आयो है। नर्स नै कींक भळाणा देती वा घणी वेगी ई इमरजेंसी वार्ड मे आई ही। वाड मे बडता ई हेक औरत रोवती उण खन्नै आई अर गिडगिडावती बोलण लागी ही- 'डाक्टर म्हारै भाई नै बचा दो। म्हैं आपरो ओसाण कदै नीं विसारूला। म्हारै भाई नै बचा दो डाक्टर। पदमा हेक हळकी-सी निजर उण औरत माथै नाखी ही। मूंडै मे कींक सैधापो लागो हो। पण पदमा इणरी गोख कोनी करी। अस्पताल में यू तो हुयाज करै। अठै तो डाक्टर रै सामै फगत रोगी ई मैताऊ हुया करै।

यादा रो सीगो लगूतार चालू है। पदमा बद आख्या सू उण घटणा री फिल्म रा सीन देखै है। वा लाम्बा डग भरती रोगी रै बैड खन्नै पूगी ही। रोगी नै जोवतै ई पदमा रो मूडो फेट खायग्यो। हट्टै-कट्टै रूपाळै रमण री इती बुरी गत। सगी साथी सगळा उणनै हीरो कैता पण अबै तो पूरो जीरो। पदमा खुद नै पिण अचरज हुवण लागो हो कै उवै मरियल रमण नै किया पिछाण लियो। स्यात आ पिछाण मन री आख्या करी ही।

पदमा रोगी री तपास करी। उण औरत सू केई बाता पूछी। फेर जूनियर डाक्टर री रिपोर्ट पण जोयी। वा समझगी ही कै रमण अधा-धूध दारू पी-पी आपरो लीवर पूरी तरै खराब कर नाख्यो है। आपरेसन जरूरी समझ उवै कींक भळाणा दी अर घरै टुरगी ही।

पदमा री आख्या झरणो कोनी छोडै। विचारा रै जाळ मे अळूजियोडी पदमा नै इणरी सुध ई कठै। वा सोचण लागै कै मन माय हाल ताई रमण ई रमण क्यू है? उणसू अबै काई हेत-पेत। काई गिनो। रमण सू जद लारलै केई बरसा सू कोई सम्बन्ध ई कोनी रैयो तो आज हिवडै मे यू हूक क्यू उठै है? पदमा मैसूस करै कै मनडै री माया समझ सू बारै हुया करै।

पदमा री सोच आगै बधै। उवै तो रमण सू सचै दिल सू प्यार करयो हो पण हरजाई कुण करी। रमण ई तो करी। पदमा रो जी खाटो हुवण लागै कै रमण उणरै सागै प्रेम रो नाटक रचातो रैयो। उणरी साची अर दूधा धोयी प्रीत रो उवै कोई मोल कोनी आक्यो? पदमा री समझ मे आज ताई आ बात कोनी आई कै उणमे अैहडी कई कमी ही जिको रमण दूजी छोरी री दुनिया मे रमण

लागो हो। रमण उणरै सुपना उणरै अरमाना सू खिलवाड क्यू करी? लुकणादाई रो भूडो खेल क्यू रमतो रैयो? पदमा सोचै है कै उवैरी सारी जिनगाणी धूड-धाणी करण वाळै रमण रै वास्तै आज उणरै मन मे अचाणचक पीड क्यू जागी है? क्यू मची है हिवडै मे हळचळ।

पदमा हेक ऊण्डी अमूझ मे बिध्योडी तडफण लागै। सिसकारा करती लाम्बा निसासा नाखै। ककू बारणै रै लारै ऊभी ही। डाक्टरनी बाई री इसी हालत देख वा भी कळपै। पदमा जद पासो फोरै तो कमरै मे आय चाय रो पूछै पण पदमा नकारै मे माथो लोड देवै। ककू थोडी ताळ जरूर ऊभी रैवै पण कई बोलण री हिम्मत कोनी करै। पछै बारै निकळ जावै। पदमा पलग माथै बिखरोडै फूला नै रीस मे मसळै अर कई सोच खीसै मे घाल देवै। पटकणी खावै अर मूडै नीचै तकियो ले र ऊधी पड जावै।

पदमा री सासा-धडकणा मे रमण। उणरै मन आगणै रमण ई रमण। बारै भी रमण अर माय भी रमण। मन रो मैलो कपटी रमण लार क्यू नीं छोडै? निरलज कुचमादी भावनावा री कोई कदर ई कोनी करी तो अबै अतस मे किसा माडणा माडै है।

पदमा नै याद आवै जूनी बाता। रमण कितो कुटिल हो कै उण घसमूडी छोरी रा फोटूई खींसै मे लिया फिरतो रैतो। पदमा री आख्या मे उण अभागै दिन रो चितर उतर आवै। रमण जाणतो हो कै उवैनै चमेली रा फूल घणा सुहावै। इण वास्तै जद भी मिलवा आतो खीसै मे चमेली रो फगत हेक फूल जरूर ले आतो। जद वा कैती कै उण री चीज कठै तो वो घणी मोहक मुद्रा में खीसै सू फूल काढतो अर राजसी अन्दाज मे उणनै पेस करतो।

उण अभागै दिन फूल रै सागै दो-तीन फोटू रमण रै खीसै सू निकळग्या। रमण फूल नै उण माथै फैक झटाक सू फोटूवा नै खीसै मे लुका दिया हा। पदमा रै मन मे सक रो कीडो जलम धार लीधो। जद सक रो कीडो मन माय जलमिया करै तो वो सै सू पैला सोच नै झटको दिया करै। भला-भला रो माथो ठणक जाया करै।

पदमा पण इण कीडै री मार सू किया बचती? उण रै विसवास रो रग हेकदम फीको पडण लागो। पदमा रमण सू फोटू बतावण रो कैयो। बतावण रै कैवण में काफी गभीरपणो हो पण रमण री समझ मे कोनी आयो। उवै

हसतै-हसतै लूण्ठै अदाज मे मना कर्‌यो हो। सक रो कीडो औरू हरकत मैं आयग्यो। पदमा फोटू हासळ करवा री जुगत विठावण लागी ही। रमण इणसू बेखबर हो। रमण नै बाता मे उळझा र पदमा झट सू उणरै खीसै सू फोटू काढ लीधा हा अर उठै सू झटाक सू उठ नाठण लागी ही। रमण अेकर डाबाचूक हुयोडो आ तोतकरासो देखतो रैयो कै अचाणचक पदमा रै कई हुयग्यो। पछै उणीज हालत मे हेला देवण लागो पण पदमा पाछी मुड जोयो तक कोनी। रमण कीकर समझ सकती पदमा री मन-मायली बात।

पदमा पासो फोरै। मायली धूखण रो धूवो ऊडै निसासै मे बारै नाखै। पीड मे कीडा ज्यू किळबिळावती या माथो धूणवा लागै अर पाछी ऊधी पड जावै। अै सोच उणरै काळजै मे ठडास पसरै कै उवै उण दिन प्रण कर लीधो हो कै वा रमण सू कदै ई कोई सबध नई राखैला। उणसू कोई गिनो ई कोनी साधैला। उणरो मूहडो पिण कोनी जोवैला। पण आज अस्पताल मे इता बरसा बाद रमण सू यू मिलणो हुय जासी उणनै उम्मीद कोनी ही।

रमण उण दिन रै बाद उणसू मिलवा री घणी कोसिस करी ही पण पदमा तो नी मिळवा रो पक्की धार लीधी ही। वा नीं मिळी तो नीज मिळी। रमण रै सामेळै सू बचवा खातिर पदमा उण सैर नै ई छोड दियो हो। आप री भणाई पूरी कर अठै डाक्टर बणगी। पण वा मन माय रमण री छब पूरी तरा मेट सकी?

पदमा आपरी आख्या नै रमण रै देखाव सू अवस दूर राख सकी पण मन नै कद बरज सकी कै रमण री यादा नै मत पाळ। मन नै बरज्यो तो हो पण उवै कदै पूरी मानी ही। रमण मन रै किणी खूणै मे लुक्योडो बैठो रैयो।

पदमा उठै। अलमारी खोल भूरो लिफाफो हाथ मे लेवै। इणमे ई वै फोटू हा। बारै निकाळ जोवै। रमण रै गळै मे हाथ घाल्या हसती छोरी रो फोटू। रमण रै सीनै सू चिपक्योडी छोरी रो फोटू। रमण रै गाल माथै चुम्मी लेती छोरी रो फोटू। पदमा रा होठ रीस मे फुस्फुसै- निरलज भूतणी।

पदमा जद कदै इण फोटुवा नै जोया करै उणरा होठ यूज फुस्फुसाया करै। वा फोटू ले र पाछी पलग माथै पसर जावै। सोचै कै इण कुलटा ई रमण नै इती भूडी हालत मे पुगायो है। उणनै विसवास हुवण लागो कै इण राखसण ई रमण रो रस लोही निचोड नाख्यो है अर उणनै मौत रै बारणै पोचायो है।

पदमा नै फोटूवाळी छोरी माथै घणी रीस आवण लागै। रीस मे ई फोटुवा नै खासी टैम तक जोवती रैवै। ओ कई अै तो वाइज छोरी है जिको अस्पताल मे रमण रै सागै ही। पदमा रो मन घिरणा सू भर जावै। छि छि किती कुलटा है। यार नै भाई कैयता इणनै कोई लाज-सरम कोनी आई। पवितर रिस्ता रो यू नाजायज वापरणी करता अैड़ी औरता री आतमा किरचा -किरचा क्यू नीं हुवै?

पदमा रै मन मे विसवास बैठण लागो कै रमण बेकसूर हो। सगळो कसूर इण फोटूवाळी छिनाळ रो ई हो जिकै आपरै रूप जाळ मे रमण नै बाध राख्यो हो। पदमा रोवण लागै। आसुवा सू मनमदिर माय थापित रमण री मूरत माथै जम्योडा धूड-जाळा साफ हुवण लागै। वा पिण रमण री पीड आपरै हीवडै मे मैसूस करण लागै। उणरै चेहरै माथै हेक हळकी चमक बिछ जावै। पदमा नै लागै जाणै सही मारग लाधग्यो है। उणरै अतस रा बोल अैलाण करै है कै रमण नै साजो करणो है अर उणसू गलती री माफी मागणी है।

दूजै दिन पदमा वेगी ई अस्पताल पुग जावै। सीधी इमरजेंसी वार्ड मे बडै। पण वा छोरी कोनी दीखै। रमण वाळे बैड खानी जोवै पण वो भी खाली हो। पदमा रै मूडै माथै घबराट रा अैनाण तर-तर बधता जावै। वा बगनी हुयोडी इया-उवा जोवण लागै। डयूटी वाळी नर्स डाक्टर री मन्सा समझ बतावै कै रातै आठ बज्या बैड नम्बर आठ रो मरीज सरग सिधारग्यो है। डाक्टर ब्यास घणी कोसिस करी पण मरीज नै कोनी बचा पाया।

'उणरी डेड बाडी कठै? पदमा पूछै।

'वा तो मरीज री बैन ले र गी।

बैन बैन ! किसी बैन? पदमा जोर सू दहाडै।

नर्स री समझ मे डाक्टर रा हाका कोनी आया। गलती तो कोई हुई कोनी। पछै खीज किण बात री। पदमा बेचैनी मे हाथ मसळती जावण नै मुडै तो नर्स हेक लिफाफो उणनै झलावती बतावै कै मरीज री बैन अै डाक्टर सारू दियो हो।

पदमा नर्स नै जावण रो इसारो करै। नर्स जावै पछै लिफाफो खोल र कागद काढै। देखै वा हेक चिठी ही छोटी सीक उण छोरी री लिख्योडी। पदमा पैली तो उणनै फाडण रो मन करै पछै ठा नीं काई सोच बाचण

लागै- पदमाजी म्है तो आपनै पिछाणगी ही। आप सू भेंट भी हुयगी पण म्हारो हेताळू भाई आपसू भेट कोनी कर सक्यो। घणा बरसा ताई आपनै उडीकतो रैयो। आपरो फोटू देख रोतो रैयो। म्हनै कैय राख्यो हो कै जे म्है नी रैवू तो आपरो फोटू आपनै पुगा देवू। उणनै दियोडै कोल मुजब फोटू लिफाफै मे राख्यो है लै लीजो। म्हारै भाई सू कोई गलती हुई हो उणरी म्है आप सू माफी मागू हूँ- अभागै भाई री अभागी बैन राधा।

पदमा लिफाफै सू फोटू निकाळै। अै वो ई फोटू हो जिको रमण रै बटुवै मे घाल्योडो रैतो। रमण कैयो करतो कै वो सुबै उठता ई सै सू पैला इण फोटू रा ई दरसण किया करै। फोटू रै लारै अेक चिट चिपक्योडी ही। पदमा चिट खोल र देखै। उण माथै रमण री लिख्योडी हेक ओळ ही- म्हारी पदमा म्हारी लाडेसर बेन रा फोटू घणा दाय आया होसी। पदमा इण ओळ नै केई बार बाचै। उणनै सगळी बाता अबै साफ-साफ दीखण लागै। फोटू वाळी छोरी रमण री बैन ई ही। वा खुद री निजरा मे खिरण लागै कै उबै भाई-बैन रै रिस्तै माथै । पदमा रै अतस सू बोल निसरिया - अररर म्है काई कीधो? अपराध बोध सू वा सकपकीजण लागै। मन माय स्यात सक रो कीडो आतमघात कर लेवै।

पदमा री सासा तेज हुय जावै। वा घडीक चिठी नै जोवै तो घडीक फोटू नै। हाफा-हाफ मे घडीक चिट बाचै। पसेव री बूदा अग-अग माथै उभर आवै। वा माथौ मकड मरीजा सारू राख्योडी बैच माथै बैठ जावै। वार्ड रा सगळा कामगार अचरज सू डाक्टर नै जोवण लागै। वो समझ कोनी सकै कै लिफाफै मे ऐहडो कई हो कै डाक्टर री इसी हालत हुयगी। कीक आपस मे पूछ-पाछ करण लागै कै डाक्टर रो उण रोगी सू काई सम्बन्ध हो।

पदमा तो वार्ड रै माहौल सू बेखबर है। अचाणचक वा जोर सू रोवण लागै। सगळा कर्मचारी उणरै पागती आ जावै। पूछै पण पदमा तो आपरीज मे डूब्योडी। नस झकझोरै तो उणरै मूडै सू निसरै- रमण म्हनै माफ करजै। बैना म्हने माफ करजै।

थोडी ताळ तो पदमा चुप रैवै। फेर उठण री नाकाम कोसिस करती चीखै- रमण म्है आऊँ हूँ। वा उठ तो कोनी सकी पण नर्स री गोदी मे अवस ढुळगी।

ooo

गुरांजी

जेठ रो उनाळियो मईनो। लूआळी लाय रा टोढा बळता दिन। पिंड तपातो अणखणो तावडो इसो कै जलम धारता ई आप रा कावळ रंग दिखावणा सरू कर देवै। ज्यूं-ज्यूं दिन चमकै तावडै रै सरूप री पळपळाट पण वधै। इण पळपळाट सूं जाणै लालयब खीरा रा किरचा बरसै। अैहडी जानलेवा चमकार में कुण चावै घर सूं बारै निकळणो। आप-आपरै दडबै मे छापल्योडा रैवणो चावै सगळा ई भला ई जिनावर हुवै भला पंख-पखेरू। पण मजबूरी मिनख री कद पूरी हुवण दै उणरी चाहना। तपतै तावडै काम मे जोतरोडा लाधै।

रोजी-रोटी री जुगाड सारू बळबळती किरणा री दोरी मार खावणी तो कींक गळै उतरै पण सेवा सूं रिटायर हैड मास्टर आलोकनाथ नै किसी मजबूरी ही। आलोकनाथ नै कुण कोनी देख्या तावडै मे रबडता पसेव सूं लथपथ। कदै आटै रो पीपो लिया तो कदै सब्जी रो थैलो उचाया। आराम करण री उमर मे उणरो यूं खटणो चरचा रो विसय तो बणै ई।

लोगा नै लखावण लागो कै गुराजी आलोकनाथ री जिनगाणी उणरै परवार मे निस्चै ई येअरथी हुयगी है। रिटायर काई विया वै तो पूरा गुलाम ई हुयग्या। उणरै रुतबै रा माळी पाना ई उतरग्या। उणरी मजबूरी साफ दीखै पण लोगा मजबूरी नै नियति रो नाव सूंप्यो। लोग कैया करता कै इणमे किणी रो दोस कोनी। गुराजी री जिनावरा सूं भूंडी जूण खोटै भाग रो ई फळ है। भागवादिता री चादर मे दुनियादारी रा खोटा बौवार ढकीज जाया करै।

गमला मे पाणी सींचणो हुवै तो गुराजी गाभा सुखावणा हुवै तो गुराजी दूध के ब्रेड-बिस्कुट लावणा हुवै तो गुराजी। अनु-कनु रो बस्तो तैयार करणो हुवै तो गुरा जी अर जे चूक हुय जावै तो भूडी गाळया पिण खावै गुराजी।

गुराजी रात-दिन पुदै पण कोई जस नीं अर नीं कोई थोरो। पैला तो लोग कैवता पण अबै वै भी खुद सू कैता - गुराजी कद ताई यू निचोडीजैला। सारै कस्बै मे गुराजी रै आदर-नाव सू जाणीता-मानीता अर लोगा री आस्था-सिरधा रा सोवणा सिरदार आलोकनाथ कींकर वणग्या बेटै-बहू री आख रो काकरो कोई नीं जाणै। ठोलै री रोटी क्यू जीमै गुराजी? आ मजबूरी के नियति। डोकरो लाई करै तो काई करै जावै तो कठै जावै।

गुराजी कद चितार्‌यो हो कै जिंदगी री साझ इती दमघोंटू हुवैला। सुवै-साम प्रभु-भजन री जागा यू करमा नै कोसणो पडैला। इसो कोझो बैवार कै नौकरा री जमात नै पिण अचूमो हुवै। गुराजी लगोतार छोलीजता रैवता बारै सू भी अर माय सू भी। छिलका उतरता रैया बेटो-बहू छिलका नै चूपता रैया चूप र फैकता रैया।

गुराजी सरुआत मे बहू नै दोस कोनी देता। सोचता कै बहुवा तो पराई-जायी हुया करै। सासरै मे रागीला नेग जुडता ई जुडै। उणांरै नजरियै मे बदळाव पिण आवतो ई आवै। पण औलाद ई जद हेत रा घरु ऊधा कर अनादर री राख उडावै तो कोई काई करै। कोई लेसारियो ई जद आचार-विचार रै पाठा नै बिसराय अपणायत री पोथी रा सोनलिया आखर कदाचार री काळी स्याही सू बिगाड नाखै तो बस्तो बापडो काई करै। गुराजी सोचता ई रैवै कै बूढा मायत अणचाया क्यू बण जाया करै?

मरै न माचो छोडै - बेटै-बहू रा कैयोडा इस्या केई बोला नै याद कर गुराजी माय रा माय सिज्या करता कै केहडी विडम्बना है जिको मायत आपरै टाबरा नै चिरायु री आसीस देवै उणी मायता सारू टाबर मौत री अरदास करै। वै बेगा मरै इणरा पूरा जतन करै। उजळै सस्कारा री ताकत मादी कीकर पड जाया करै।

गुराजी जद कदै अैहडै तनाव री ऊडी-तीखी पीड सू छटपटाता झींकता तो उणरै होठा सू निसासा मे लाचारी व हीणाई रा मरम-भरिया बोल हाफेई उछळ जाता - अरे मदगैला लायण कीडी नै क्यू पीलो निरभागी रो कितोक

जीवणो। हाफेई मर जासी। क्यू पाप लेवो सिर माथै। सुख रा मणिया नी दे सको तो दुखा रा भाठा तो मत ना दो।

बेटो नटवर अर बहू कमला ज्यारै सिनेमा के किणी पार्टी मे बारै जाया करता तो गुराजी चैन रो फूकारो लेवण मे कदै नीं चूकता। माचै माथै आळेट निराती सू आख्या मींच लेता अर जिंदगी री कटी-फटी डायरी रा खास-खास पाना बाच्या करता। बाचतै-बाचतै जद भी गुरयाणी रो नाव के कोई हवालो आवतो तो उणरी मोतियाई आख्या री कोर सू आसुवा रो हेक पतलो रेलो जरूर सरू व्ही जातो। लोगा री देखा-देख गुराजी पण आपरी घरआळी नै गुरयाणी ई कैया करता। डायरी मे गुरयाणी री गुण-गाथा रा पाना रो बाचण करता-करता वै आख्या खोलता अर सामै टग्योडै उणरै फोटू नै जोवण लागता। चुपचाप मगर उणरी झरती आख्या स्यात अे कैवणो चावती- थारा करम घणा-घणा चोखा हा गुरयाणी। भली टैम ठिकाणै पूगगी। थारी दियोडी मळाण नै निभावण सारू मर-मर जीवू हू। हमै म्हनै थारी आण सू मुगति देदै गुरयाणी। हमै थारै लाडेसर नै म्हारी कोई जरूरत कोनी। फेर गुरयाणी नै मरती बेळा दियोडै वचन नै याद करता।

गुरयाणी रो सरगवास हुया पछै गुराजी रै जीवण रो फगत हेक ई मकसद हो नटवर रो भविस सवारणो। इण वास्तै उवा कोई कसर बाकी कोनी राखी। उवा किता जतन कर्या हा किती सगवडा करी ही नटवर री भणाई-गुणाई खातिर सुख-सुविधावा खातिर। इणरै सागै-सागै मिनखपणै रै सस्कारा री सीख पण चालती रैती। गुरयाणी रै दुख नै बिसरावण सारू गुराजी आपरी जिनगाणी नै नटवर री जिनगाणी मे सामळ कर देता अर सोवणा सुपना देख्या करता।

नटवर री चळगत इसी मोवणी कै गुराजी रा सगळा साथी अर बेली-गोठी थुथकी नाख कैया करता कै नटवर तो गुराजी नै हथाळी रो छालो बणा र राखैला। गुराजी सारी उमर घणा रोभा देख्या पण बुढापै मे घणा ई सुख पावैला। गुराजी री निजर जीवण-डायरी मे लिख्योडी इण ओळा माथै पडती तो मायली ऊडास री हेक अळखावणी हूक सबदा मे ढळती कैया करती- साचाणी नटवर गुराजी नै हेक छालो बणा र राख्यो है पण वो उवैरी हथाळी रो कोनी वो तो है गुराजी रै खुद रै अस्तित्व रो छालो। उवारै वजूद

रो छालो। तर-तर नासूर बणतै इण छालै सू सगळो परवार नफरत ई करै है सूग करै है।

गुराजी रा सुपना हेक-हेक कर तूटताग्या। मोह भग री बळत में बधारो हुवतोग्यो। मोह भग री दसा मिनख रै मायलो सगळो ई लूट लेवै। गुराजी खनै अवै काई हो। फगत खोट खाधोडो बूढो सरीर। अर इणनै लोग मनचायो सबोधन देवै तो कुण नै इतराज हुवै। गुराजी वगना डोफा गैला हागड-बिल्ला ठा नी काई-काई हुयग्या हा बेटै-बहू री निजरा में। अैहडी हालत मे मायली धुखण री सुध कुण लेवै? गुराजी सू कुण पूछै कै मोह भग री मार किसीक हुया करै। सुपना री तूटण सू अतस में केहडी हळचळ मच्या करै। सोरप रो आसा-दीप बुझण सू अधारो किया हडबोचा मारै।

बुढापै अर बाळपणै मे घणा रागीला सबध हुवै। कैवत पिण है- साठ अर आठ बरोबर। टाबरा री रम्मत-गम्मत मे बुढापै री सगळी दोरप गळ जाया करै। ऊर्जा रा स्रोत हुया करै टाबर-टींगर पुख्ता मायता रै वास्तै। गुराजी आपनै बडभागी समझता हा कै उणरै घर मे अनु-कनु जिसा दो प्यारा-प्यारा चुलबुला छोरा है। रिटायरी री सरुआत रै दिना मे तो वै टाबरा मे टाबर बण इस्या रळ जाया करता कै समै रो भाण ई कोनी रैतो। पछै बहू री टोका-टोकी मे इण लूण्ठै सुख रा घणमोला छिण तर-तर कमती हुवताग्या। गुराजी कींक कैता तो बेटै-बहू सू आवळ-कावळ सुणनो पडतो।

गुराजी रै मानस पटल माथै उण दिन री घटणा मोटै आखरा मे मडगी ही जद नटवर रग मे भग कियो हो। बाप रो थोडो सुख भी सुहायो कोनी। जद भी वै पार्क मे बूढा सग टाबरा नै रमता देखता तो सोचता कै उण दिन तो नटवर हद ई कर दी ही।

अनु-कनु गुराजी रै सागै कैरम रम रैया हा। हासा-फीफी देख लागतो कै गुराजी जिसो कोई भागसाळी कोनी। रम्मत मे लाग्योडा गुराजी रै काना मे बेटै-बहू री खुसर-पुसर री भणक पड़ी। उवां इणरी कोई गोख कोनी करी। रमत चालती रैयी। इतरै मे नटवर रीस मे तमतमावतो मांय आयो अर गैलै ज्यू कैरम री गोटया भेळी कर छोरां माथै मारण लागो। गुराजी बिचाळै आया तो वो इस्यो कोझो बोल्यो कै रिसता री सगळी मरजादावां धणी लारै छूटगी।

गुराजी रै माय तूफाण मचग्यो पण मूडै चुप झालली। नटवर छोरा नै मारतो व हाका करतो बारै निकळ्यो अर वै देखता ई रैया।

कैरम री गोटया भेळी करता वै सोचण लागा हा कै जिकै उमर सारी सैकडू छोरा रो जीवण बणायो है वो कई इण छोरा रो जीवण बिगाड देसी। गुराजी नै भारी दुख हुयो कै उणरी जीवण-तपस्या माथै नटवर अैहडा जीवलेवू आरोप क्यू लगाया। बाप नै सोरप री जागा नफरत रै ठीकडा री सौगात क्यू देवै।

गुराजी आपरै पाडोसी भीमजी नै पोता रै सागै रम्मत करता देखता तो हिवडै मे हेक टीस उठती मैसूस करता। अमरस आवण सू आख्या गीली हुय जाया करती। अनु-कनु रै साथै रमवा री हर हुवण लागती पण काई करता। टाबर बापडा दादै खनै आवता पण वै डर रै मारै उवानै भगा देता। फेर भी जद घणी बायड आवती तो लुक-लुक खेलता। छाना-माना रम्मत माडता। इण सारू केई बार गाळया पण खावता।

गुराजी री जीवण-डायरी रै बहू वाळै पानै मे साफ लिख्योडो हो कै उण दिन कमला रम्मत लागोडा छोरा नै घसीट र कमरै सू बारै लेजावती अेलाण करयो हो- 'खबरदार आगै सू अैहडी रम्मत छोरा साथै माडी तो। गत बिगाडतै म्हनै कोई टैम नी लागैला। बिगाड बादरा कर नाख्या इयानै। ठा नीं कद छुटकारो मिळैला। गुराजी पाणी बायरा हुयोडा सुणता रैया हा।

कमला छोरा नै चौक मे रोवता छोड माय आयी ही रीस मे डाकण ज्यू भूडी घुरघुरावती। जगजाणी मुद्रावा मे अग-अग नचावती वा कर्कसा बोली काई चीखी ही- इण टाबरा नै तो बक्सो गुराजी! क्यू करो हो इणरो भविस धूड धाणी ? कमला घणी ताळ यू बोलती रैयी अर गुराजी चुपचाप सुणता रैया। काई करता कीक बोलता तो औरू घणो सुणणो पडतो। छेवट वा माथो कूटती बारै जावती डुसक्या मे रोवती कूकी ही- ठा नी किण जलम रो बदळो लेवै है अै खूसट गुराजी। ठा नी कद ताई धमीडा लेणा पडसी छातीकूटो करणो पडसी।

म्हारी किणनै जरूरत है। म्है किणरै वास्तै जीवू! मायली कीक बफार निकाळता वै आडा पडग्या अर फेर गुरयाणी रै फोटू नै हेकटक जोवण लागा हा।

रो छालो। तर-तर नासूर बणतै इण छालै सू सगळो परवार नफरत ई करै है सूग करै है।

गुराजी रा सुपना हेक-हेक कर तूटताग्या। मोह भग री बळत मे बधारो हुवतोग्यो। मोह भग री दसा मिनख रै मायलो सगळो ई लूट लेवै। गुराजी खनै अबै काई हो। फगत खोट खाघोडो बूढो सरीर। अर इणनै लोग मनचायो सबोधन देवै तो कुण नै इतराज हुवै। गुराजी बगना डोफा गैला हागड-चिल्ला ठा नीं काई-काई हुयग्या हा बेटै-बहू री निजरा मे। अैहडी हालत मे मायली धुखण री सुध कुण लेवै? गुराजी सू कुण पूछै कै मोह भग री मार किसीक हुया करै। सुपना री तूटण सू अतस मे केहडी हळचळ मच्या करै। सोरप रो आसा-दीप बुझण सू अधारो किया हडबोचा मारै।

बुढापै अर बाळपणै मे घणा रागीला सबध हुवै। कैवत पिण है- साठ अर आठ बरोबर। टाबरा री रम्मत-गम्मत मे बुढापै री सगळी दोरप गळ जाया करै। ऊर्जा रा स्रोत हुया करै टाबर-टीगर पुख्ता मायता रै वास्तै। गुराजी आपनै बडभागी समझता हा कै उणरै घर मे अनु-कनु जिसा दो प्यारा-प्यारा चुलबुला छोरा है। रिटायरी री सरुआत रै दिना मे तो वै टाबरा मे टाबर बण इस्या रळ जाया करता कै समै रो भाण ई कोनी रैतो। पछै बहू री टोका-टोकी मे इण लूण्ठै सुख रा घणमोला छिण तर-तर कमती हुवताग्या। गुराजी कींक कैता तो बेटै-बहू सू आवळ-कावळ सुणनो पडतो।

गुराजी रै मानस पटल माथै उण दिन री घटणा मोटै आखरा में मडगी ही जद नटवर रग मे भग कियो हो। बाप रो थोडो सुख भी सुहायो कोनी। जद भी वै पार्क मे बूढा सग टाबरा नै रमता देखता तो सोचता कै उण दिन तो नटवर हद ई कर दी ही।

अनु-कनु गुराजी रै सागै कैरम रम रैया हा। हासा-फीफी देख लागतो कै गुराजी जिसो कोई भागसाळी कोनी। रम्मत में लाग्योडा गुराजी रै काना मे बेटै-बहू री खुसर-पुसर री भणक पडी। उवा इणरी कोई गोख कोनी करी। रमत चालती रैयी। इतरै मे नटवर रीस मे तमतमावतो माय आयो अर गैलै ज्यू कैरम री गोटया भेळी कर छोरा माथै मारण लागो। गुराजी बिचाळै आया तो वो इस्यो कोझो बोल्यो कै रिसता री सगळी मरजादावा घणी लारै छूटगी।

गुराजी रै माय तूफाण मचग्यो पण मूडै चुप झालली। नटवर छोरा नै मारतो व हाका करतो बारै निकळयो अर वै देखता ई रैया।

कैरम री गोटया भेळी करता वै सोचण लागा हा कै जिकै उमर सारी सैकडू छोरा रो जीवण बणायो है वो कई इण छोरा रो जीवण बिगाड देसी। गुराजी नै भारी दुख हुयो कै उणरी जीवण-तपस्या माथै नटवर अैहडा जीवलेवू आरोप क्यू लगाया। बाप नै सोरप री जागा नफरत रै ठीकडा री सौगात क्यू देवै।

गुराजी आपरै पाडोसी भीमजी नै पोता रै सागै रम्मत करता देखता तो हिवडै मे हेक टीस उठती मैसूस करता। अमरस आवण सू आख्या गीली हुय जाया करती। अनु-कनु रै साथै रमवा री हर हुवण लागती पण काई करता। टाबर बापडा दादै खनै आवता पण वै डर रै मारै उवानै भगा देता। फेर भी जद घणी बायड आवती तो लुक-लुक खेलता। छाना-माना रम्मत माडता। इण सारू केई वार गाळया पण खावता।

गुराजी री जीवण-डायरी रै बहू वाळै पानै मे साफ लिख्योडो हो कै उण दिन कमला रम्मत लागोडा छोरा नै घसीट र कमरै सू बारै लेजावती अेलाण कर्यो हो- खबरदार आगै सू अैहडी रम्मत छोरा साथै माडी तो। गत विगाडतै म्हनै कोई टैम नीं लागैला। बिगाड बादरा कर नाख्या इयानै। ठा नी कद छुटकारो मिळैला। गुराजी पाणी बायरा हुयोडा सुणता रैया हा।

कमला छोरा नै चौक मे रोवता छोड माय आयी ही रीस मे डाकण ज्यू भूडी घुरघुरावती। जगजाणी मुद्रावा मे अग-अग नचावती वा कर्कसा बोली काई चीखी ही- इण टाबरा नै तो बक्सो गुराजी! क्यू करो हो इणरो भविस धूड धाणी ? कमला घणी ताळ यू बोलती रैयी अर गुराजी चुपचाप सुणता रैया। काई करता कीक बोलता तो औरू घणो सुणणो पडतो। छेवट वा माथो कूटती बारै जावती डुसक्या मे रोवती कूकी ही- ठा नी किण जलम रो बदळो लेवै है अै खूसट गुराजी। ठा नी कद ताई धमीडा लेणा पडसी छातीकूटो करणो पडसी।

म्हारी किणनै जरूरत है। म्है किणरै वास्तै जीवू! मायली कीक बफार निकाळता वै आडा पडग्या अर फेर गुरयाणी रै फोटू नै हेकटक जोवण लागा हा।

अनु-कनु आपरी मा रै सिखायै उण दिन सू गुराजी सू कन्नी काई काटण लागा जाणै उवारी जीवण-आस रा बचिया-खुचिया तार ई काटण लागा। गुराजी बाळका रै हेत व मुळकण रै निरमळ हौद मे डुबक्या लगावणा चावता पण निरूडा बाळक उवानै अनादर उपेक्षा अर नाजोगी मजाका रै कीच-कुड मे नित गुचळका खुवावता अर कूद-कूद ताळया बजाता। ओ सब टाबरा रै मन री कुचमाद कोनी। गुराजी तो उमर सारी टाबरा मे ई रैया हा। उवानै बाळमन री पूरी पिछाण ही। अनु-कनु री कुसस्कारी हरकता नटवर व कमला री मौजूदगी मे पिण चालती पण वै कदै ई उवानै नीं टोकता अर नीं रोकता उल्टा वै भी सागै खी-खी हसता मजो लेता।

मन रै विज्ञान रा मास्टर गुराजी इण तोतकरासा सू गोख लीधो हो कै नटवर अर कमला मन मे जिकी प्रबळ चाह राखै है वानै खुद पूरी करण मे असमरथ निवडै तो छोरा रै माध्यम सू पूरी करणी चावै अर मन नै सुख-सतोख रो अणभै करावै है। गुराजी सोचता कै छोरा नै यू वापरणो मूगो कोनी पडै काई? मिनख कितो स्वारथी हुवै। वो अै नी देखै कै आपरै स्वारथ री पूरती सारू दूजा री किती हाण हुवै है।

लोकमानस मे गुराजी रो सबद घणो मैताऊ मानीजै। मोटी-मोटी उपाधिया सू बिल्कुल ई ओछो कोनी हुवै ओ लोक सम्बोधन। कस्बै रा ई नीं आसै-पासै रै गावा रा छोटा-बडा सगळा उवानै घणै आदर सू गुराजी कैता। गुराजी नै पण गुराजी सुणनो बोत आच्छो लागतो। उवानै ई क्यू, घर रै सगळा जणा री छाती गरब सू फूल जाया करती गुराजी सुण। भागवती नै पिण गुराजी रै कारणै गुरयाणी रो रुतबो मिळयो हो। नटवर अर कमला पण प्रसग आया कैया करता कै के तो सरगवासी दीनानाथ जी नै लोगा आदर सू गुराजी नाव दियो हो के उणरै बाबूजी आलोकनाथ नै।

समै रो फेर रिटायरी रै बाद बाबूजी रो गुराजी सम्बोधन बेटै-बहू नै खारो जैर लागण लागो। जद कोई गुराजी कैतो तो वै मूडो मचका र बोलता-गूडो जी। फेर तो दोनू ई गुराजी नै बाबूजी री जागा गूडोजी रो मखौळियो सम्बोधन ई देवण लागा। छोरा तो हेक पग आगै निकळग्या हा। गदी जबान मे कैता रैता गू डोजी। गुराजी कुचमाद समझग्या हा पण काई करता।

उवारै मन माय हेक घाव औरू बधग्यो हो। वै जाणता हा कै मन फाटी रै कोई कारी कोनी लाग्या करै।

गुराजी नै उण दिन घणो-घणो दुख हुयो हो जद उवानै आ ठा पडी ही कै गुराजी रो मान-सम्मान सूचक सम्बोधन अबै नवै गन्दै-सूगळै गू डोजी रै रूप मे घर री थरकण लाघ सारै कस्बै मे पसरग्यो है। इणरो पैलो अैसास भूरियै नाई करायो हो।

गुराजी रोज सुबै हवाखोरी नै जावता। हवाखोरी काई दूध लावण री ड्यूटी समाळता। पाछा घिरता डेरी सू दूध री थैल्या लाया करता। उण दिन जद गुराजी डेरी माथै पूग्या हा तो भूरियो नाई कुवधाई सू बोल्यो हो- रामराम सा गू डोजी! गुराजी अचूभै मे सकपकीज भूरियै माथै निजरा फेकी। वो निरलज खी-खी करतो सामै सू हटग्यो हो। दूजा पण मूडो फोर हासण लागा हा। गुराजी फटाफट थैल्या ली अर खाथाई मे घर खानी बईर हुयग्या। पण उणरै काना मे बराबर 'गू-डोजी रो ऊनो कळकळतो तेल लोग नाखता रैया हा।

रास्तै में सोचता जावता कै ओ दिन आघो कोनी जद वै गळया सू गुजरैला तो अचपळा टाबर-टींगर 'गू-डोजी गू-डोजी कैवता लारै पडैला। इतरै मे गुराजी रो निजर पार्क मे रमता छोरा माथै पडी। छोरा हाका-ठठा करता अठै-बठै नाठ रैया हा। गुराजी हेक अणजाण आसका सू डरग्या कै छोरा काई लारै तो कोनी पड जावै गू-डोजी कैता-कैता। डर सू छेका-छेका पावडा भरण लागा। फेर कई समळ र खुद नै ई धीजो देता बोल्या- म्हनै कुण रो डर। फेर 'गू-डोजी नै तो हर कोई गू-डोजी ई तो कैवैला।

गुराजी आपरै वजूद रो नवो रूप 'गू-डोजी अगीकार कर लीधो। चालतै-चालतै मायली उधेडबुण मे गैला ज्यू हाव-भाव मे चीख्या- सुणो सुणो! म्हैं गू-डोजी हुयग्यो हूँ। गू डोजी। उण बखत लारै सू बीदासर रो सरपच कूपाराम आ रैयो हो। गुराजी नै जावता देख जीप रोकी अर खन्नै जा'र आदर सू बोल्यो- जै रामजी री गुराजी। गुराजी उणरै सामै जोय कूक्या- अरे गुराजी नई म्हनै गू-डोजी कैवो। म्है अबै गू-डोजी हुयग्यो हूँ। गू डोजी। कूपाराम री समझ मे कई नी आयो। गुराजी नै मूड मे नीं देख

वईर हुयग्यो हो। सोच्यो कै कठै गुराजी री पखडी तो कोनी खिसकी। निस्चै ई मगज रा तार ढीला पड़ग्या दीसै।

गुराजी घर तो हेकलपो भुगतता ईज हा पण अबै तो बारै पण हेकलपो पिंड कोनी छोडै। ठठक वाळै व्यक्तित्व री ऊकड़ली-जोगी भगार लिया कठै जावता? उवानै लागतो कै उणरो ठसकदार रूतबो रग-रूप गयाय हेक मजाक मे ढळग्यो है। लोगा सू कतरावणो सरू हुयग्यो अर इण कारण दायरै रो घेरो सिमटतोग्यो। उणरो बस पडतो तो घर सू बार ई नीं निकळता पण घर बैठया नै सूखी रोटी रा टुकडा ई कुण घालतो?

उण दिन गुराजी रो जीव सोरो को'नी हो। दोरप इतरी अधकी ही कै वो हवाखोरी माथै जावणो ई टाळग्या। बहू-बेटै घणी हाका-हूक करी पण उणरो ना ई ना हो। हवाखोरी री कुण नै पडी ही दूध कुण लावैला इण बात री ई दोनू नै पीड ही। गुराजी इती राफारोळ मे ई जद नीं उठया तो मजबूरण नटवर अर बहू नै ई दूध लेवण नै जावणो पडियो। गुराजी माचै माथै आडा पड्या रैया।

जी दोरो हुवण रा गुराजी रै वास्तै रोज पचासा कारण हुवता पण आज री अणखणाट री हेक खास वजै भी ही। आजै गुरयाणी री बरसी ही। गुराजी रै जी री जडी री पुन्न तिथि। गुरयाणी री याद मे गळगळा हुयोडा उवा आख्या मीच लीधी। ओळू रै सागै हर भी आवण लागी गुरयाणी रै सागै वितायेडा पळा री। जीवन-डायरी रा पाना अबै बचिया-खुचिया ई हा। कीक नै समै रा ऊदरा कुतरग्या कीक नै उमर री दीमक ई चाटगी। कीक माथै परवार वाळा अर पराया पाणी गैर दियो हो। पण गुरयाणी वाळा पाना अतस री पेटी मे सावळ समाळ राख्योडा हा।

गुराजी मायली आख्या सू गुरयाणी वाळा पाना बाचता रैया अर बारली आख्या सू आसुवा रो रेलो ढुळकतो रैयो। बाचण सू निवडता ई आख्या खोली मूडो पूछियो अर गुरयाणी रै फौटू नै जोयो। उठया अगरबती करी अर पाछा माचै माथै बेठग्या। हाथ जोड भरियै गळै सू बोल्या- थू घणी बडभागण ही रे गुरयाणी। भली बेळा ई सरग वासो कर लीधो। म्है अभागो जीवतो भूत ज्यू डोलतो फिरू। म्हनै हेलो पाड दै रे गुरयाणी। गुराजी हाथ जोड बैठा ई रैया जाणे माय री माय अरदास करता हुवै।

गुराजी ओ गुराजी ! म्है रणजीतो भाट आपरी हाजरी मे सीधै सारू। गुरयाणी री पुन्न तिथि माथै रणजीतो सदीव सीधो-दिखणा लेवण आयो करतो। रणजीतै रो हेलो सुण गुराजी झट सू उठया।

आऊ रे बेटा रणजीता। -कैता कमरै सू बारै आया।

रणजीतै गुराजी रो उथलो सुण्यो कोनी। फेरू थोडी ऊची आवाज मे बोल्यो- 'गुराजी ओ गुराजी।

गुराजी बारणै ऊपर आय घणै हेत सू बोल्या- म्है सुण लीधो कै थू रणजीतो। रुक बेटा सीधो-दिखणा लाऊ हू। रणजीतो सरम सू ही-ही करण लाग्यो।

गुराजी रसोई मे बडिया। थाळी मे दाळ चावळ आटो खाड अर कीक मसाला घाल्या। छोटी बाटकी मे घी भर्‌यो। थाळी मे दिखणा रो हेक रिपियो पिण राख्यो। सीधै री थाळी लिया बारणै री तरफ आवण लागा। इतरै मे बेटो अर बहू दूध लेय आयग्या हा।

'हूँ SSS ! अबै समझी कै गूडोजी रो जी सोरो क्यू नी हो। डोकरी कद री मरी आई-गई हुई अर डोकरो अजू ताई सीधै रा थाळ लुटाया करै। सीधै री थाळी देखता ई बहू रै झाळा लागगी ही।

बहू रा बोल सुणता ई गुराजी रा पग जाणै जठै हा उठै ई चैटग्या। उणरो दुख ओ देख औरू बध्यो कै नटवर चुपचाप तमासो जोवतो रैयो।

बहू थाळी झपटण सारू आगळ बधी तो गुराजी उणनै काठी झालता कैयो- बहू, इया ना कर। हाथ जोडू। नटवर री मा री बरसी रो सीधो देवण दै। म्हनै चार दिना ताई रोटी मत घालजै भूखो रैय लेस्यू। पण गुरयाणी री आतमा । गुराजी रा केई सबद होठा रै माय ई रैया। वै डुसका मे रोवण लागा हा। आसूडा टप-टप आटै मे रळ रैया हा।

बेटै-बहू माथै गुराजी री कथणी रो कोई असर कोनी वियो। बहू मौको देख गुराजी रै हाथा सू थाळी झपटली ही। वै देखता ई रैया। नटवर अर बहू माय बडग्या हा। रणजीतो औ तोतकरासो देख कद रो ई नाठग्यो हो।

गुराजी थोडी टैम यू ई ऊभा रैया गुमसुम चुपचाप। आसै-पासै री दुनिया सू बेखबर। उणरी खुली आख्या कई ना देखै जे देखै तो बस गुरयाणी

रो चितर ई। सुध-बुध रा पखेरू गुराजी रो माळो छोड आगै मे उडग्या हा। उवारी आतमा पण परमात्मा मे अळोप हुवण वास्तै जावण री खाथाण करी तो गुराजी भूगाटी खाय आगणै धबाक सू खिरग्या।

खिरण रो धबाको सुण नटवर अर बहू दोनू ई उठै आयग्या। गुराजी री अैहडी भूंडी हालत देख नटवर उण खन्नै जावण री करी पण बहू रोक दीघो। गुराजी री सासा री रफ्तार घणी तेज हुवण लागगी ही पण दोनू देखता ई रैया। उणरी हिचकिया सरू हुयगी पण दोनू देखता ई रैया। हिचकिया रै सागै में उणरै होठा सू टुकडा-टुकडा मे बोल फूटया- म्हारै काळजियै री गुरयाणी। आज सीधो कोनी म्है पूग जास्यू। गुरयाणी अरे वाट थू आई लेवा नै।

हेक लाम्बी हिचकी आई अर गुराजी री आतमा गुरयाणी रै सागै उणरै देस बईर हुयगी। बेटो-बहू हेक दूजै नै देख मुळक्या अर पछै दुनिया नै बतावण सारू धाडा मार रोवणो सरू कीघो।

□□□

घर

गीता रो आज सुवै सू ई जी सोरो कोनी। कमरै मे ढोलियै माथै ऊधी पडी है। काई करै अर काई नीं करै री हालत मे। मन मे कतरा घडै कतरा भागै। घडीक दात भीचै। तकियै सू हाथापाई करै। काणेक वा मत्थो पटक-पटक रीकणो सरू करै। ऊमण-दूमण हुयोडी पासा फोरै। तडफै ज्यू माछळी। उणनै लागै कै वा हेक अधारी साकडी गुफा मे चालै है अर अचाणचक सामी भींत आ जावै हेक डीघी जबर भीत। हुचकै। इया-उवा मारग सोधै। घबराट तर-तर बधती जावै। गुफा जाणै हेक भूलभुलैया मे बदळ जावै अर वा भटका मे अणूती अळूज जावै।

घडी री टण-टण सू गीता रै विचारा रो तातो तूटै। बेमतलब घडी सामी जोवै। भींत माथै टग्योडी पेंटिंग माथै उवैरी निजर पडै। रेगिस्तानी अधड-तूफाण री जानदार पेंटिंग। गीता नै मैसूस हुवै कै उवैरै माय पिण अैहडो ई अधड चाल रैयो है। हेक जबरदस्त बेमौसमियो अधड जिकै उवैरै विसवास नै उवैरै असरियै नै अठै ताई उवैरे सुभिमान नै ई झकझोर नाख्यो है।

घडी-घडा गीता रै मन मे बस हेक ई हूक गूजै कै भाई-भावज उणरै सागै इस्यो ओपरो बर्ताव क्यू कर्‌यो । क्यू करया उणरी इज्जत रा काकडा गाढो रिस्तो पतलो किया हुयग्यो। गीता ज्यू-ज्यू सोचै दुख मे कळीजती जावै। मायलो उफाण बधै तो वा पाछी तकियै माथै मत्थो पटक देवै। मत्थो धूणती-धूणती बस हेक ही रट लगावै- म्है काई पराई हुयगी रे भैया । म्हारै सागै इस्यो खोटो बैवार क्यू।

बेबी नास्तो कर लै। आ बूढी नौकराणी घूडी है गीता रै बापू रै बखत री। पण सगळा काकी कै र मान देवै। नास्तै री प्लेट टेबल माथै धरती घणै लाड सू केवै। काकी बिखेरो ठीक करवा लागै।

म्हनै कोनी करणो नास्तो-वास्तो। काकी लेजा अठै सू। पाछी मत ना आइजै। गीता काकी माथै रीस में फुफकारती तकियै री दै मारै। काकी नै बुरो कोनी लागै। टाबर तो इसी गैलाया करै ई अर फेर वा काकी री लाडकी भी तो है। तकियो उठावती लाड सू बोलै- यू नीं करणो बेटी। तकियो पाछो पलग माथै धरै।

तो काई करू म्है। तकियै माथै मुकिया मारती गीता सुवाल करै।

काकी गीता नै इण रूप मे कदै ई देखी कोनी। वा आज ताई कदै ई ऊचे सुर मे बात कोनी करी। सगी काकी ज्यू मानै। वा समझ जावै है कै आज निस्चै ई गीता रै मन में सोराई कोनी। काकी जाणै है दोराई रो कारण। पण उणरो मानणो है कै गीता तो गैली है जमानै री रीत कोनी समझै। वा रिस्ता रो बोवारी अरथ पण कोनी समझै। उणनै तो सम्बन्धा रै दुनियादारी-मरम री पिछाण कठै है। रिस्ता तो सागी ई रैवै पण बदळतै समै रै सागै उणारी तासीर पण बदळती रैवै। काकी जमानै रा घणा रग देख्या हा। जाणै है कै कोई रग हेकीसर कोनी रैवै भला रिस्ता हुवै भला बरताव। काकी सोचै कै जग रो औ अरथाऊ साच लायण बेबी कोनी ओळख सकी। जे समझ जाती तो यू नीं कुरळावती।

बेबी उठ बेटी। गीता री पूठ माथे हाथ फिराती काकी कैवै।

ना काकी थू जा। म्हनै हेकली नै छोड दै।

म्हू तो जाइस परी पण थू आपै मे आजा रे बेटी। यू मत तळ खुद नै लाडण। काकी जावणो ई ठीक समझै।

गीता री वाइज हालत कई करै-कई नी करै। घडी सामी जोवै। दस बज री है। पूरा दो घण्टा हुयग्या है सुबै री घटणा नै। पूरा दो घटा सू वा अठै रीसाजोडी पडी है पण भाई के भावज कोई पिण सुध कोनी ली। रतन भैया रै बौवार मे ऐहडो बदळाव आ जासी उवै आ कदै ई नीं अगेज्यो। हर फरमाइस पूरी करणियो हेताळू भाई आज पराया ज्यू मोसा देवण लाग जासी औ उणरै वास्तै मरण सू बधीक कोनी काई?

गीता रै मन माय मोह भग सू जलम्या ओकारा रो तातो बधतो ई जावै। सुधा भाभी नै सदीव हेक बैन हेक साथण भायली मानती रैयी वा। उणसू इसी उम्मीद कोनी ही। भैया तो कदै डाट-फटकार लगाय दिया करतो पण भाभी

तो हर हाल मे उवैरो ई पख लिया करती। वाइज भाभी आजै तो हद ई कर दीधी। भैया रै सागै उवै पिण आपरी गीता दीदी माथै थेपडिया थेप दी। कित्तै अळखावणै सुर मे बतलावण लागी ही वा। गीता ज्यू-ज्यू सोचै उणरो मन घणो-घणो कस्टीजतो जावै।

आज सावणियै री तीज है लुगाया रो खास तिवार। ओढण-पैरण रो लूण्ठो तिवार। सावण तो आयो सइया म्हा सुणियो आयो रे तीजा रो तिवार - जिस्या गीता रा मनभावणा धारोला बवातो हरखावणो तिवार।

तीज सारू गीता सुआपखी सिल्क री साडी लाई ही रतन भैया रै भायलै री दुकान सू। उधार सात सौ रिपिया मे। उवै आज सुबै तीजणी रो सिणगार कर वा ई साडी पैरी ही। साडी मे घणी फूठरी लागती वा। हरखती भाई रै कमरै मे गई ही भाभी नै साडी री सरप्राइज देवण सारू। उवानै साडी रो पल्लो बतावती वा बोली ही- जोवो भाभी केहडी लागै। भाई-भाभी दोनू साडी माथै निजरा घुमाई। अणबोला ई जोवता रैया हा।

काई जोवो भाभी। म्हारी पसद ई इसी है। जोवणिया जोवता ई रैवै। क्यू भैया है नी। गीता री सहज मुद्रावा टाबरा जिसी ही।

उवैनै पूरो पतियारो हो कै भाई-भाभी दोनू राजी-राजी निरखेला अर उणरी सोभा करैला। खींच र खनै बैठावैला। पण दोनू री आख्या मे हेत री जागा रीस रा खीरा चमकण लागा हा। मूडा रो भाव ई बदळग्यो हो। गीता री हुळस माथै जाणै काळख पुतगी। गीता डाबाचूक हुयोडी भाभी खन्नै गई पण उवै कोई तवजो कोनी दियो।

म्हा देखता ई रैवा अर थू पइसा रो पटमूडियो करती जा। पइसा कोई झाड माथै लागै ? ना किणनै पूछै-गाछै बस उधार माथै उधार लेती फिरै। कालै ई दस-दस तकादा आया हा। कुण भरसी थारो सुसरो। रतन बात रै सीगै री सरुआत करी।

गीता सोचै कै सुधा भाभी तो हद ई कर दी। हरमेस री गैळ कठै आई बचाव मे। भैया सू ई बधीक वा खारी बोली ही- आ काई जाणै घर-गिरस्थी री बाता। जाणती तो यू पीर मे गलडका नी करती। म्हारो धणी कमावै पण म्हारी हिम्मत कोनी पडै कै म्हू बाईसा री तरै आवती-जावती साडिया मोलाती फिरू। गीता री भाभी उठ र रतन री बगल मे बैठगी ही रीस रै तेवर मे मूडो मचकोळती।

भाभी! ठा कोनी काई ओ म्हारो ई घर है। म्हारी मरजी म्है अठै गलडका करू के सलडका। थारो काळजो क्यू बळै। गीता चीखती बोली ही। गीता रीस मे घणी आवळ-कावळ बोली ही। नी कैवणा जिसा पण कैया। उवैरी दीठ मे आयोडी सू जायोडी रो हक बधीक हुया करै।

कार स्टार्ट हुवण री आवाज सुणीजै। गीता रै विचारा मे भग पडै। आवाज सू बध्योडी खिडकी माथे आवै। जोवै- भैया गैराज सू कार काढै भाभी माय बडै। गीता रै मूडै सू बफार निसरै- घसमूडी अकड मे कींकर मटकावती चालै। धूवो सरकावती कार बारै दौड जावै।

गीता खिडकी रै पागती राख्योडै सोफे माथै आडी पसर जावै। मोहभग मे कुरळावती सोचण लागै कै रतन भैया पण उवैरै विसवास माथै धूवो इतो पोत्यो है। इतो धूवो क आगळी जिनगाणी इ काळी पडती दीखै। उवैनै पूरो विसवास हो कै उण बेळा भैया उणरी तरफदारी अवस करैला अर भाभी री सागीडी लाचण लेवैला। पण वो तो भाभी रा आसूडा पूछतो गरज्यो हो- माट कर गीता ! बेसरम घणबोली। आ थारी भाभी है। इयै घर री मालकण। थारो घर अबै थारै सासरे मे है।

गीता नै जिण बात री सुपनै मे ई उम्मीद कोनी ही ऐहडी बात सगै भाई रै मूडै सू सुण र वा हेबतीज गई ही। पलका झपकाया बिना भाई भाभी नै घूरण लागी। इण माथै कोई गौर नीं कर भाभी आपरी रौ मे बोली ही- बाइसा अठै तो पामणी ज्यू रहणो पडैला। थारा इस्या खारा बोल आज सुणू ना काल।

इण पै रतन बोल्यो हो - हुयो सो हुयो। गीता थारी भाभी सू थू माफी माग लै।

जे नी मागू तो।

तो थन्नै ई जावणो पडसी।

कठै ?

सासरै। खुद रै घरे।

रतन कमरै सू बारै निकळग्यो हो। भाभी मुळकती बाथरूम मे बडगी ही। गीता बावळी ज्यू जोवती रैयी। रीस में साडी उतार फेंक दी ही। बिना साडी ई आपरै कमरै मे आयगी ही।

'बेबी! काकी री आवाज सुण गीता रै माय चालती फिलम तूटै अर वा बारणै दिस्या जोवै। अणबोली आ र पलग माथै बैठै। मोह भग री पीड घणी ऊडी हुवै ठेठ अतस नै ई बाळ नाखै।

बेबी बुरो नीं मानै तो हेक बात कैवू। - काकी पलग खन्नै स्टूल माथै बैठ'र मीठी बोलै।

'काकी थारी बात तो म्हारै सिर माथै पण भाई-भाभी कई चावै है ? म्हारै सागै इसो ओछो बौवार ? ' गीता गळगळी हुयोडी काकी री गोदी मे पड जावै।

आइज तो बतावणो चावू। बेटी बखत रै मिजाज नै पिछाण। ब्याव रै बाद सासरो ई बेटी रो निजू घर हुवै। जिध छोड बूईजा आपरै घरै। उठै ई मान मिळैला। काकी पलग माथै बैठ र कैवै।

काकी री बात रो असर हुवै। चुपचाप सुणती रैवै। फेर होळैसीक फुसकै- काकी थू तो जाणै ई--।

काकी बिचाळै ई बोलै- जाणू, चोखीतरा जाणू, पण जवाईराज नै थू ओळख कोनी सकी। थारै सासरै वाळा घणा हेताळू है। ज्यू ठाकर ठिकाणै आच्छा लागै त्यू परणी आपरै सासरै। भाई-भाभी री बाता सू सीख लै बेटी। ओ तो हुवणो ई हो। दुनिया रो दस्तूर कठै मोडो कठै बेगो।

काकी सचमुच म्है सू ई भूल हुई है।

बेटी हुई जिको हुई। अबै समझदारी इयेमे है कै टैमसर भूल नै सुधार ली जावै। कवरसा उडीकै है बूई जा बेटी। कार री सैधी आवाज सुणीजै। काकी उठ र नीचै उतर जावै।

गीता रो मन काकी री बाता सू घणो हळको हुवै। वा मैसूसै कै उणरी दीठ उणरो नजरियो जूनो चोळो उतार नवो धारण कर रैयो है। भावनावा रो रैलो भला कितोई बडो क्यू नी हुवै जथारथ रै धूडै मे लाम्बो कोनी चालै। वा गोखै के भावनावा रिस्ता सू अवस जुडी थकी हुवै पण हर रिस्तै री अपणी-अपणी मरजादा हुवै सींव हुवै।

वा उठै पाणी पीवै अर पाछी सोफै माथै जा र पसर जावै। हेक ऊडो निसासो नाख आख्या मीच लेवै। आज तीन बरसा रै बाद गोपाळ री ओळू

आवण लागै। गीता री बद आख्या रा सामै गोपाळ उणरो छोटो घर-परवार माजी अर मनु रा चितराम उजागर हुय जावै।

गीता रै वास्तै बाबूजी गोपाळ नै पसद कर्‍यो हो। गोपाळ भण्यो-गुण्यो फूठरो छोरो। गीता रै भी चित्त चडग्यो हो। धूमधाम सू ब्याव वियो। वा सासरै आयगी। थोडा दिन तो मजै मे कटिया। पछै जथारथ आपरो रग दिखावण लागो। ब्याव मस्ती रा रग बेगाई फीका पड दुनियादारी रै असोवणै रग मे अलोप हुयग्या।

गोपाळ घणी जुगत करी पण अफसर री जागा मामूली क्लर्क ई बण सक्यो। बडै घर री जायी नै ओ किया सुहातो। हेक क्लर्क री लुगाई मे उणनै आपरो भविस नास हुवतो लखायो। वा माय री माय घुटीजण लागी। हीण भावना सू उणरो मन अपणायत रो गेलो ई बिसरग्यो। गोपाळ रै घर मे पइसा री जरूर तोटो हो पण प्यार रो अखूट भडार। गीता नै तो सिरफ तोटो ई दिखतो। भडार उणरै किण काम रो।

गीता नै आज अनुभव हुवै कै उवै मा अर भोळै देवर मनु रै सागै कितो अन्याव कर्‍यो है। मा कित्तो खयाल राखती। मनु पिण जान छिडकतो। पूरै घर री आ ई कोसीस रैवती कै उवैनै कोई कस्ट नीं हुवै। पण वा निरलज धागैली प्यार रो मोल नीं जाण सकी। ममता अर प्यार रै एवजै दिया करती कडवा बोल के व्यग रा तीखा तीर। गीता रो रू-रू कैवण लागै- रग है उण घणसई मा नै रग है ममता री मूरत नै जिकै कदै ई बुरो कोनी मान्यो।

गीता मन ई मन मा सू पाव धोक करै। बाथा घाल चिपक जावै। मनु रो लाड करै। गोपाळ सू माफी मागै। अपराध बोध मे गळगळी हुय जावै।

गीता री बद आख्या नै पैलै वाळी गुफा पाछी दीखण लागै। अधार घुप्प। मारग री ठा नी पडै। पण दूजै ई छिण गोपाळ लालटेन लियोडो हेला पाडतो दीख जावै। वा दौडती उण खन्नै आवै। वा गोपाळ री बाह पकड़'र साथै चालै। चाइजतो मारग लाध जावै।

गीता सोचै कै मारग तो गोपाळ पैलै भी बतायो हो पण उण माथै वा चाली कठै ? मारग तो इसो ऊधो झाल्यो कै सासरै सू पीरै पूगगी। प्यार री दुनिया सू नाठ र पइसा री दुनिया मे। उवै पइसा री दुनिया ई तो आजै करारी थप्पड जडी है। गाल माथै नई अतस माथै। भाई-भाभी री तिरस्कार भरी

थप्पड। गाल माथै तो गोपाळ पिण मारी ही थप्पड सागीडी पण प्यार रो सबक सिखावती थप्पड। पण उण टैम थप्पडा रो गणित आवतो कठै हो गीता नै।

थप्पड री सोच रै सागै-सागै गीता नै थप्पड़ वाळी घटणा री भी याद आ जावै। अेकर गोपाळ रै साथै वा दावत मे गई ही। पीछै मा पडाखिया सू खिर र बेहोस हुयगी ही। मनु दौड'र डाक्टर नै तेड लायो। डाक्टर मा रै इजीसण लगायो अर कीक दवावा लिख दी। डाक्टर री फीस रा पइसा तो मा री पेटी में मिळग्या पण दवा रै वास्तै कठै? अचाणचक मनु नै याद आयो हो कै भाभी अलमारी माथै डब्बी मे पइसा राख्या करै।

मनु कमरै में आयो अर ज्यू ई डब्बी उतार खोली ही कै था कमरै मे घुसगी ही। मायलो सीग देख'र उवैनै सक हुयग्यो हो कै मनु री नीयत चोरी करवा री है। कई पूछयो न गाछयो मनु रा झींटा पकड र दो-चार थापा-थप्पडा री जड दी ही। गाळया री तो जाणै झडी ई लगा दी ही। पूरी भडास निकाळी ही। हाको सुण गोपाळ भी माय आयग्यो हो। मनु रोवतै-रोवतै सारी बात सुणाई ही। कुण सुणै या तो खार खायोडी ही।

गोपाळ जद मा री हालत अर मनु री बात देखी-सुणी तो मनु नै छाती सू लगायो हो अर गीता नै समझावण रै सुर मे धीमी फटकार दी ही। उण बखत उवैरै बाकै सू मा अर मनु रै ओटया भूण्डी गाळया बरसी ही। सदा सान्त रैवणियै गोपाळ उवैरै गाल माथै सागीडी थप्पड झाटकी ही।

गीता सोचै है कै उण थप्पड सू जे चेतो आजातो तो कित्तो चोखो हुवतो। उणरो हाथ अनायास ई गाल नै सहलावण लागै। गोपाळ री थप्पड वाजिब ही। पण उवै उणीज थप्पड सारू गोपाळ नै कित्तो बगोयो हो। हाकाहूक करी ही। छेवट सासरै री चौखट उळाग पीरै आयगी ही। उणनै घिरणा अर अळगाव रो मारग त्यागणो हो पण उवै तो घर ई त्याग दियो। घर जिणनै प्यार रो मिंदर कैयो जा सकै।

गीता नै आज बाबूजी माथै पण रीस आवण लागै। रतन भैया नै भी गुनैगार गिणै। इता दिन क्यू रोक राखी। भेज देता पाछी। ना करती तो समझावता ऊंच-नीच बावडता फेर ई नीं मानती तो धक्का दे र बारै काढता।

गोपाळ रा केई सनेसा आया हा। मा अर मनु खुद तेडो ले पधार्‌या हा। गोपाळ प्यार री भीख सारू झोळी पसारी ही खुद अठै आ र। पण उवैरो तो बस हेक ई जवाब हो- थासू म्हारो कोई रिस्तो कोनी।

गीता नै अबै अैसास हुवण लागै है कै रिस्ता कोई कच्ची डोरी कोनी कै खीचता ई तूट जावे। अै तो सासा रै अटूट धागा सू गूथ्या थका हुवै। कैवण सू तो आ नी बणै अर नी खतम हुवै। अै तो जोग री दैण हुया करै। वा नै लागै कै गोपाळ सू उणरो रिस्तो जलम-जलमातर रो है। वा खुद नै ई पूछण लागै कै उणनै कई हक हो हेक सुखी परवार मे विस घोळण रो। उणनै कई अधिकार हो गोपाळ री जिन्दगी मे काटा उगावण रो।

गीता पस्चाताप री अगनि में झुलसण लागै। मा अर मनु री हर आवण लागै। गोपाळ री ओळू मे हींयडो भर-भर आवै। मन री अमूज मिटै तो मूडै चमक विछै ई। जद हरख रा साज सजै तो मनडो नाचै ई। जद प्यार झबोळा मारै तो होठा सू झरै ई। गीता गुणगुणावे - म्हानै आवै पिवजी याद जाऊ रे जाऊ सासरियै।

हॉ बेटी पिवजी री ओळू इसीज हुवै है। आ काकी है। गीता री सुध लेवा नै आई ही। उवैरो मन भी कठै ठाइयेसर हो।

अरे काकी अठै काई करै। थाळी पुरस ले आ। गजब री भूख लागी है। -ओ सुण र काकी समझ जावे कै गीता री मायली धुखण बुझगी है। वा हरखती बारै निकळ जावै। नीचै उतरती सोचती जावे कै गीता बेबी नै सही अकल आयगी है। दुनियादारी रो साच स्यात उणनै लाधग्यो है।

गीता उठै। खिडकी खोलै। ठण्डो वायरो घणो चोखो लागै। इणी टैम पाडोसण गोपी दादी रो तकिया कलाम सुणीजै- म्है तो गिरधर रै घर जास्यू। गीता नै अै आज सुहावणो मनभावणो लागै। रोज री तरा करडी रीस कोनी आवै। दादी तो जाणै उवैरै मन री बात कैय दी हुवै। उवैरो गिरधर तो गोपाळ है। दादी रै सुर मे वा भी गावै- म्हैं तो गिरधर रै घर जास्यू।

काकी जद थाळी ले र आवै है तो गीता उण सू चिपक'र होळैसीक कैवै है- माई री म्है तो गिरघर रै घर जास्यू।

ooo

मायत

माया बरसाती नाळै ज्यू रीस मे उफणती घर सू बारै निकळी। आसै-पासै रै माहौल सू बेखबर। रीस मे दूजा री कठै सूझै। फदाफद डाका भरती कार ताई पूगी। पूरै जोर सू झटाक आडो खोल्यो अर माय बडगी। उत्तै ई जोर सू आडो बन्द पिण कर्‌यो। झटका सू कार धूजती-सी लागी जाणै डरगी व्है। कार डरी के ना ओ तो कार ई जाणै पण आखोई घर हेक अणजाण डर सू अवस ई छावकीजग्यो।

नागण ज्यू फुफकारती माया घर सामी जोयो। मदन आवतो नी दीख्यो। रीस बधी। रीस इसो जादू कै दिल-दिमाग माथै चड बोलै। रीस रै हुकम सू माया हथाळी सू होरण दबायो। होरण सू निसरी हेक अणखावणी चीसाड। चीसाड इसी कै पाडौसी खीच्योडा घरा सू बारै निकळ आया। चीसाड इसी कै आखै घर मे हेक ओरू डबको पसरग्यो।

मा कद री ऊभी ही बरामदै मे खभै री आड लियां। चीसाड सुण पेभली बगी हुयोडी छेकी-छेकी आ र मा सू चिपकगी। पण छानै-छानै कार नै जोवै ही। आगणै ऊभो छोटियो मगू घडीक कार सामी जोवतो अर घडीक मा सामी। पण कई नीं समझ्यो। मा रै मायली धुकधुकी कुण जोई। नी बेटै अर नीं बहू। घर छोड र जावणो हो तो चुपचाप बुवा जावता। यू तोतक रासो कर जग हसावणी किण वास्तै।

होरण फेरू चीस्यो। मदन रै वास्तै हेलो हो। कई हुयग्यो है मदन रै। डोफो साफ डोफो। बुदबुदाई तो माया ई ही पण अै सबद माया रा कोनी हा। उणरै मूडै माथै रीस रै मडियोडै चितर रा हा। रीस तो गजब री चितेरण।

की रा की माड देवै। कोई पिण अछूतो कोनी रैवे। तन मन वाणी सै माथै माड नाखै आडा-अवळा माडणा।

होरण चीस चीस नै फिर चीस्यो। आ चीस मदन मे छेकाण भरी। हाथ मे सूटकेस लियोडो घर सू बारै निकळ्यो। मा आड छोड र बारणै खनै आई। मदन धोक लागो। मा उणरै माथै आसीस रो हाथ धर्‍यो। मा डुसका मे अळूजगी तो पेमली पण रोवण ढूकी। मदन पेमली नै आपरै सरीर सू चिपकाई अर मूडै माथै नेह रो हाथ फेरण लागो। पेमली रो रोवणो औरू तेज हुयग्यो। माया थोडी ताळ तो जोवती रैयी। पछै रीस रै कैवणै जोर सू होरण दबायो। अबकी घणी लाम्बी चीसाट। मदन जाणग्यो कै ओ आखरी अेलाण है। छोटै भाई मगू माथै फगत निजरा ई नाखतो वो कार दिस्या खाथो-खाथो लपक्यो। माया ओ देख कार स्टार्ट कर दी ही। मदन लारली सीट माथै सूटकेस नाख्यो अर खुद माया रै पागती बैठग्यो। कार धूवो काढती फुर्र उडगी। नीं हाथ हिलिया अर नीं टाटा विया। सगळा पैली दाण ई जोयो हो मदन रो इस्यो जावणो।

पेमली अजू डुसकै चडयोडी ही। मा ओढणी रै पल्लै सू उणरी आख्या पूछी। माथे पै धीजै रो हाथ फैरयो। बोली- जा बेटी पाणी पी लै। पेमली घर माय बडगी। मा फाटयोडी धोती बिछा उवै माथै पापड उरला करण लागगी। मा री दीठ मे मदन रो बेबखताऊ फैसलो भूडो तो है ई साथै मारको पिण सागीडो है। वा सोचण लागी कै घर माय हेक तरफ तो छोटी बैन रो ब्याव थरपीजै अर दूजै खानै बडो भाई यू नास जावै। मदन इतरो ई गोख कोनी सक्यो कै उवैरी हरकत रो भोळी पेमली रै कवळै हियै माथै काई असर पडसी। मा तो आज ई गणेस थापणा रो नूतो बिरादरी मे दे आई है। आदीतवार नै बरात आसी। लोग काई कैसी। मा ज्यू-ज्यू सोचै वा बेखाखी हुवती जावै।

मा पापडा सू खाली तगारी ले र माय बुईगी। पण मगू हालताई आगण मे ऊभो हो घट माय घडतो अर भागतो। उवैरै दिमाग मे पिण उथळ-पुथळ मच्योडी ही। भाई-भौजाई रै आवण सू वो कित्तो हरख्यो हो। उचारा दौड-दौड काम किया करतो। भौजाई रै हेला री तो उवैनै उडीक ई रैती। पण मदन भैया आज कई कर दीधो। जावती बेळा लाड तो अळघोज रैयो लाड रो हेक बोल तक बोल्या कोनी। इसो तो कदैई नी वियो। कालै आया जद किती बाता

करी ही। कैवता हा कै लाडडलै मैगू नै सैर मे भणावाला। म्हारो मैंगू, देख लीजो जज बणैला के कलक्टर बणैला। पण ओ काई ? किस्यो खेत अर किस्यो धान बस कोरी बाता रा महादाण।

मगू नै मदन लाड मे मैगू कैय र लडाया करतो। बुलावण रो अदाज भी न्यारो ई हुवतो। पण आज तो मैगू रो फेगू कर नाख्यो। मगू नै रघु री कैयोडी बाता याद आवण लागी। उवै ओकर कैयो हो कै सैर जावणवाळा री मत फुर जाया करै। वै घरवाळा सू नातो ई तोड नाखै है। मगू नै रघु री बात रो पैली मरतबा पतियारो हुवण लागो। मत जरूर फुरगी है जद ई तो मदन भैया अणबोल्या बईर हुयग्या हा। पण दूजै ई छिण मगू ने ओ भी लखायो कै हुय सकै वै नाराज हुयग्या व्है।

मगू नाराजी रा कारण सोधण लागो। उवै रातै लीलडी रा बोर उवानै कठै दिया हा। वै मागता रैया अर उवै सगळा बोर भाभी नै आप्या हा। लीलडी रा बोर घणा चावा घणा मीठा। मदन भैया गाव मे बडताई इणरी फरमाइस किया करता। रातै मगू हासै-हासै मे भैया नै बोर नी दे र भाभी नै पकडाया हा। पण भाभी हेक करी ना बे लीलडी बोरा नै बारी सू बार नाळी मे नाख दीधा। सुबै जद मगू नाळी मे बोर देख्या तो उवैरो मूडो तेड खाग्यो हो। उवै भाभी रै आगै रीस प्रगट करी ही। उण टैम भैया अर भाभी मे घणी चकचक हुई ही। मगू नै पछतावो हुवण लागो कै वो नी बोर लातो अर नी रासो हुवतो। अर नीं भैया-भाभी यू नाठ जाता।

मगू हेक अपराध बोध सू कटीजण लागो। मगू रै खींजे मे कीक बोर हा। उवै झटाक सू बारै काढया अर रीस मे भीत माथै मारण लागो। बोर आगण मे बिखरग्या अर वो गेलै ज्यू उवानै पगा सू कुचळवा लागो।

मगू, ओ काई करै। गैलो हुयग्यो है काई ? - आ मा ही। मगू रा पग थमग्या। मा सामी जोयो अर मूडो फोर लियो। मा उणरै हिंयै री धुखण समझगी ही। खनै गई अर हेत रा बादळिया बरसावती उणनै छाती सू लगायो। मगू री आख्या डुसका रै सागै झरी तो लाड सू थेपडियो। नी मगू बोल्यो अर नी मा। दोनू री चुपी ई घणो-घणो कैयो। दोनू ई हेक-दूजै री अणकही नै पूरी-पूरी समझग्या। दो‌ू री आख्या सू ढळकती बूदा री भाषा सगळा थोडाई समझ सकै?

लाल धीजो राख। भाई-भाभी आजै गया है तो कालै पाछा आजासी। इया जी छोटो ना कर।

मा कूडो धीजो मत दै। हमै वै कदै ई कोनी आवै। - मगू डुसका भरतै कैयो पण मा इणरो काई पडूतर देती। वा जाणै ही कै मगू साच कैवै है। मा थोडी रुक र बोली- अरे हाँ म्है तो भूल ई गी। जा बेटा सेठजी काका नै तेड ला। कैजै के बापू रो जी सोरो कोनी वो खुद आवण सू लाचार है। जरूरी काम है। सेठजी मगू रै बापू रा खास बेली। जद ई तो मा कुए नै तिरसै ग्यनै तेडयो हो।

'जावू मा। -मगू आगण सू बारै निकळग्यो। मा थोडी ताळ उणरो जावणो देखती रैयी। फेर कमर मे हाथ दिया धीमी चाल सू बरामदै में आई। सूख रैया पापडा मे फोरसारी करी। गोपी काकी रै घरै जावण री सोची ही कै माय सू खसू-खसू री आवाज आवण लागी। मा समझगी के मगू रै बापू नै दमै रै दोरो पाछो आग्यो है। हेक अमूझ रै सागै मा माय बडगी।

किती वार समझाऊ। यू तसियो ना किया करो। - मगू रै बापू नै पाणी री गिलास झलावती मा बोली ही। पछै माचै माथै बैठगी अर धणी री छाती माथै हाथ फेरवा लागी। वा सोचण लागी कै कळजुग मे सैग उल्टो ई हुवै। प्रतख देखल्यो मगू रै बापू रो नाव जरूर धनजी है पण धन कठै? नाव उणरो ई लिछमी है पण लिछमी रा अठै दरसण कठै? मायत ऊधा नाव क्यू राखै?

थोडीक ताळ मे धनजी री खासी थमगी। पण मूडो फेट खायोडो ज्यू दीखतो हो। बेचैनी रा अे नाण कोई पिण पिछाण सकतो। जी दोरै रा भाव कोई छाना रैवै। लिछमी तो भावा री जबर पारखी। टच लेती कैयो- 'गाववाळा नै सीख देवणियै नै काई सीख देणी पडसी। फेर थोडी रुक र रोवती ज्यू बोली- घर मे ब्याव मडयो है अर थै माचै पड्या हो। इया किया पार पडसी मगू रा बापू। धनजी मून कोनी तोडी। लिछमी रै मूडै माथै मींट नाखी। उणरी आख्या पाणी सू लबालब जोई। लिलाड माथै मुकियाँ री मारतो बोल्यो- ओ काई हुयग्यो रे लिछमी। काई हुयग्यो।

लो बापू, उकाळो। पेमली बैदजी रै बतायै मुजब उकाळो बणा र लाई ही। पेमली रा बोल सुण धनजी आपै मे आयो। वो होळै-होळै उठियो अर भींत

रो टेको ले'र बैठग्यो। उकाळो पीधो। बाको खारो वियो तो डब्बी सू हेक पतासो काढ र बाकै मे घाल्यो। पण कई नी बोल्यो गुमसुम ई रैयो।

चुपकारी तोडती लिछमी बोली- इया हिम्मत हारसो तो नेवडग्यो काम। कींक तो भगवान रो भरोसो ई राखो। फेर इया-उवा देख झीणै सुर मे फुस्फुसाई- थोडो मातादीन नै तो जोवो। लाई रै कठै है पूत मदद करणियो। कींकर ई कर्‌यो पण तीन-तीन छोरया रो ब्याव तो कर्‌यो ई है।

ओ तो साच है पण ।

'पण काई मातादीन रो साच अपारो साच कोनी बण सकै ? हियै नै थ्यावस देवा सारू अपा पिण समझ लेवा कै अपारै भी कोई पूत कमावणियो कोनी। अपानै ई सैग करणो है।

'कैवणो सोरो है पण समझणो घणो दोरो है मगू री मा ! मदन सू कित्ती उम्मीदा ही। कित्ता सुपना जोया हा। सगळा तूटग्या सगळा ई बिखरग्या। माटी में रळग्या रे लिछमी। धनजी रै सबदा मे पीड ई पीड ही।

'सुपना ई तो तूटया है। कोई पुरसारथ तो कोनी तूटयो। सुपना रो काई हेक तूटै तो दूजो बणै। अजा तक अपारी घोडी थाकी कोनी। अपा ढोळै तो कोनी बैठा।

थारी बात सोळै आना साची। पण अबार सगवड करस्या किया।

'इणमे काई उधार री मा मरी कोनी। अबार सेठजी सू रिपिया उधार ले लेस्या। धीरै-धीरै चुका देस्या।इत्ती तो अपारी पैठ है। पेमली रो ब्याव काई मदन रो रो मोहताज है। लिछमी रो मूडो हेक लूण्ठै विसवास सू दमकण लागो। इयै विसवास धनजी रै मन मे पिण विसवास रो दीयो जगायो। विसवास री ओ ई तासीर करम नै पगा किया करै।

हेक ऊडो हूकारो कर धनजी बोल्यो- बात ठावकी है। पेमली रो ब्याव गीता-रीता सू करस्या।

तो पछै उठो कणकणा हुवो। सेठजी आवता ई व्हैला। बेली सू किसो लुकाव। लिछमी नै पूरो पतियारो हुयग्यो हो कै धनजी री मायली हूक मादी पडवा लागी है। उवानै कींक सावळ देख म्है आऊ कैती वा दूजी ओरडी मे बडगी।

धनजी टेकै सू बैठो रैयो। आख्या मींच लीधी। सोचण लागो कै मगू री मा कित्ती ठठक वाळी है। जिको धार लै वो पूरो ई करै। लोगा कित्ती समझाई ही पण वा मदन नै भणवा सारू सैर भेज ई रैयी। रोभा मे जी र घर-गिरस्थी ठा नी कीकर चलाई पण माठी मदन नै पइसा री तगी कदै ई कोनी आवण दी। मदन पण आपरी मा रै विसवास नै आच कोनी आवण दी। भणाई मे हरमेस अव्वल रैयो। सैर सू जद ई गाव आवतो तो बस हेक ई बात किया करतो कै बापू अबै थोडा ई दिना री तो जेज है पछै थानै आराम ई आराम करणो है।

धनजी रो मन खाटो हुयग्यो। पण कठै है आराम ? मदन तो उल्टा हवचव ई लेलीधा। धनवाळा गरीबा रै सोरप रा दुस्मी। समाज रा औ बडा केवाऊ रईस लोग निजू स्वारथ रै वास्तै कई नीं करै ? गरीबा नै कठै सुख-चैन सू रैवा दै। अमीर तो बस लोगा नै चूथ्या ई करै।

सेठ रतनलाल भी तो आइज कर्‌यो। मदन नै घर-जवाई बणा र उणरा सगळा सुपना ई तोड नाख्या। मदन री बहू कदै ई सासरै री कोनी बण सकी। धनजी सोच मे माथो लोडतो अणबोल्यो ई बोल्यो हो कै पैला कदै-कदै आवण रो सीगो हो पण आज तो वो ई खतम हुयग्यो। मदन री करणी माथै फेरू विचारतो धनजी कसमसी पीड मे फुसकियो- वाह रे मदन ! केहडी आच्छी करी। भणियो पण गुणियो कोनी। निरमोही थारी मा घणा दुख ।

बापू, सेठ काका थोडीक ताळ मे आ जासी। - औ मगू हो। धनजी आख्या खोली विचारा मे बिचाळै ई विराम लागो। उथलै मे माथो हिलायो। ओ देख मगू गयो परो। तकियै रै नीचै सू पोतियो लीधो। सीधो-सावळ कियो अर माथै पै ऑटा देवण लागो। ऑटा रै सागै वो पाछो मन सू बाता करण ढूको। मन मे तो बस हेक ई मूरत देखीजै- मगू री मा री। जीवट वाळी बडो मन राखणवाळी। सुभिमान तो जाणै रू-रू मे। धनजी जद पिण मन माय लिछमी रै ऊजळै गुणा रो बखाण करण लागै तो उणनै बछबारस वाळी घटणा री पड जरूर दीखै।

उण दिन बछबारस ई ही। घर मे घूघरया बणी ही। मदन ई आयोडो हा। कोई तीज-तिवार चूकतो कोनी वो। दोपारा सेठ रतनलाल अपणी बेटी माया रै सागै घरै आया हा। सेठजी मदन रै बारै मे उणरै भविस रै बारै मे

साथै ई आपरी धन-दौलत रै बारै मे गिरी बाता करी ही अर छेवट रईसपणै री पळपळाट विखेरता मदन नै घर-जवाई बणावा रो आपरो मन्सो होळेसीक सरकायो हो।

सेठजी रै कैता ई धनजी रै जाणै झाळा लागगी। रीस मे कीक आवळ-कावळ पण बोल्यो। सेठजी री इज्जत रा घणाई काकरा कर्या पण लिछमी लोठी खुद रो आपो कोनी गवायो। माय लाय जरूर लागी। ओ तो लागणी ई ही। बाता मे लपटा री भणक बारै कोनी आवण दी।

सेठजी रो रिपिया रो पुडीको रीस मे पाछो करती वा बोली ही- सेठजी अठै सौदै री नीं रिस्तै री बात हुयरी है। रिस्तै मे रिपिया रो कई काम। म्है जाणू कै मदन माया सू ब्याव करणो चावै। म्हानै कोई अेतराज कोनी। अबै रैयी घर-जवाई बणावा री बात। मदन रै भविस रै खातिर म्हानै ओ पण मजूर है। उण वखत लिछमी री गीली आख्या ई बता रैयी ही कै वा आपरै हिंयै माथै भारी भाठो नाख र हामळ भरी है। उवै आपरा सगळा सुपना हेक ई छिण मैं किचर नाख्या हा मदन री खातिर। धनजी रै होठा सू निकळग्यो - रग है लिछमी थनै।

धनजी नै चोखी तरै याद है- लिछमी मदन अर माया रै मूडै माथै लाड रो हाथ फेरता बस इत्तो ई कैयो हो- बेटा कदे-कदे म्हा लोगा री सुध ले लिया करजै। घर सू, गाव सू नातै रा तातण मत ना तोडजै। फेर हेका हेक उठ'र ओरडी मे वडगी ही। आख्या रो पाणी मिजमाणा रै सामी किया ढोळती।

धनजी रो बेली गोपी सेठ अजू आयो कोनी हो। धनजी पाछो ओठो ले र आडो हुयग्यो। उवैरै मन माय बस हेक ई बात ही लिछमी री। उवैनै पूरो पतियारो हुयग्यो हो कै लिछमी इण अबखी मे जरूर पार पडासी। इणी गतातूळ मे उवैरै होठा सू फेर बोई बोल फूटया- रग है लिछमी थनै।

यू काई बडबडावो। घणी करी म्हारी सोभा। ऊचा उठो सावळ बैठो। सेठजी आवण वाळा ई है। लिछमी धनजी री बडबडाट सुण र उठै आयगी ही।

उठू। पण थोडी चाय तो बणालै।

लिछमी रसोई मे आयगी। चूलै माथै चाय चडा'र बैठगी। तन-मन सू थाक्योडी। चाय उकळै ताई री नीराती। नीराती सू बैठी तो मन मे केई गोटा रा ताणा-बाणा सरू। हियै सुबै री बहू वाळी पड बाचणी चालू करी।

लिछमी खुद सुबै री चाय बहू-बेटै नै दे आया करती। आज सुबै पिण वा ई देवा गई ही। ओरडी में बडवा सू पैलाई उवारी चकचक सुणीजी। लिछमी रा पग बारै ई थमग्या हा। ध्यान लगा र सुणवा लागी ही।

मदन म्हू तो तग आयगी थारै घरवाळा सू। थू जाणै ई है कै म्हारी चीजा नै कोई हाथ ई लगावै तो म्हनै कितो खारो लागै।

कद लगायो म्है। अखबार मे निजर गडाया ई मदन बोल्यो।

थारी बात कोनी। पण थारी ओ मूडै लागी पेमलडी है नीं म्हारी मनपसद कासा सिल्क वाळी साडी ले र नाठगी। घणी मागी पण बेसरम पाछी ई कोनी दी।

अरे काई वियो। थारी छोटी नणद है अर फेर थारै साडिया रो काई तोटो। मदन गभीर कोनी वियो।

अठै तो लूट मच्योडी है। कित्तोक लुटावा ? सगळा ई लाग्योडा है बस चूथण मे सिगता-लिगता कठै रा। मदन खरा र माया सामी देख्यो पण चुप रैयो। घर-जवाई इण सू बधीक काई कर सकै। साची कैवत है- रोटी बेळा में सग समझै।

बहू रा भूण्डा ओळमा सुण बारै ऊभी लिछमी माथै जाणै गाज खिरी। काना मे जाणै कळकळता तेल पडग्यो। पैली तो सोच्यो कै माय जा र बहू री जुबान खींच लेवू। पण दूजै ई छिण वा आप माथै कटरोल करयो अर खखारो खाय माय बडगी ही। मा नै देख बहू री चकचक बन्द जरूर हुयगी पण तणाव रा अैनाण मूडै माथै साव देखीज रैया हा। स्टूल माथै चाय री थाळी धर लिछमी नरमाई सू बोली ही- बहू, ओछा बोल नी बोलणा। पेमली लायण ओ क्यू गोखै कै साडी लेवण सू भावज बेराजी हुय जासी। छोटी नणदा यू हसखेला करया ई करै। धीजा राख वा साडी पाछी कर देसी। माया चुप बैठी रैयी। मदन बात नै पलटो देतो बोल्यो हो-

मा सगळा इतजाम तो हुय रैयो है नी।

'हा बेटा इंतजाम रो काई। अटी मे दाम तो बपोरै ब्याव।

ओ तो है ई। चिंता ना कर। पइसा री सगवड तो ।

माया री चाय पीवण री अजीब सुरडाट सुण र मदन री बात बिचाळै ई तूटगी ही। दोनूं री निजरा माया दिस्या घूमगी। माया रो तणाव बध रैयो हो। इणनै अणदेख्यो कर लिछमी उतावळ मे बोली ही-

'पइसा री सगवड तो करणीज है बेटा। थोडो-घणो तो थारै बापू कर्‌यो ई है। बाकी तो थनै ई ।

जरूर करस्यू। कैयण नै मदन कैय दीधो पण उणरा बोल सकोच मे सागीडा लथ-पथ हा। लिछमी री पारखी निजरा सू ओ किया छानो रैतो। उणनै पूरी पिछाण ही घर-जवाइया री बेबसी री। वै लोग कद हुवै है आपरी मरजी रा मालिक।

लिछमी चाय मे कित्तीक जेज है। धणजी रो हेलो सुण र लिछमी आपै मे आयगी। देख्यो चाय मे अजू ताई उकाळो ई कोनी आयो। आवतो पिण किया। छाणा तो धुधवा लाग्या हा। बा चूलै नै पाछो चेतन करयो। उकाळै री बाट जोवा लागी। सुवै बहू री कैयोडी बाता री तीखास हालताई काळजै मे मैसूस कर रैयी ही। पइसा री सगवड री बात सुण र बहू ढोल ज्यू फाटी ही-
पइसा पइसा। कित्ता ई देवो पण इया भिखारिया री झोळी भरीजै ई कोनी। पइसा ।

माया । मदन बस इतरो ई चीख्यो हो।

'बहू। दिमाग ठिकाणै राख। सोच-समझ र बोल्या कर। अैहडा ओछा खारा बोल सोभा कोनी देवै। धनपतिया रै घरै काई इस्या ई सस्कार मिळै। लिछमी रो सुर घणो करडाई रो हो।

सोच-समझ र बोलू हू। म्हारै सस्कारा री बात छोडो पैली आप ताणी जोवो। बेटी नै रेसमी साडया चइजै। बेटै नै इतर री सीसी दाय आवै। धणी नै मफलर चोखो लाग जावै। खुद नै रिपिया भावै। सगळा ई चीचड लोई चूसणिया। - माया बफार काढी ही। लिछमी रो मूडो फक्क पडग्यो हो। उवैरै मनचित्त मे कदै ई कोनी आयो कै बहुवा पिण इया माजनो पाडै है। मदन नाड नीची किया चुप ई रैयो। जमीरहीणो काई बोलै।

मदा माथै म्हारो भी तो कोई हक है। भैंच्यौ कोनी उथैं। अर पछै मदा रो कोई फरज कोनी। - अे कैवणियो धाजी हो। हाको सुण र माय आयग्यो हो।

लिछमी उठी कोनी बैठी रैयी जाणै मोपो भाव म हुवै। मूडै माथै सुभिमान रै तेज री दपट। फेर हेकाटेक स्टूल सू झटाक उठती वा गरजी ही- वहू। घणो गुमेज मत कर। घरागृजी थारी जे म्हानै आवळ-कावळ बोली तो। थारी चीजा थारा पइसा थारै रानै राख। सुणलै म्हा लोग भागोडै ऊठ ज्यू बेवस कोनी जिको चारै री ओठी सामी लालच री दीठ सू लगोतार जोया करा। खबरदार जे म्हा नै भिखारी कै चींचउ कैयो तो। ओ लै थारो मफलर। लिछमी धाजी रै गळै सू मफलर खींच र मदा माथै फेक्यो हो।

मदा बुत ज्यू बैठो रैयो। धाजी पण गोधम रासो देख बगनो हुयग्यो। लिछमी री रीसाळी फुफकार अजू चालू ही। सुभिमान रै सुर मे बोली 'रईसजादी इत्तर री सीसी रेसम री साडी अर दूजी कई-कई चीजा है ? याद कर सगळी बता दै। म्हानै थारो कई नीं चइजै। थारै आवण सू पैला भी म्हा जीवता अर आगै पिण जीवता रैवाला। लिछमी रीस मे तप्योडी बारै निकळगी ही। लारै-लारै धाजी पिण निकळग्यो हो। मदा माऽऽऽ मा करतो ई रैयो हो। बारै जावण लागो तो माया झाल लीधो।

मगू री मा ! किण सोच मे फस्योडी है। देख तो सरी आखी चाय दुळगी उफण र। धाजी रसोई मे आ र कैयो।

अरे ओ काई। म्हनै तो ठा ई कोनी पडी। धाजी कोई कानै कवा कोनी लेतो। उणसू काई छानो। वो जाणतो हो लिछमी री मायली हालत। वा कित्ती ई कडक क्यू नीं हुवै पण आखर है तो हेक औरत। नारेल बार सू कडक माय सू नरम।

थारो जी सोरो कोनी दीखै। थोडो आराम कर चाय पछै वणालीजै। धनजी लिछमी रै पागती बैठग्यो। उवैरी पुठी माथै हाथ फिरावण लागो। लिछमी रै धीजै रो बाध फाटो। फफक-फफक रोवा लागी। धाजी रै सीनै माथै मत्थो टिका र बोली- साची कैजो सुवै म्है काई खोटो करयो हो। उवैरा डुसका अजू चालू हा।

ना रे ना। मगू री मा थू चोखो ई कर्‌यो घणो चोखो। दियोडी सगळी चीजा वहू माथै नाख र थू जी सोरो कर्‌यो। रिपिया री जागा आपरा गैणा थू ई ला'र दे सकै। रग है थन्नै। थारै जिसी तो बडभागिया नै ई मिळै।

हमै बोत हुयग्यो। लिछमी आपै मे आयगी ही। धनजी सू छिटक'र आघी हुयगी। धनजी तो आपरी रौ मे ई बोलतो रैयो- देख लिछमी मदन रै वास्तै अपा ई कसट भोग्या हा। क्यू ? फरज री खातर। कुण हो मदद करणियो ? अबै मगू अर पेमली रै वास्तै अपा ई फरज निभावाला। इयारो भी अपा माथै मदन जित्तो ई हक है। लिछमी नै लागो कै धनजी विचारा रै जजाळ सू पूरी मुगति पायली है। वो असली रूप मे आयग्यो है। हेक गभीर अर पुख्तै मिनख रै रूप मे।

हॉं मगू रा बापू। बैन रै वास्तै भाई फरज भूल सकै पण मायत कोनी। पेमली रै वास्तै मदन सू आस क्यू। लिछमी रो ठसको जाग्यो। जमीर माथो ऊंचो कियो।

साची। मदन रै वास्तै कर्‌यो अर पेमली-मगू रै नी कराला तो औ अन्याव कोनी हुवै।

मायता रो तो औ ई फरज हुवै।

लिछमी राजी-राजी उठै। धनजी रो हाथ झाल उठाती बोलै- उठो घणा काम करणा है।

धनजी उठग्यो। हेकदम बोल्यो ज्यू भूलै नै कोई याद आवै- पेमलडी बेटी भाई नै साथै ले र अठै आव। पेमली सुण्यो जाणगी बापू राजी है। मगू रै साथै रसोई में आई।

आओ लाडेसर आओ। धनजी अर लिछमी भेळाई बाथ पसार बोल्या। पेमली अर मगू दौड र उवासू चिपकग्या।

उण टेम बारै सू आवाज आई सेठजी भायलै री।

अरे धनजी कठै मर्‌यो थको है।

धनजी री आख्या मे चमक आयगी। अणबोली चमक पडूतर दियो धनजी री तरफ सू- मर्‌यो तो पैला अबै तो जीवू। धनजी रसोई सू बारै निकळयो।

सेठजी घर माय आया। ओरडी मे धनजी सू घणी बाता करी। बाता मे मदन रो पिण प्रसग आयो। सेठजी नै पिण घणो दुख हुयो कै मदन बखत आया फरज सू मूडो मोड लीधो। बोल्या- कोई बात नी। जोवो मरमाळी बात तो आ है कै मायता री जिनगाणी तो फगत टाबरा सारू ई हुया करै। मायत फरज नीं निभासै तो कुण निभासी।

ᑕᑕᑕ

त्याग

हर आफिस री पिण हेक दुनिया हुया करै भलाई छोटी सीक पण न्यारी-निरवाळी छब वाळी। न्यारै रग-रूप वाळी उणरी जमी न्यारी ऊचाण वाळो उणरो आसमाण। हेक विसेख पिछाण राखै है वा। हेक अनूठी ओळखाण। जितरी आफिसा उतरी ई उणारी दुनियावा। अजीब है इण दुनियावा री बारली भिन्नता उणरै माय कोनी मिळै। इसी सगळी दुनियावा माय सू हेक जिसी ई हुवै।

आफिस री दुनिया रै सगळै क्रिया-बौपारा नै चलावण मे वा ई सगतिया प्रतख व अप्रतख रूप मे जुडी थकी हुया करै जिकी दूजी दुनियावा मे पण अधकाई मे सापरत है। इणरी भी वजै है। इण दुनिया रा कोई स्थाई वासिंदा कोनी हुया करै। सगळा ई दूजी दुनियावा सू निकळ अठै कीक समै काटण आया करै है भात-भात रै मुखौटा रै सागै। न्यारी-न्यारी सस्कृति अर सस्कारा रै सागै। हाथा मे काचा-पाका रगा री पिचकारिया लिया। पिचकारिया ई मारणी अठै रो कायदो अठै रो रिवाज।

आफिस तो आफिस हुवै। रेणु रो आफिस कोई अपवाद कोनी। इण दुनिया मे पिण पिचकारिया फव्वारा छूटै रग दुळै। केई रग- प्रीत रो हेत रो इरस्या रो व्यग रो कुवधाई रो मीत रो। जिसो अवसर विसो रग पण रगवाळै री मरजी सिरै। सगळा री मरजी कदै हेक जिसी कोनी हुया करै। कोई पोतै तो कोई पुतै। कदै हेक रग माथै केई रग पुतीजै।

रेणु कदै ई किणी रै कोई रग पोत्यो कोनी। लोगा उण माथै न्यारा-न्यारा रग पोतण री कोई कसर बाकी कोनी छोडी। कदै-कदै तो रगा री भींजास ठेठ अतस ताई चादमारी कर देती पण रेणु प्रतिक्रिया सरूप उफ तक कोनी

करती। उवै नी तो रगा मे कोई रुचि ली अर नीं रग छिडकण वाळा में। हरदम हेक हेकळपै मे हेक तणाव मे घिरयोडी ई लाधती वा।

रेणु इण आफिस मे चार बरसा सू है। आफिस री दुनिया री आ घणव्यापी रीत है कै जद कोई नवो वासिंदो खास कर कोई जवान छोरी अठै अवतरण करै है तो लोग कईक दिना तक उणरी चाळ-ढाळ आदता अर तौर-तरीका माथै गजब री दीठ राखै। पछै रागीला सवध जोडण सारू उणरै आगै बिछ जावै। दूजा भी केई तरीका तजबीज किया करै। जद कोई छोरी थोडो ई रेस्पोस नीं देवै तो चासा ले र उणरी बाता किया करै। मनगढत किस्सा बणाया करै। मतलब ओ है कै वै केई रग वापरै अर छेवट काळौ-कोझो रग री पिचकारिया मारै।

लारलै चार बरसा मे रेणु माथै केई रग दुळया हा। लाल पीळो अर काळो भी। पण रेणु आपरी मरजादा मे ई रैयी। नी हरखी अर नी बुरो मान्यो। काम सू काम राख्यो। जरूरत मुजब बोल्या करती जाणै सबदा नै नाप तोल'र वापरती हुवै। आफिस मे उणरी कोई साथण ही तो फगत मधु। मधु पिण उणरी तरा कुदरत री मारयोडी ही। दोनू रो लच साथैज हुवतो। उण टैम मधु आफिस वाळा री बाता री चरचा किया करती। उणरी पिचकारिया री कथणी करती।

रेणु जाण लीधो हो कै लोग किता कुबधी है किता स्वारथी है जे मनमरजी नी सधै तो हाण करण री पूरी जुगत करै। फट काळो ई पोतै। गोविद, आख्या मे वासना री कुटिल चमक लिया आगै-लारै घूम्या करतो तो उवै रीस मे सगळा रै सिंयाळै उणरी भूडी गत कर उणरो मुखौटो उतार फेंक्यो हो। इणरै पछी गोविन्द कैवण लागो हो कै रेणु चत्तर कॉल गर्ल है। इण रा नखरा घणा मारका है। अैहडा नाटक तो रोज ई चालता रैवै। जवानी रै उण पार ऊभा गुप्ताजी दयी जुबान सू कैया करता कै रेणु जिसी भ्रष्ट छोरया ई अमीर घरा रै छोरा नै आपरै रूप-जाळ मे फसावै है अर उवासू माल-ताल चूथ्या करै है। गुप्ताजी लुक-लुक र पिचकारी चलावता।

रेणु नै कदै तो मधु सुणावती चरित माथै काळा धब्बा छापण वाळी अैहडी ओछी बाता। कदै खुद उणरै काना मे फिकरा री भणक पड जाती। उणरै मन माय घणी बळत लागती हूक उठती। बोला री चुमण आफिस रै उपरात घर

ताई लारो कोनी छोडती। पण रेणु रै बौवार मे उणरी चलगत अर नपी-तुली मीठी बाता मे कोई बदळाव के खारास कोनी आयो। आफिस री दियोडी पीड अर उणरी कुळत दात भीच सैती रैयी पण सागै ई मुळकती भी रैयी। हर हाल में पण गमीरपणो ओढयोडो राखती।

आफिस मे रेणु धीरै-धीरै हेक रुतबो बणती गई। जिको उवैरा चासा लिया करता वै अबै उणरो बखाण करता नी घापता। लोगा नै जद आ ठा पडी कै बाप बिना री रेणु माथै छोटी उमर मे ई गिरस्थी रो बोझ पड़्यो हो तो उवांरै मन मे उणरै ओंटया सहानुभूति व प्रेमादर रा धारोला वैवण लागा हा। अबै तो रेणु माथै सगळी पिचकारियाँ हेक ई रग उछाळै है-लाल रग। अनुराग रो प्रेम रो रातो रग।

रेणु कुवारी ही। उणरै कुयारपणै नै ले र पैला आफिस मे घणी चरचावा हुवती। जिता मूडा उती बाता। बाता री जड सोधण मे कुण री रुचि ही? लोग चटखारा ले र कैवता अर मजे सारू हस-हस सुणता। पैला तो कोई लच बेळा री चरचा मे भूडै अदाज मे कैतो - रेणु बाईसा रै ब्याव रा बाजा कद बजैला।

उण टैम दूजो योलतो- 'हाँ भई ! रेणु राणी फूठरी परी रूप री रमा है अर फेर कमावण वाळी पिण है। कोई बाधा ।

बात पूरी हुवण सू पैला ई कोई बिचाळै कूदतो - 'बाधा कायरी। ब्याव करिया तो हेकै खूटै बघणो पडै। बिनब्याई तो ठाण-ठाण चरै कुण पालै। फेर सगळा बाका फाड-फाड हस्या करता।

रेणु नै इसी बाता सुण घणो रज हुवतो। सोचती कै आफिस री दुनिया में आ'र लोग घर-परवार री दुनिया नै क्यू भूल जावै है। नारी रै सत् माथै इता फीटा लाछण लगावणा उवैरै वास्तै किता घातक हुय सकै है समाज रै इण साच नै औ लोग क्यू कोनी गोखै।

अबै तो बात दूजी ही। सगळा री समझ मे आयग्यो हो बयाव नीं करण रो मरमपरसी कारण। रेणु रै बाबूजी रो हेक दुरघटणा मे सरगवास हुयग्यो हो। घर मे थोडी-घणी रकम ही वो किताक दिन चालती। रेणु नै भणाई बिचाळै ई छोड र नौकरी करणी पडी। नीं करती तो मा अर दो छोटै भाइया रै पेट नै भाडो किया मिळतो।

पछै रेणु जद ई आपरै ब्याव रै बारै मे सोचण लागती तो फट सू उवैरी आख्या रै आगै छोटै भाइया रो चितराम टग जाया करतो। उणनै लागतो कै उवैरो जीवण सिरफ घरवाळा रै वास्तै ई है। इण कारण दो-चार रिस्ता माथै तो उवै खुद ई आगळ बध र ठोकर मारी ही। खुसिया री हूस नै टूपो दे दीधो हो।

सुपनो पिण हेक अजीब चीज है। नीद मे बन्द आख्या मे दिखाई देवै अर जागतै मे खुली आख्या मे तिरणो सरू हुय जावै। मगर रेणु री साव सूखी झीला मे सुपना काई करवा आवै? कदै ठा नीं वै काई सोच रेणु रै किंवाड री साकळ खडकावता तो फगत रेणु ई नीं घर रा सगळा उवानै गेडियै री मार सू हकाळ देता। निरदई इसी कै सुपना री भ्रूण हत्या कर दिया करती।

रात मे रेणु री जद कदै ऊग उचट जाया करती तो वा मत्थै मे घण रा अणूता घा मैसूस किया करती। मन माय घावा री सागीडी टीसा रो अैसास हुवतो। रेणु तकियै मे चेहरो दबाय सोच्या करती कै मा कद ताई उणसू ई त्याग री आस करती रैवैला। वा रोजीना उणरै ई त्याग री सूई क्यू लगाया करै? अबै तो भोपू पिण बी ए कर ली है वो पण नौकरी कर घर रो सायरो बण सकै है। रेणु री जिम्मेदारिया वो भी ओढ सकै है। उणरो फरज कोनी काई।

रेणु माछळी ज्यू तडफण लागती। सोचती कै मा त्याग रा माळीपाना भोपू रै जीवण माथै क्यू नी चिपकावती। मा रै वास्तै लाडू री किसी कोर मीठी अर किसी कोर खारी। मा नै भोपू रै भविस री चिंता है पण रेणु रै भविस री ना पैलै चिंता करीजी अर ना हमै करीजै। रेणु नै केई बार इण बात री अनुभूति हुई ही कै मा रै मन मे बेटै अर बेटी रै फरक वाळी दकियानूसी सोच घणो प्रबळ है। पण सुबै ई भोपू दीदी-दीदी कैवतो पाव धोक करतो अर आसीस मागतो तो रेणु इरस्या रै राखसा नै मार पाछी त्याग री देवी बण जाया करती। पण मन माय जीवण-साथी री आस-जोत बुझती तो कोनी। साथी बणाया मुलाकाता करी। बस इतरो ई।

उण दिन रविवार हो। रेणु आपरै साथी रवि रै साथै पार्क गई ही। रवि री बात सुण र रेणु किती हरखी ही। खुसी रो रग मूडै माथै चड बोलण लागो

हो। मोद री अधकाई मे उणरै होठा सू फूल झडया हा- यू आर दि ग्रेट रवि।

रवि अमीर घर रो रईस छोरो पण रईसा रै अैबा सू बिल्कुल ई अछूतो। वो आपरै विणज खातिर आफिस आवतो। रेणु तो उणनै पैली ई मुलाकात मे दाय आयगी ही। उवै बतायो हो कै जीवण साथी सारू उणरी तलास रेणु तक आय खतम हुयगी है। रेणु रै भी वो चित्त चडग्यो हो। बाथ मे बाथ घाल प्रीत रै मारग घालण सू पैला ई रेणु आपरी त्याग वाळी स्थिति अर मजबूरिया विस्तार सू रवि आगळ परोसी ही।

हेक दिन रेस्टोरेट मे पिण बात रो विसय त्याग ई हो। बात नै विराम देतो रवि रेणु रो हाथ पकड र विसवास रै सागै बोल्यो हो- रेणु म्है सगळी ऊच-नीच समझ ली है। थनै अर थारी परिस्थितिया नै म्है न्यारी-न्यारी कर को ी देखू। थनै अपणावण रो अरथ है थारै साथै थारी सगळी परिस्थितिया थारी सारी विवसतावा नै भी अगीकार करणी। रैयी अवसर री बात म्है साचै मन सू कौळ करू कै म्नै मौत रै टणकारै तक थारी उडीक रैवैला। रवि रा अै मोद भरिया बोल सुण र ई तो रेणु रै होठा सू फूल झडया हा- यू आर दि ग्रेट रवि।

आगलै दिन आफिस मे लोगा रेणु नै दूजै ई रग-ढग मे देखी। सलीकै रो पैरवास अर जरूरत मुजब सोवणो सिणगार। सबा नै यू ई लखातो कै आज मावस रै आगणै पूनम री मनभावण चादणी चम-चम करै है। रेणु पिण मैसूस करै कै उणरो मन-मोरियो आज ताळ-ताळ कूदै नाचै है। रवि रै फैसलै जाणै उणरै बुझतै दीयै री लौ नै पाछी चेतन कर दी व्है।

बेटी आजै सूरज आथूणो किया उग्यो। आफिस रै बूढै चपरासी अली खान छेवट पूछ ई लीधो। वो रणु रै दुख नै घणो मैसूसतो अर टैम-टैम माथै रेणु नै धीजो पिण दिया करतो। रेणु री सूनी आख्या मे आज चमकीलो ओजास लख उवै मन ई मन खुदा री रहमत रो सुक्रिया अदा करयो हो।

'खान बाबा म्हारो सूरज सदीव आथूणो ई उग्या करतो। पण आज सू वो उगाणो ई उगैला। हेक नूवै रूप मे हेक ओपतै रग मे। रेणु गैरै विसवास रै सागै चैहकती बोली ही।

रेणु रो मन काम मे कोनी लाग रैयो हो। टाइप मसीन माथै कागद चडा र टाइप करवा लागी तो आगळया ऊधी-सूधी पडै। कागद माथै घडी-घडा रवि रो नाव ई मडीजण लागो। टाइप करणो बद कर रवि रै नाव रा टकित सबदा माथै प्यार सू होळै-होळै आगळी फिरावती रेणु री आख्या भावावेस मे भरीजगी। आख्या मीची तो वा आपरै पसवाडै रवि री मौजूदगी मैसूस करण लागी। हिवडै मे मिलन री उडीक जागी कै रवि उवैनै अै झाळी अै झाली झाली। मिलवा री हुळस मे उवैरै मूडै माथै चटक लाली पुतगी। उवैरै होठा माथै पैली दाण लाग्योडी लिपस्टिक रै गुलाबी आगणै मुळक-फडकै री सोवणी जाजम बिछगी। आसू तो घर रा भेदी कैवावै। रेणु री आख्या सू झरता आसू मायली पड बाचणी सरू कर दी ही।

रेणु ! - खान बाबा होळै हेलो पाडयो। साब उवानै काम सू रेणु खनै भेज्यो हो।

हा रवि ! रेणु आख्या मीच्योडी ई प्रीत रै उफाण मे उत्तावली बोली। प्रीत रै झूलै हीडा खावती रेणु आपे मे कठै ही। उवैनै तो पसवाडै ऊभै रवि रो हेलो ई लाग्यो हो।

म्है रवि कोनी बिटिया। अली खान हू। - खान बाबा रै कैवण रो अदाज गुदगुदावण वाळो हो।

है । रेणु जाणै नीद सू जागी। सामे खाना बाबा नै देख वा आफिस री दुनिया सू पाछी जुडगी। बोली - माफ करजो बाबा। रेणु अजू ताई सरम मे भेळी-भेळी हुय रैयी ही।

'इया तो हुयोज करै बेटी' खुदा थारी अर रवि री जोडी सगळी बाधावा सू मैफूज राखै। रेणु सू फाइल ले र कमरै सू बारै निकळता खान बाबा कैयो हो।

रवि रो नाव टाइप कियोडै कागद नै घूमती रेणु सोचण लागी कै म्हारी जोडी रै वास्तै सै सू मोटी बाधा हेक ई है अर वा है- मा। उणनै डर हो कै मा कई उणरी प्रीत रा धागा निरममता सू तोड तो कोनी नाखै। मा कई उणरै अर रवि रै बिचाळै त्याग री डीघी दीवार तो ऊभी कोनी करै।

रेणु कोनी चावती कै मोहन री तरा रवि पिण गुमनाम री अधारी दुनिया मे अलोप हुय जावै। उवै पको धार लिधो हो कै वा खुद रै वास्तै जीवैला।

नवा-नवा सुपना सू झोळी भरैला। रवि सारू हर बाधा सू जूझैला। वा भावी री उधेडबुण मे सोचण लागी कै मा नै ठा हुवणी चइजै कै घणी दबाया करडी ठोस चीज पिण बिखर जाया करै है।

फोन री ट्रिण ट्रिण सुण रेणु सोच रै जजाळ सू मुगत व्ही। वा रै रवि रै फोन री ई उडीक ही। फोन माथै घणी वाला कर छेवट बोली- याद है नीं। आजै साझ रो म्हारै घर आवणो है।

जरूर ! माजी री आज्ञा जो लैणी है। अबै तो हमेसा-हमेसा रै वास्तै थारै अठै ई तो रैणो है।

पण थारा पापा-मम्मी ।

अरे म्हारी मूमल ! थारै ग्रेट रवि रा मम्मी-पापा पिण ग्रेट है। नई-नई वै सुपर ग्रेट है।

अरे वता तो सरी उवा ।

थ्यावस राख वताऊ हू। उवानै म्है जद अपारै सबध मे सगळी वाता खुलासो कर-कर वताई तो वै नीराती सू सुणता ई रैया अर मन मे गोखता ई रैया। मौको देख घर-जवाई वाळी योजना पिण धर दी ही।

साची!

हा। हडरेड परसेट। आगै सुण। आखिर मे म्हारी पूठ माथे हाथ राखता बोल्या हा- रवि थारै माथै पूरो विसवास है। थारी योजना पिण घणी सारथक लागै। है नी वै सुपर ग्रेट।

रियली सुपर ग्रेट।

अबै अठै री लाइन क्लियर! अर हा सुपर ग्रेट रो लगवै ई आसीरवाद पिण मिळग्यो है।

अच्छा! ओ के। सज्या नै ।

रेणु नैं पूरी उम्मीद कोनी ही कै रवि रा मा-बाप इती आसानी सू मान जासी अर आसीरवादा सू आचळ भर देसी। वा तो सोच्या करती कै डीघै खजूरा सू छिया री आस बेमानी हुवै पण वै तो विसाळ बड निकळया।

वा याद करण लागी ओ दिन जद वा पैली बार रवि रै घरै गई ही। उणरै मन मे भारी बी हो कै अमीर लोग गरीब छोरया माथै कूडा आरोप लगा र

दुत्कार्‌या करै। पण उवा तो हेत-प्यार रो इतो रग ढोळ्यो हो कै वा ठेठ माय तक चोखी रगीजगी ही। रग बस रातो ई रातो।

रेणु री खुसी दुगणी हुयगी जद रवि बतायो हो कै उवारी भावी योजना पिण मम्मी-पापा नै दाय आयगी है। वानै रवि री उण दिन वाळी बात याद आयगी जद रवि आपरी अधूरी जिनगाणी नै पूरी करवा री उणसू भीख मागी ही अर उवै दुखी मन सू रोवणखारी हुय र कैयो हो- रवि थू म्हारै वास्तै सब कुछ है। थारै जिसैरी हूस कुण नै नीं हुवैला। पण म्हारी मजबूरी ।

रवि विचाळै ई रेणु रो हाथ थपथपवतो बोल्यो हो- म्है थारी मजबूरी थारी बेबसी सै जाणू हू। चोखी तरा जाणू हू। ओ पिण समझू हू कै थारी जिम्मेवारिया थारै उठतै पगा मे करतव रा लोठा ताकळा ठोकै है। त्याग रो प्रण निभावणो कोई खोटो काम कोनी।

थू जाणै है तो पछै यू गैलाई।

गैलाई करू पण समझ-बूझ करू। रेणु म्है साचै प्यार री खातिर ओ फैसलो करयो है कै जद ताई थन्नै जिम्मेवारियाँ सू पूरी मुगति कोनी मिळैला म्है थारै साथै थारै घर मे घर-जवाई बण र रैवूला। थारो सहभागी बणूला। - रवि ठेठ माय सू बोल्यो हो।

कई कैवै है ? थारो दिमाग तो ठाइयेसर है के ना। रवि री भावी योजना सुण रेणु डाबाचूक हुयगी ही।

रेणु। म्हारो दिल म्हारो दिमाग म्हारो सोच म्हारो सुपनो सैग होस मे है सैग साचा है। अपारै सातरै भविस री आ योजना जथारथ री जमीं सू जुडी थकी है। आ भावनावा रै असैधै आकास मे उडाण भरण वाळी कोनी। रेणु देख्यो कै रवि रो चेहरो हेक लूण्ठै विसवास सू दमकण लागो हो।

पण रेणु रै मन माय अजूई डबको हो। बोली- पण थारा मा-बाप।

म्हारा मा-बाप मान जासी। म्है जाणू, उवारो दिल दरियाव है। आतमा मे मिनखपणै रो ठाण है।

हे भगवान म्है काई सुण रैयी हूँ।

थू हेक मडद रै दिढ कौळ रो सखनाद सुण रैयी है। आज ताई गरीबा रा छोरा अमीरा रै घरा मे घर-जवाई बणता रैया है पण अबै दुनिया देखैला

कै हेक अमीर बाप रो गबरू छोरो हेक गरीब रै घर मे गाजै-बाजै रै साथ घर-जवाई बणैला। रवि रै मूडै विसवास री सोवणी चमक ही।

'यू आर दि ग्रेट रवि। रेणू इत्तोई बोल सकी ही। उणनै पतियारो हो कै रवि रा जजबात पाणी रा कमजीवी बुलबुला कोनी हुय सकै। पण मा रा जजबात ? रेणु नै लागो कै दाता रै हेठै लप भर कैर रा दाणा आयग्या व्है।

रेणु उठ घडी सामै देख्यो। अजू आधो घटो बाकी हो आफिस बद हुवण में। टैम पास करवा सारू पत्रिका ले र बैठगी। पत्रिका मे मन किया लागतो। मन माय तो मा नै ले र हळचळ मच्योडी ही। रेणु पत्रिका सू मूडो ढाप फेर विचारा मे अळूझगी। रवि रा मा-बाप कित्ता ऊचा विचार राखै है। मिनखपणै री जीती-जागती मिसाल है वै। पण उवैरी मा तो खुद नै दकियानूसी विचारा रै साकडै घेरै मे कैद कर राखी है।

रेणु सोचण लागी कै मा काई घेरै सू बारै निकळवा नै तइयार होसी। वा काई राजी-राजी रवि री योजना स्वीकार कर लेसी। वानै आ ई आसका बार-बार साळती कै मा कई रवि रो अपमान नीं कर दै। रवि री भावी योजना री हवेली मा रै धधीडा सू कठै दुड नीं जावै।

मा रै बौवार रै सबध मे कल्पना रा जाळ बुणती रेणु खुद जजाळ मे फसगी। फस्योडी ऊधा-सूधा सोचण लागी। अेकर तो मन में आयो कै रवि नै साझ रो घरै आवण रो मना कर दियो जावै। फेर सोच्यो कै रवि कोई कावळ पगलो नीं भर दै। रेणु री हूक बारै निकळी। होठ हाफेई फुस्फुसाया- म्है काई करू रे।

टाइम हुयगी है अबै घरै जा। आफिस रो समै पूरो हुयो पछै रेणु नै हेकली बैठी देख खान बाबा उठै आया हा अर रेणु रै बोला मे आपरा बोल जोड हसण लागा हा। पण उवा रेणु रै सबदा री टीस मैसूस कोनी करी ही।

हा रे। बोलती खान बाबा नै देख्यो तो कैयो - आप बारै बैठो म्है हेक फोन कर आऊ हू।

खाना बाबा रै जावण रै उपरात रेणु रवि नै फोन करणो चायो। फोन रै हाथ लगावण सू पैला ई वो टणक्यो- ट्रिण ट्रिण। रेणु उठा र सुण्यो। रवि रो फोन हो। रवि कई बोलै उणसू पैला ई रेणु उतावळ मे बोली- 'रवि आज साझ रो मत आइजै। मा री तबियत थोडी ठीक कोनी। रेणु मुस बणायो।

कुण बतायो कै मा री तबियत खराब है?

घर सू फोन आयो हो भोपू रो। इण हालत मे आवण रो नूतो फेर करै। हा थू काई कैवणो चावै।

म्है काई कैवू थारी कूड रै आगै। म्है तो पूगग्यो थारै घरा। उठै सू ई फोन कर रैयो हूँ।

काई?

काई-वाई कई नीं। बेगी घरै आव। मा उडीकै है। आसीरवाद री बरखा मे भींजणो कोनी काई।

सच! मसखरी तो कोनी करै! किया पतियारो कराऊ डबकीजोडै हिंवडै नै। रेणु रै मन री आसका अजू पूरी खतम कोनी हुई।

तो लै मा सू ई बात करा देवा।

रेणु समझ कोनी सकी कै ओ जादू कीकर हुयग्यो। फोन माथै मा री आवाज ही- हलो रेणु रवि बेटो म्हारै पागती बैठो है। सगळी बाता हुयगी है। म्है घणी राजी हूँ। बेगी आजा बेटी।

फेर रवि बोल्यो- रेणु! मा री बात सुणी!

यू आर दि ग्रेट रवि। रेणु नै लाग्यो कै रवि रो त्याग उणरै त्याग सू घणो वजनी है।

रेणु कमरै सू बारै निकळी। फोगरती खान बाबा रै बाथ घाली। फेर टप-टप पडाखिया उतरगी। उणरै मन माय बस हेक ई रट ही- यू आर दि ग्रेट रवि।

□□□

डॉ पुरुषोतम छंगाणी

जलम

11 अप्रेल 1941 जैसलमेर (राज.)

शिक्षा

एम.ए. (हिन्दी व इतिहास) साहित्य रत्न पीएच.डी. [illegible] स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पत्रकारिता-प्रथम) [illegible] स्नातकोत्तर डिप्लोमा विश्वविद्यालय सूं राष्ट्रीय प्रमाण-पत्र।

लेखन

लारलै [illegible] बरसां सूं राजस्थानी अर हिन्दी साहित्य री [illegible] विधावां में [illegible] आकाशवाणी अर दूरदर्शन सूं [illegible] लेखन।

सम्पादन

[illegible] पत्रिका रा 18 अंकां रो सम्पादन। [illegible] पत्रिकावां रो सम्पादन।

प्रकाशित पोथ्यां

[illegible] (राजस्थानी) [illegible] (राजस्थानी) [illegible] (हिन्दी) [illegible] (हिन्दी) [illegible] (सम्पादन) [illegible] (राजस्थानी), [illegible] (अकादमी)।

पुरस्कार

- राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर री ओर सूं '[illegible]' नै पुरस्कार।
- राजस्थानी भाषा साहित्य अर संस्कृति अकादमी बीकानेर री ओर सूं '[illegible]' नै [illegible] पुरस्कार।
- केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली द्वारा [illegible] सूं सम्मानित।
- अन्तरराष्ट्रीय [illegible] नई दिल्ली री ओर सूं राष्ट्रीय हिन्दी [illegible] स्वर्ण पदक।

सम्प्रति

- [illegible] सरकार रै उपक्रम हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड रै [illegible] पद सूं [illegible] सेवा-निवृत्ति।
- राजस्थान सरकार रै शिक्षा [illegible] जयपुर में [illegible]।